ईशू-2

जुलाई-2019

कॉमिक्स जंक्शन प्रस्तुति

जंक्शन प्लेंनेट

मैंगजीन



एक मुलाकात
अनुराग कुमार

लुगदी साहित्य
का जादुई संसार

सिंड्रेला

वो एक सांझ

सिल्वर ऐेज ऑफ इंडियन कॉमिक्स

क्र. बिषय सूची पेज नं.

संम्पादकीय ....

नमस्कार कॉमिक्स मित्रो ....

एक बार फिर हम जंक्शन प्लेंनेट का अगला अंक लेकर आपके समक्ष हाजिर है । आप सभी मित्रो का धन्यवाद करना चाहूंगा, पिछला अंक आप सब मित्रो द्वारा काफी पसंद किया गया उम्मीद है ये अंक भी आप लोगो को बहुत पसंद आयेगा ।

इस मैंगजीन मे हम आप फैंस की छोटी-बड़ी रचनाये, आपकी बचपन की यादे, लेख, कॉमिक्स/उपन्यास से सम्बंधित वार्ता शामिल करते है । यह सभी रचनाये/जानकारिया कई जगह से एकत्रित की गई है ।

हमारा ध्येंय आप सभी मित्रो का मनोरंजन करना है और कॉमिक्स कल्चर को बढ़ावा देना है । आप सभी मित्रो से निवेदन है कि आप ब्लॉग पर जाकर अपने विचारो से हमे अवगत जरूर कराये, जिससे हम अगले अंक मे और अधिक संसोधन करके आपके लिए और रोचक जानकारिया उपलब्ध करा सके ।

आपके प्रतिक्रिया के इंतजार मे .....

आपका मित्र

Upendra Raj

◆ SILVER AGE OF INDIAN COMICS ◆



कॉमिक्स रीडर्स और चित्रकथाओं में रूचि लेने वालों लोगों की बढ़ती हुई तादाद एक अच्छा संकेत है. कुछ सालों पहले तक माना जाता था की भारत में कॉमिक्स का बाज़ार ठंडा है, लेकिन ये आंकड़े इस मिथक को गलत साबित कर रहे हैं. ये दर्शा रहे हैं की हम सब के मनों में आज भी चाचा चौधरी, बिल्लू, पिंकी, बहादुर, नागराज, ध्रुव और डोगा जैसे पात्र सजीव हैं और जो परंपरा इंद्रजाल कॉमिक्स ने 1964 में शुरू की थी अभी भी कायम है. चित्रकथाओं से हमारा परिचय सबसे पहले "चंदामामा" पत्रिका ने करवाया. जुलाई 1947 में चंदामामा पहली बार तमिल और तेलेगु में शुरू हुई. पहला हिंदी एडिशन 1949 में छपा. श्री नागी रेड्डी चंदामामा के संस्थापक और संपादक थे. इनके मार्गदर्शन में ये पत्रिका काफी लोकप्रिय हुई और कई अन्य भाषाओँ में अनुवादित हुई. पौराणिक कथाओं, दंतकथाओं और मानवीय मूल्यों को दर्शाती कहानियों ने लोगों के मनों को खूब लुभाया. चंदामामा आज भी प्रकाशन में है, नए प्रारूप में. भारत की इस सबसे पुरानी कॉमिक्स पत्रिका का 65 वर्षों लम्बा सफ़र वाकई सराहनीय है.

भारत में विदेशी पात्रों को "इंद्रजाल" कॉमिक्स ने प्रचलित किया. फैंटम, मैंड्रेक, फ्लैश गोर्डन जैसे पात्र बच्चों और बड़ों दोनों में चर्चित हो गए.

इंद्रजाल कॉमिक्स टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह की मासिक चित्रकथा थी जिसका प्रकाशन 1964 में शुरू हुआ. इंद्रजाल ने ही भारत को अपना पहला कॉमिक्स नायक 'बहादुर' दिया. बहादुर के रचयिता थे श्री आबिद सुरती और बहादुर की पहली कॉमिक्स 1976 प्रकाशित हुई. सुरती ने बहादुर की कहानियां के ज़रिये उस समय के भारत के बदलते स्वरुप को चित्रित किया. डाकुओं का आतंक, किसानों की व्यथा और जासूसी कथाओं ने बहादुर को सबका चहेता बनाया. इंद्रजाल की सफलता और लोकप्रियता ही भारतीय कॉमिक्स जगत की अहम् नींव साबित हुई. इंद्रजाल का प्रकाशन 1990 तक चला और आज भी संग्रहकर्ताओं के लिए इंद्रजाल एक ख़ास महत्व रखती है.

इस बीच 'अमर चित्र कथा' द्वारा श्री अनंत पाई ने भारतीय संस्किति से जुड़ी कहानियों को सरल भाषा और सुन्दर चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया. अमर चित्र कथा का प्रकाशन 1967 में शुरू हुआ. हुआ यूँ की एक बार अनंत पाई जी दूरदर्शन पर एक क्विज़ शो देख रहे थे और ये देखकर वो बहुत परेशान हुए की शो में भाग लेने वाले भारतीय बच्चों को अपने पुराणों और महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत के बारे में ज्यादा कुछ नहीं पता था. उन्होंने इस विषय पर कुछ करने की ठान ली. उनका मानना था की विदेशी पात्रो और कहानियों के बजाये अपनी ज़मीन से निकली कहानियां बेहतर और ज़रूरी है.

तब अमर चित्र कथा का जन्म हुआ. रामायण, महाभारत, पुराणों और देवी-देवताओं की कहानियां अब सबके हाथों में थी. साथ ही 'टिंकल' कॉमिक्स भी बहुत पसंद की गयी.

भारत के इतिहास और इतिहास-पुरुषों की कहानियां, अकबर-बीरबल के रोचक किस्से और पंचतंत्र और जातक कथाओं ने अमर चित्र कथा को भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कॉमिक्स बना दिया. हर साल ACK की 3 लाख से भी ज्यादा प्रतियाँ बिकती हैं.चंदामामा, इंद्रजाल और अमर चित्र कथा ने भविष्य के रचनाकारों और प्रकाशकों के लिए एक श्रेष्ठ मापदंड तय कर दिए.

फिर शुरू हुआ वो युग जिसे भारतीय कॉमिक्स जगत का स्वर्णिम युग कहते हैं. राज कॉमिक्स, मनोज कॉमिक्स, डायमंड कॉमिक्स और तुलसी कॉमिक्स इस युग के वो चार स्तम्भ हैं जिन्होंने भारतीय कॉमिक्स जगत, खासकर हिंदी कॉमिक्स जगत को नयी ऊँचाइयों तक पहुंचा दिया.

1970s के मध्य तक कॉमिक्स की दुनिया ने सबकी कल्पनाओं को जीत लिया था. इंद्रजाल, अमर चित्र कथा और टिंकल ने उस क्रांति को दिशा दी थी जिसने 1980 के दशक में सारे समीकरण बदल दिए.

◆ THAT UNFORGETTABLE GOLDEN AGE ◆

आपने कभी कॉमिक्स पढ़ी हो या न हो, लेकिन चाचा चौधरी का नाम ज़रूर सुना होगा. श्रेय जाता है कार्टूनिस्ट प्राण (श्री प्राण कुमार शर्मा) को जिन्होंने एक ऐसा पात्र तैयार किया जो आज भारत में सबसे ज्यादा पहचाने जाने वाला कॉमिक्स पात्र है. बिल्लू, पिंकी, रमन, श्रीमती जी और चन्नी चाची की गुदगुदाने वाली कहानियां भी प्राण ने बनायीं. सही मायने में प्राण भारत के वॉल्ट डिज़्नी हैं. समय के साथ डायमंड कॉमिक्स ने दुनिया भरके पात्रो को अपने प्रकाशन में शामिल कर लिया. आप किसी भी विदेशी पात्र का नाम लें, सबकी कहानियां आपको यहाँ मिलेंगी. डायमंड कॉमिक्स को आज भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली कॉमिक्स का तमगा हासिल है और हर छोटी-बड़ी बुक स्टॉल पर ये देखी जा सकती है.

1985 तक कॉमिक्स पब्लिशिंग कंपनियों में कड़ी टक्कर नहीं देखी गयी थी. लेकिन बाद के सालों में 'राज कॉमिक्स' और 'मनोज कॉमिक्स' के बीच लम्बे समय तक कॉमिक्स बाज़ार पर कब्ज़ा करने के लिए तीखा मुक़ाबला चला. जीत हुई आम रीडर की जिसको एक से एक बेहतरीन हीरो और कहानियां पढ़ने को मिली. एक तरफ राज कॉमिक्स ने हमें अपने 'सुपर हीरोज़' दिए, वहीँ दूसरी तरफ मनोज कॉमिक्स ने इससे अलग, नयी और रोचक कहानियां दीं.

राज कॉमिक्स की शुरुआत 1986 में श्री राजकुमार गुप्ता ने की. बाद में राज कॉमिक्स की बागडोर संभाली इनके तीन बेटों संजय, मनीष और मनोज गुप्ता ने जो इंद्रजाल और अमर चित्र कथा जैसी कॉमिक्सों के बीच पले बढ़े थे. मध्य 1980s का समय राजनितिक और सामाजिक उथल पुथल का समय था. इंदिरा गाँधी की हत्या, दिल्ली के दंगे, पंजाब में बिगड़ते हालत, भ्रष्टाचार और गहराते हुए कश्मीर मुद्दे से देश जूझ रहा था. हमारी कहानियों को ज़रूरत थी एक हीरो की जो इन समस्याओं से लड़े. तब जन्म हुआ 'नागराज' का. नागराज एक इच्छाधारी नाग मानव है जिसके शरीर में तेज़ ज़हर बहता है और जिसके हाथों से सांप निकलते हैं. शुरुवाती कहानियों में नागराज का लक्ष्य था दुनिया से आतंकवाद का सफाया. आधुनिक समय का नागराज एक विश्व रक्षक है जो आतंकवाद के साथ और भी कई तरह के खतरों, जैसे विनाशकारी एलियंस और परग्रही ताक़तों से दुनिया की रक्षा करता है.

श्री संजय गुप्ता जी और भी कई सुपर हीरोज़ के निर्माता हैं जैसे डोगा, परमाणु, भोकाल और योद्धा जो की बहुत पसंद किये गए.

◆ राज कॉमिक्स से एक और अनोखे सुपर हीरो का उदय हुआ – सुपर कमांडो ध्रुव ◆

ध्रुव श्री अनुपम सिन्हा जी की कृति है. ध्रुव में बाकी सुपर हीरोज़ की तरह असाधारण शक्तियां नहीं हैं. उसमे सिर्फ एक पावर है, उसका दिमाग. अपने अद्भुत दिमाग से वो बड़े से बड़े विलेन हो मात दे चुका है. अनुपम जी की बेहतरीन कहानियां ही ध्रुव को बाकी हीरोज़ से अलग और बेहतर बनाती है. राज कॉमिक्स ने कई नए लेखकों और आर्टिस्टों को मौका दिया और हर तरह की कहानियां दी. ये सिलसिला आज भी जारी है. एक तरफ बांकेलाल की हास्य कॉमिक्स हैं वहीँ दूसरी तरफ भूत-प्रेतों की रोंगटें खड़े करनी वाली हॉरर कहानियां. ये कॉमिक्स हाउज़ अकेला ऐसा पब्लिकेशन है जिसने 2500 से ज्यादा कॉमिक्स दी हैं और नित नयी रचनायें पेश कर रहा है.

जब राज कॉमिक्स अपने रंग में थी तब उसका सीधा मुकाबला था ‘मनोज कॉमिक्स’ से. मनोज कॉमिक्स में राजा रानी, देवताओं राक्षसों, परियों, भूतों, जादुई और मायावी कहानियों की भरमार थी. साथ ही अव्वल दर्जे की जासूसी कहानियां भी थी. राम-रहीम और क्रुकबाण्ड सबसे चर्चित एक्शन-अड्वेंचर हीरो थे जो आतंकवादि गिरोहों और तस्करों को धूल चटाते थे. हवलदार बहादुर एक मज़ाकिया पात्र था जो अपनी किस्मत के दम पर मुश्किल केस सुलझा लिया करता था. जासूसी कथाओं में सागर-सलीम, कर्नल कर्ण और अमर-अकबर के कारनामों ने सबको रोमांचित किया. बिमल चटर्जी, अशित चटर्जी, अंसार अख्तर जैसे लेखकों ने अनगिनत अच्छी कहानियां लिखी कदम बंधुओं के चित्रों के तो क्या कहने.

कहते हैं की मनोज कॉमिक्स माता-पिताओं की पहली पसंद हुआ थे. वे चाहते थे की उनके बच्चे मानवीय मूल्यों और साहसिक किस्सों को पढ़े और जानें. मनोज कॉमिक्स में सुपर हीरोज़ बहुत देर में आये लेकिन वो राज कॉमिक्स सुपर हीरोज़ जितने चर्चित नहीं हुए. फिर भी ये दोनों कॉमिक्स बाज़ार में सबसे ज्यादा बिकती थी. हर गली मोहल्ले में छोटी छोटी दुकाने थी जहाँ कॉमिक्स किराये पर पढ़ने को मिलती थी. शायद ही कोई बच्चा इनसे अछूता रहा हो.

इस बीच और भी कई कॉमिक्स कंपनिया आयीं जैसे ‘तुलसी कॉमिक्स’, ‘परंपरा कॉमिक्स’, ‘किंग कॉमिक्स’, ‘फोर्ट कॉमिक्स’ और ‘राधा कॉमिक्स’. तुलसी कॉमिक्स कुछ हद तक सफल रही लेकिन साधारण स्तर की कहानियों और चित्रों के चलते राज और मनोज कॉमिक्स जैसा नाम नहीं कमा पाई. तुलसी कॉमिक्स के सबसे नामी हीरोज़ थे तौसी, जम्बू और अंगारा.

◆ MODERN AGE AND AND THE DARK TIMES ◆

1990s के आखरी कुछ साल कॉमिक्स जगत के लिए बहुत खराब थे. विडियो गेम्स और केबल टीवी में लोगों, खासकर बच्चों की ज़्यादा रूचि थी. इस बदले हुए रुझान से कॉमिक्सों की बिक्री में भारी गिरावट हुई और कंपनियों को बहुत घाटा उठाना पड़ा. 2005 आते आते कई कंपनियां बंद हो गयी जिसमे मनोज और तुलसी कॉमिक्स प्रमुख है. कॉमिक्स की दुनिया

पर जैसे एक काला पर्दा पड़ गया हो. बस राज कॉमिक्स ही इस मुश्किल समय से बाहर निकल पाई.

लेकिन अच्छी ख़बर ये है की आज कई नयी कॉमिक्स पब्लिशिंग कम्पनियाँ हमारे बीच हैं जो कहानियों और कॉमिक्स आर्ट में एक नया परिवर्तन ला रही हैं. Holy Cow, Yali Dream Creations, फेनिल कॉमिक्स, फिक्शन कॉमिक्स, ड्रीम कॉमिक्स, वैष्णवी कॉमिक्स, स्वाप्निल कॉमिक्स, विमानिका जैसी नयी सोच वाली कम्पनियाँ कॉमिक्स की दुनिया में एक दूसरी क्रांति की ओर बढ़ रही हैं. तो दूसरी तरफ FMC, कॉमिक्स जंक्शन, ICUFC जैसे फैंस टीम का जुनून भी प्रसंशनीय है. बदलते ज़माने के साथ राज कॉमिक्स में भी कई बदलाव आ चुके हैं. आधुनिक coloring, imaging और lettering techniques के साथ राज कॉमिक्स भी product quality में विश्व बाज़ार को टक्कर देने को तैयार है।



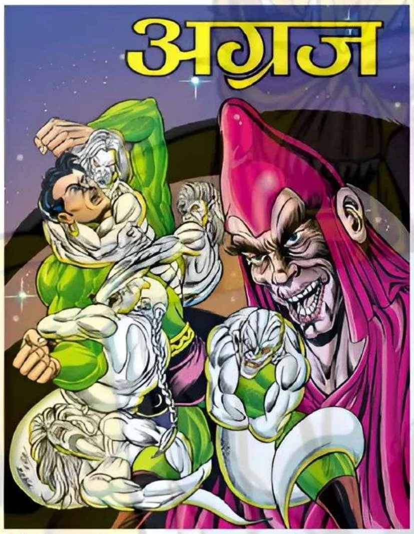



अंधेरे से लड़ने के लिए संकल्प लो। जिसके लिए तुम्हारा जन्म हुआ है।
चारों दिशाओं, धरती, आकाश को साक्षी मान कर।
जगत के जीव, जंतु और वनस्पति को साक्षी मान कर
भूत, भविष्य और वर्तमान को साक्षी मान कर।
अंधकार से लड़ने वाले प्रकाश की प्रत्येक किरण को साक्षी मान कर।
मैं प्रण लेता हूँ।

THE END

अग्रज

माता - चंद्रकलंका
पिता - शिलाजीत
बहन - भारती
प्रकाशन - राज कॉमिक्स



अग्रज का जन्म एक षड़यंत्र के तहत उसके नाना तांत्रिक तंत्रता द्वारा उसके माता पिता का प्रेम विवाह करवा के उससे उत्पन्न पुत्र को तांत्रिक क्रिया के द्वारा उसका शरीर पाने के उद्देश्य से हुआ। शिलाजीत की जुड़वाँ संतान हुई 1 लड़की और 1 लड़का, जब शिलाजीत को अपने ससुर तंत्रता का उद्देश्य पता चला तो वो अपने बच्चे को बचाना चाहा पर सिर्फ अपनी बेटी को ही बचा पाया और जख्मी हालात में अपने पिता वेदाचार्य के पास गया और अपनी बेटी को उनके पास सौप के यह कह कर वापस गया की वह अपने बेटे को लेके लौटेगा पर नाकाम रहने की वजह से वापस नही आया, फिर 2 दिन के इन्तेजार के बाद वेदाचार्य अपनी पोती को तिलिस्मी सुरक्षा में रख के अपने बेटे शिलाजीत को खोजने जाते है तब तंत्रता के पास अपने पोते को देखते है तो उसे वापस लाना चाहते है पर तब तंत्रता उसे नही ले जाने देता है तब वेदाचार्य को वापस अपने पोती भारती के पास वापस आना पड़ता है।

19 वर्ष बाद चन्द्रकलंका अर्धमूर्छित हालत में आती है वेदाचार्य के पास और अपने पिता तांत्रिक तंत्रता की करतूत बताती है की तंत्रता अपनी तांत्रिक क्रियाओ से अग्रज का शरीर पाना चाहता है, फिर चंद्रकलंका मर जाती है। तब वेदाचार्य उसका अंतिम संस्कार करने के बाद तंत्रता के पास जाता है तब तक तंत्रता तंत्र क्रिया के द्वारा अग्रज की आत्मा को उसके शरीर से अलग कर चूका होता है, पर वेदाचार्य के आ जाने से वो अपनी आत्मा अग्रज के शरीर में नही डाल पाता है, वेदाचार्य से लड़ाई होती है तब उसे वहां से भागना पड़ता है। तब वेदाचार्य अग्रज के शरीर को एक जटिल तिलिस्म निर्माण कर उसमें सुरक्षित कर देता है और किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहता है जो अग्रज की आत्मा को वापस उसके शरीर में प्रवेश करवा सके, पर नाकाम रहता है। अग्रज की आत्मा वेदाचार्य से मिलने आती रहती है तब अग्रज को अपनी बहन भारती का पता चलता है। पर वेदाचार्य नही चाहते है की भारती अग्रज के बारे में जाने। फिर एक दिन वेदाचार्य को तिलिस्मी गणना से अग्रज की मृत्यु योग का पता चलता है तब वो तिलिस्म की चाभी निकलते है ताकि अग्रज की शरीर का सही समय पर दाह संस्कार कर अग्रज की आत्मा को मुक्ति दिला सके। पर तंत्रता की तलिस्मान के साथ वापस आने पर तलिस्मान वेदाचार्य से चाबी छिन लेता है और वेदाचार्य को घायल कर चला जाता है। वेदाचार्य को डर रहता है की तंत्रता अग्रज का शरीर हासिल कर अपनी तंत्र शक्ति और अतृप्त आत्माओं की फ़ौज से दुनिया में तांडव न मैच दे। (अग्रज की आत्मा पाप क्षेत्र में सभी अतृप्त आत्माओं को शांत रखे रहती है।)

तब नागराज तंत्रता को रोकने के लिय वेदाचार्य द्वारा बनाया गया तिलिस्म तोड़ता है और अग्रज के शरीर तक पहुँचता है तंत्रता भी वहां साथ में पहनता है और नागराज को हलकाट से उलझा के अग्रज का शरीर हासिल कर लेता है और अग्रज की अतृप्त आत्माओं की फ़ौज से अग्रज की आत्मा और नागराज को कैद करने की कोसिस करता है और खुद वह से चला जाता है । नागराज और अग्रज दोनों आजाद हो जाते है। अग्रज भारती के शरीर में जाकर शक्तिशाली होना चाहता है ताकि तंत्रता को रोक सके और ऐसा करने के लिये वो भारती को मारना चाहता है पर नागराज भारती को बचा लेता है और अग्रज को रोकता है वेदाचार्य का तिलिस्म, फिर सब बात जानकर वेदाचार्य अग्रज को बताता है की वो अपना शरीर अब वापस नही पा सकता तंत्रता की तंत्र सकती के कारन सो अब अग्रज को तंत्रता का शरीर हासिल करना पड़ेगा जिसमे नागराज उसकी मदद करता है फिर अग्रज और तंत्रता लड़ता है और नागराज तंत्रता को नागु की मदद से तंत्र-गढ़ में कैद कर देता हैं हमेशा के लिए, इससे अग्रज का शरीर भी तंत्र गढ़ में कैद हो जाता है और अग्रज को एक अतृप्त आत्मा के रूप में पृथ्वी या पाप क्षेत्र में रहना होता है, वो फिर से आब अतृप्त आत्माओ को शांत कर लेता है और सबको अपने लोक में कैद रखता है। अग्रज कभी कभी वेदाचार्य से मिलने आता जाता रहता है। पर अब हमेशा 1 अतृप्त आत्मा बनके रहने पे विवस है।




Lee InHyuk

NEWYORK VS NEW DILLHI [PART-2]

लेखक - विवेक आर्या "कश्यप"



पिछले अंक मे आपने पढ़ा अवेंजर्स टॉवर पर कुछ अज्ञात रोबोट हमला करते है और आयरन मैन के सारे आर्म रिएक्टर चुरा ले जाते है, उसके बाद आयरन मैंन दिल्ली के एक यूनीवर्सिटी इवेंट मे शामिल होने के लिए रवाना होता है, जहा इंस्पेक्टर विनय उर्फ परमाणु आयरनमैन का स्वागत करता है ।

आयरन मैंन स्टेज पर छात्रो को सम्बोधित कर रहा होता है तभी कुछ रोबोट पब्लिक पर हमला कर देते है जिससे निपटने के लिए परमाणु भी साथ आ जाता है ।
आयरन मैन और परमाणु के सम्मलित वारो से भी रोबोट नष्ट होकर फिर जुड़ जाते है, अब आगे ....

थोड़ी देर मे आयरनमैन और परमाणु रोबो सेना से पूरी तरह घिर गए । हम फंस गए ।

आयरन मैन -: परमाणु अब हम क्या करे ।

परमाणु -: जब तक प्रोबॉट जाँच पूरी नही कर लेते तब तक ऐसे ही उलझे रहते है । तभी एक-एक करके परमाणु और आयरनमैन के शिंकजे खुलने लगे । "मानसिक ब्लास्ट" होना शुरू हो गया और रोबोट्स के चिथड़े उड़ने शुरू हो गए ।

आयरन मैन -: अब ये नया मेंबर कौन है ?

परमाणु -: ये मेरी दोस्त है शीना, इसका दिमाग हमसे कही ज्यादा विकसित है, ये मानसिक धमाके कर सकती है ।

शीना -: परमाणु अब बच के रहना, मैं मानसिक वारो से इन्हे ख़त्म करने की कोशिश करती हूँ ।

इतना बोलने के साथ शीना मानसिक धमाके शुरू कर दिए ।

परमाणु -: शीना कोई फायदा नहीं तुम सिर्फ अपनी मानसिक ऊर्जा ख़त्म कर रही हो ।

शीना -: मतलब !

परमाणु -: मतलब इन्हे कोई सुपर स्टोन रिजेनेरेट कर रहा है ।

शीना -: मतलब हमें कोई योजना बनानी होगी ।

योजना मेरे पास है !

आयरन मैन -: अब ये कौन बोला परमाणु ?

मैडम कोल्ड -: परमाणु, आयरनमैन और शीना तुम सब इन्हे पावर से तोड़ो मैं इन्हे अपनी बर्फीली पावर से जमती हूँ ।

आयरन मैन -: वाह, क्या प्लान है, परमाणु । एक नया मेंबर, इतने में तुम अपनी एवेंजर टीम बना सकते हो ।

परमाणु -: हाहाहा, मेरे पास पहले ही एक एवेंजर टीम है, ***प्रोटेक्टर ऑफ़ Earth*** के नाम से, जिसके सदस्य नागराज, ध्रुव, डोगा आदि लोग है । अब योजना पर ध्यान दिया जाये ।

परमाणु, आयरनमैन और शीना के धमाकों से रोबो आर्मी के परखच्चे उड़ने शुरू हो गए, और मैडम कोल्ड ने उन्हें अपनी बर्फीली कैद में जमाना शुरू कर दिया ।

थोड़ी देर बाद सारी रोबो आर्मी बर्फीली खोल में कैद था ।

मैडम कोल्ड -: दोस्तों, जो करना है जल्दी करो, बर्फीली कैद ज्यादा देर तक इन्हे बंधक बना कर नहीं रख सकती है ।

आयरन मैन -: फ्राइडे, तुम्हे कुछ समझ आया, कोई कमजोरी ।

परमाणु -: प्रोबॉट क्या आपको कुछ पता चला ।

प्रोबॉट -: हा पता चला, ये आर्म रिएक्टर को अगर निष्क्रिय कर दिया जाये तो शायद ये आर्मी ख़त्म हो जाएगी ।

परमाणु -: तो क्या आप कर सकते है ?

प्रोबॉट -: थोड़ा समय लगेगा, क्योकि ये आर्म रिएक्टर सुपर स्टोन की पावर सोख रहे है, तो अगर रिएक्टर निष्क्रिय तो रोबो निष्क्रिय ।

फ्राइडे to **प्रोबॉट** -: हेलो, प्रोबॉट क्या आप मुझे सुन पा रहे है ?

प्रोबॉट -: कौन?

फ्राइडे -: आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस फ्राइडे ।

प्रोबॉट -: पर तुम मेरे सिस्टम में कैसे आ गयी ?

फ्राइडे -: सॉरी, पर मै आर्म रिएक्टर को निष्क्रिय कर सकती हूँ ।

फ्राइडे और प्रोबॉट काम पर लग जाते है ।

परमाणु -: सुनो आयरनमैन मेरे पास एक तरकीब है, ध्यान से सुनो ।

प्लान समझने के बाद, तब तक रोबो आर्मी बर्फीली खोल तोड़ कर बाहर आ चुकी थी पर इस बार प्लान तैयार था ।

आयरन मैन -: बस अब अगर सबकुछ ठीक रहा तो, फ्राइडे सारी पावर "चेस्ट आर्म रिएक्टर" में लगाओ ।

फ्राइडे -: ओके सर ।

कुछ सेकंड बाद फिर रोबोट के चिथड़े उड़ने शुरू हो गए, पर इस बार वो वापस जुड़े नहीं ।

आयरन मैन -: तुम्हारी योजना काम कर गई, परमाणु ।

ये तो कमाल हो गया, शीना, कोल्ड, फ्राइडे और प्रोबॉट एक साथ बोले - पर ये हुआ कैसे ?

परमाणु -: मै बताता हूँ, असल में हुआ ये की जब मुझे पता चला की इन रोबो के सीने में आयरनमैन का ही आर्म रिएक्टर है, तब मुझे लगा की, अगर ये आर्म रिएक्टर सुपर स्टोन की पावर सोख कर, हम पर हमला कर रहे है, तो यही काम आयरनमैन भी कर सकता है, बस उसने यही किया, एक रोबो सैनिक की पावर को सोखता और दूसरे पर वार कर देता, क्योकि इन रोबो आर्मी पर वही ऊर्जा का वार हुआ, तो दोबारा से खड़ा नहीं हो पाए ।

आयरन मैन -: वैसे ये प्लान अच्छा था, मुझे लगता था की मै ही जीनियस हूँ, पर यहाँ तो सभी जीनियस है ।

परमाणु -: रोबो आर्मी ख़त्म हो चुकी है, तो तुम यहाँ क्या करोगे ?

आयरन मैन -: हा आर्मी ख़त्म हो चुकी है, पर अभी मै इस बात का पता लगा कर जाऊंगा, मेरा रिएक्टर दिल्ली कौन लाया ?

क्योकि मुझे किसी बड़े खतरे का आभास हो रहा है ? और हा तुम लोगो का धन्यवाद । क्या नाम है तुम्हारा, हा शीना और मैडम कोल्ड ।

धन्यवाद तो हमें आपका करना चाहिए, मिस्टर टोनी स्टार्क, आपने दिल्ली की रक्षा की ।

आयरन मैन -: वैसे ये विनय किधर गया ? अब मुझे होटल लेकर कौन जायेगा ?

परमाणु -: चलो, मै छोड़ देता हूँ ।

टोनी -: कोई बात नहीं मै चला जाऊंगा ।

परमाणु के जाने के थोड़ी देर बाद विनय वापस आता है ।

टोनी -: अरे विनय कहाँ चल दिए थे ?

विनय -: मैं कही नहीं गया था, बस लोगो को इधर-उधर सुरक्षित कर रहा था, चलिए आप को होटल तक छोड़ देता हूँ ।

टोनी -: ओके विनय ।

विनय प्रोबॉट के लैब में ->

विनय -: प्रोबॉट अब कुछ बोलेंगे भी, या फिर ।

प्रोबॉट -: शांत रहो, और ये देखो स्क्रीन जब तुम और आयरनमैन लड़ रहे थे, तब देखो ये एक कोई खास फ्रीक्वेंसी या सिग्नल जो रोबोट को ऊर्जा देने का काम रहा था, ये कुछ पूर्व दिशा की तरफ से आ रहे थे, पर उतने देर में तुम लोगो ने रोबोट्स को ख़त्म कर दिया तो सिग्नल कट गया, और मैं ज्यादा दूर तक संकेतो का पीछा नहीं कर पाया ।

आजमगढ़

वैसे तो मेरी टेस्टिंग सफल रही, और जो कमजोरी है, उसे भी ठीक कर लेता हूँ । बस अब परमाणु का विनाश होना तय है, साथ में अब वो आयरनमैंन भी मुफ्त में मरेगा, क्योकि वो भी अब मेरे रास्ते का कांटा है ।

टोनी होटल में

फ्राइडे वैसे तो हमारा कार्यक्रम रद्द हो, पर क्या तुम मुझे कुछ बता सकती हो ?

फ्राइडे -: सर मेरे डेटा बेस के अनुसार ये दुश्मन नया है । क्योकि पुराने दुश्मन अभी भी जेल में है, कल की घटना के बाद से शील्ड चौकन्नी हो गई है ।

टोनी -: मतलब दुश्मन नया है, तो तकनीक भी नयी होगी । मुझे अभी परमाणु से मिलना होगा ।

फ्राइडे -: ठीक है, सर मैं अभी प्रोबॉट से बात करती हूँ ।

थोड़ी देर बाद, सभी एक साथ

प्रोबॉट -: ये देखो, ये सिग्नल पूर्व की तरफ से आजमगढ़ से आ रहे है, पर कहाँ से एक्जेक्ट लोकेशन नहीं मिल रही है ?

आयरन मैन -: फ्राइडे, बाकी के सिग्नल कैच कर सकती हो ।

फ्राइडे -: नो सर , जहा तक प्रोबॉट पहुँच पा रहे है, वही तक मैं भी पहुँच पा रही हूँ ।

परमाणु -: ये तो तय है, दुश्मन जो भी है हमें और हमारी शक्तिओ को अच्छी तरह से पहचानता है । पर आयरनमैन से क्या दुश्मनी है, मैं नहीं जानता ?

आयरन मैन -: क्यों न आजमगढ़ चल कर थोड़ी छान-बीन कर लेते है ?

प्रोबॉट -: नहीं, वो सिरफिरा इतना बेवकूफ भी नहीं है । वो तुम लोगो को उस एरिया में ही देख कर भाग जायेगा ।

आयरन मैन -: तब क्या करे ?

प्रोबॉट -: इंतजार ।
तभी, परमाणु और आयरनमैन तैयार हो जाओ, वो देखो कुतुबमीनार के पास कोई तबाही मचा रहा है । अरे ये तो उसी मॉडल का रोबोट है, बस साइज में थोड़ा बड़ा है ।

घटनास्थल पर -

परमाणु -: आयरनमैन, मैं इधर से वार करता हूँ । और तुम उधर मोर्चा सम्भालो ।

आयरन मैन -: ओके, अभी हल्क बस्टर की याद आ रही है । फ्राइडे, हल्क बस्टर कितनी देर में नई दिल्ली पहुँच जाएगी ?

फ्राइडे -: लगभग 30:00 मिनट में सर ।

आयरनमैन -: ओके ।

परमाणु -: बस अब और नहीं सह सकता, मुझे अपना साइज बड़ा करना होगा ।

फिर परमाणु ने अपना साइज रोबो के साइज जितना बड़ा कर लिया, अब मुकाबला बराबरी का है । परमाणु के विशाल रूप को देख कर आयरनमैन आश्चर्य-चकित हो जाता है ।

परमाणु -: आयरनमैन मैं इससे निपटता हूँ, तुम आस-पास का एरिया खाली करवाओ ।

आयरन मैन -: ओके, जब तक हल्क-बस्टर नहीं आ जाता, तब तक यही करता हूँ ।

परमाणु -: इस पर मेरे आणविक वारो का कोई असर नहीं हो रहा है, ऐसा लग रहा ही जैसे ये किसी मोटे और मजबूत मेटल से बना हो, या ये उसी रोबो का दूसरा वर्जन है ।

प्रोबॉट -: परमाणु, ध्यान से सुनो मैं इसे स्कैन नहीं कर पा रहा हूँ, मेरे स्कैनर इसे पार नहीं कर पा रहे है, कुछ और तरीके से स्कैन करने की सोचो ।

फ्राइडे -: सर, हल्क-बस्टर दिल्ली पहुँच गया ।

आयरनमैन अब हल्क बस्टर में था, अब मुकाबला बराबरी का है, रॉकेट हमला, लेजर हमला सब एक के बाद एक बेअसर ।

परमाणु -: ऐसे हम ज्यादा देर तक टिक नहीं पाएंगे ।

आयरनमैन -: पिछली तकनीक काम नहीं कर रही है, स्टोन पावर को अपने आर्म रिएक्टर में सोख कर हमला, जैसे उसने गलती सुधार ली हो ।

पूरे शहर में तीन विशालकाय प्राणी, और जैसे आपातकाल लग गया हो ।

परमाणु -: ऐसे तो पूरा शहर तबाह हो जायेगा, हमारी शक्तिया इस पर बेअसर है ।

आयरन मैन -: तब तक ऐसे ही उलझे रहो ।

परमाणु -: एक तरीका है, बस तुम्हे तब तक इसे अकेले ही संभालना होगा ।

आयरन मैन -: पर क्या ?

परमाणु -: बस देखते जाओ, श्रिंक !

और परमाणु का विशाल शरीर साइज में छोटा होता चला गया, मटर के दाने जितना छोटा ।

आयरन मैन -: वाकई में तुम परमाणु हो ।

परमाणु -: अब प्लान सुनो, अगर हम इसे बाहर से स्कैन नहीं कर सकते तो क्या हुआ ? हम इसे अंदर से स्कैन करेंगे ।

परमाणु का छोटा शरीर विशालकाय रोबोट के अंदर चला गया ।

आयरन मैन -: परमाणु, तुम्हे कुछ मिला क्या, क्योकि हल्क-बस्टर कमजोर पड़ रहा है ।



परमाणु -: हा बस एक मिनट प्रोबॉट अब आप कुछ कर सकते है ।

प्रोबॉट -: इस रोबोट के अंदर प्रोफ़ेसर कमलकांत, आयरनमैन की तकनीक तथा सुपर स्टोन की ऊर्जा का उपयोग हुआ है ।

परमाणु -: मतलब, आप ये कहना चाहते है, सारे हमले मामा कमलकांत ने करवाए ।

प्रोबॉट -: कह नहीं सकता, हो भी सकता है, और नहीं भी । और कुछ खास तरह के प्रोग्रामिंग और कोडिंग है ।

परमाणु -: अगर मै, इसे अंदर से तबाह कर दू तो ?

फ्राइडे -: कोशिश भी मत करना, वर्ना दिल्ली तबाह हो जाएगी ।

इस खतरनाक नज़ारे को कोई नकाबपोश दिल्ली की ऊँची ईमारत पर बैठ कर देख रहा था । बस अब थोड़ी देर में सब ख़त्म कर दूंगा ।

आयरन मैन और **परमाणु** -: पर कोई दूसरा रास्ता तो होगा न !

आयरन मैन -: एक मिनट, एक दूसरा रास्ता है ।

परमाणु -: मै इस तीन के डिब्बे को हवा में हजारो किलोमीटर ऊपर लेकर जाता हू, अब तुम समझ गए ।

प्रोबॉट -: पर इसमें परमाणु की जान को खतरा है ।

परमाणु -: इस वक्त हमें सिर्फ दिल्ली के बारे में सोचना है, आयरनमैन प्लान शुरू करो ।

हवा में उचाई पर पहुंचने के बाद

आयरन मैन -: परमाणु शुरू करो ।

और परमाणु ने रोबो के अंदर "परमाणु ब्लास्ट" कर दिया, और वही हुआ जिसके बारे में फ्राइडे ने आगाह किया था । ये चलता फिरता रोबो अब शक्तिशाली बम में बदल गया था ।

आयरन मैन -: परमाणु रोबो का शरीर छोड़ बाहर आ जाओ ।

परमाणु -: बाहर आने का रास्ता नहीं दिख रहा है, लगता है उसने जानबूझकर कर ऐसा किया ।

तभी एक जबरदस्त धमाका होता है, और रोबो फट जाता है ।

आयरन मैन -: नहीं, ये नहीं हो सकता, परमाणु इतनी आसानी से नहीं मर सकता ।
हर बार मौत को चकमा देने वाला इतनी आसानी नहीं मर सकता है ।

लोगो को लग रहा है, की परमाणु भी उस धमाके में मर गया ।

पर थोड़ी देर बाद

आयरन मैन -: परमाणु तुम बच गए, पर कैसे ?

परमाणु -: जब ब्लास्ट होने वाला था और बाहर आने का रास्ता बंद हो गया, तब मैंने अपने शरीर को ट्रांसमिट कर "परमाणु कणो" में बदल दिया, और जब ब्लास्ट होने के बाद थोड़ी जगह मिली तो, मैं बाहर आ गया ।
खैर, ये रोबो तो अब ख़त्म हुआ, आओ अब धरती पर वापस चले ।

धरती पर

मेरी योजना फिर तबाह हो गई, परमाणु और आयरनमैन फिर बच गए ।

कहाँ जा रहे हो, मिस्टर नकाबपोश !

नकाबपोश -: कौन ?

आयरन मैन -: इतनी जल्दी हमें कैसे भूल गए, रिएक्टर चोर ?

नकाबपोश -: ओह, तो तुम दोनों ने मुझे ढूंढ लिया, पर तुम दोनों मिल कर भी मेरा मुकाबला नहीं कर सकते ।

आयरन मैन -: तुम्हे खोया ही कब था ? ऐसा क्या है ? किक जड़ते हुए - परमाणु, जरा इस बदसूरत चहरे से नकाब हटाना तो !

परमाणु -: ओके ।

परमाणु ने जैसे ही नकाब हटाया, उसके पैरो तले जमीन खिसक गई, और चीख उठा मामा - कमलकांत आप ।

कमलकांत -: हा मैं, अब मैं तुम दोनों को ख़त्म कर दूंगा ।

आयरन मैन -: तुमने कुछ ज्यादा तो नहीं बोल दिया, और दाये हाथ का गन फायर कर दिया ।

पर उस गन के वार को परमाणु ने अपने ऊपर सह लिया ।

आयरन मैन -: ये क्या कर रहे हो, परमाणु ?

परमाणु -: चाहे कुछ भी हो जाये, मैं इन्हे नहीं मार सकता ।

आयरन मैन -: क्या तुम्हे दिख नहीं रहा है, इसने शहर को तबाह करने में कोई कसर छोड़ी है ।

परमाणु -: पर मैं, इनकी जान का रखवाला हूँ ।

आयरन मैन -: तो लगता है, पहले तुम्हे ही ख़त्म करना होगा ।

परमाणु -: मुझे कोई ख़त्म कर सके, ऐसी कोई ताकत नहीं ।

परमाणु ने आयरनमैन पर हमला कर दिया ।

कमलकांत -: लड़ो एक दूसरे से, और तब तक लड़ो, जब तक कोई एक ख़त्म न हो जाए, या दोनों ख़त्म न हो जाए ।

प्रोबॉट -: परमाणु, आयरनमैन क्या कर रहे हो ? आपस में नहीं लड़ना है, बस प्रोफ़ेसर को किसी तरह से रोको ।

परमाणु ने आयरनमैन पर "परमाणु ब्लास्ट" किया, और उसका जवाब आयरनमैन ने लेजर बीम से दिया ।
आयरन मैन ने राकेट परमाणु पर दाग दिए, जवाब में परमाणु ट्रांसमिट होकर बचा ।

फ्राइडे to **प्रोबॉट** -: हेलौ प्रोबॉट, ये अपने बस में नहीं लग रहे है, कोई इनके दिमाग से खेल रहा है ।

प्रोबॉट -: हा, मुझे भी ऐसा लग रहा है, मुझे एक योजना समझ आ रही है, अगर तुम साथ दो तो ।

फ्राइडे -: ठीक है, पर ये प्रोफ़ेसर तो भाग रहे है ।

प्रोबॉट -: उन्हें जाने दो, उन्हें हम बाद में देख लेंगे ।

आजमगढ़

हा, मैंने ही प्रोफ़ेसर को आदेश देकर, उन दोनों के दिमाग से छेड़कर आपस में लड़वाया, बस अब थोड़ी देर में किसी एक की लाश देखने को मिलेगी, और मेरा बदला पूरा हो जायेगा ।

तभी एक जोरदार मुक्का पड़ते ही अनजान आकृति का थोबड़ा सीधा हो गया, और बोला - आह किसकी इतनी हिम्मत हुई, जो मुझे मुक्का जड़ दे ।

आयरन मैन -: अरे यार, हमें इतनी जल्दी भूल गए, पहले मेरा रिएक्टर तो वापस कर दो ।

दूसरा घूंसा जड़ा परमाणु ने, और इसी के साथ -

आयरन मैन -: परमाणु, जरा चेहरा हटाकर देखना, ये महापुरुष कौन है ?

परमाणु -: ओके ।

नकाब हटाकर चेहरा देखते ही, परमाणु का दिमाग एक बार फिर सरक गया और बोला - ओह तुम हो मिस्टर थम्बी, मामा कमलकांत के असिस्टेंट ।

अब बताओ तुम ये सब क्यों कर रहे हो ? क्यों दिल्ली को तबाह करने पर तुले हो ?

थम्बी -: सब बताऊंगा, पर पहले ये बताओ, अगर तुम दोनों यहाँ हो तो, वहां दिल्ली में कौन लड़ रहा है ?

आयरन मैन -: मानता हूँ, की तुम थोड़े समय के बुद्धिमान हो गए थे, पर अंधे हो गए थे । जरा ध्यान से स्क्रीन पर देखो दिल्ली में जो लड़ रहे है, वो हम नहीं है, केवल हमारे शूट है ।
वो मेरा खाली कवच और परमाणु की खाली ड्रेस है, जो तुम्हारा ध्यान भटकाने के लिए उलझाए थे ।

थम्बी -: अब ये बताओ, तुम दोनों का दिमाग तो मेरे कण्ट्रोल में था, फिर आज़ाद कैसे हो गए ?

आयरन मैन -: ज्यादा बुद्धिमान बनाने के चक्कर में तुम वाकई में बेवकूफ निकले, क्योकि जिन पावर की मदद से तुमने रिएक्टर चोरी के दौरान फ्राइडे को शटडाउन किया था, और फिर प्रोबॉट को भी तुम्ही ने लॉक किया था । फिर उसी के दम पर तुमने मुझे और परमाणु को भी अपने कण्ट्रोल में किया, राइट ।

थम्बी -: हा, राइट ।

आयरन मैन -: पर बेटा, हम तुम्हारे बाप है, २१वी सदी में कोई अपनी गलती दोहराता नहीं, क्योकि फ्राइडे इस बार सतर्क थी, इसका काट उसने तैयार कर रखा था, और उसी की मदद से मुझे और परमाणु को आजाद करवाया । और हा इतनी देर परमाणु के साथ रहने से मुझे पता चल ही गया की ये सारी तकनीक प्रोफ़ेसर की है और प्रोफ़ेसर की हर एक तकनीक की जानकारी पहले से ही किसी को हो जाती है । जो विचार प्रोफ़ेसर के दिमाग में होता है, वही विचार उसके दिमाग में भी होता है ।

खैर छोड़ो अब ये बताओ, इतनी अत्याधुनिक तकनीक के बाद तुम्हे मेरा रिएक्टर चोरी करने की क्या जरुरत पड़ गई ?

थम्बी -: वह सुपर स्टोन, उसमे इतनी ऊर्जा है की साधारण यन्त्र उसकी ऊर्जा को संभाल नहीं सकते, तो मेरे दिमाग में आयरन मैन के आर्म रिएक्टर का ध्यान आया, क्योकि फ़िलहाल छोटे साइज में वही एक यन्त्र है, जो उस स्टोन की ऊर्जा को संभाल सकता है ।
मेरा लक्ष्य तो केवल परमाणु था, पर संयोग से अगले ही दिन आयरनमैन को दिल्ली आना था, ये मेरे काम में एक रोड़ा था ।

परमाणु -: अब ये बताओ, दिल्ली क्यों तबाह करना चाहते हो ?

थम्बी -: इसके जिम्मेदार तुम दोनों हो, मैंने तुम दोनों का हर एक काम में साथ दिया, पर मुझे क्या मिला ? उल्टा तुमने मेरे भाई और पिता को जेल पहुंचा दिया, मेरा बाप शर्म और सदमे में आकर आत्महत्या कर लिया ।

परमाणु -: मैंने तुम्हारे पिता और भाई को जेल नहीं पहुंचाया, उनके कर्मो ने उन्हें जेल पहुंचाया था ।

क्या तुम्हे ये नहीं पता था, कि तुम्हारे पिता ड्रग्स तस्कर और भाई ने कई हत्याएं की थी ?

तुम्हारे पिता की वजह से दिल्ली के न जाने कितने युवा काल के गाल में समा गए ? न जाने कितनो का घर उजड़ गया ? तुम्हारे भाई ने न जाने कितने निर्दोषो की हत्याए की थी ।

मैंने वही किया, जो परमाणु और अपराधिओं के साथ करता है, उन्हें जेल भेजवाया | तुम्हारे भाई और पिता न तो मेरे आखिरी दुश्मन है और न ही पहले ।

हम सुपर हीरोज कम्युनिटी, चाहे आयरनमैन हो, परमाणु हर किसी के साथ बस इंसाफ करते है ।

अब ये बताओ, मामा के दिमाग को कैसे काबू में किया ? जबसे वो अपराधी बने तबसे अब अपराध जगत में चमक आ गयी ।

थम्बी -: जब मै उनका असिस्टेंट था, उनका लैब में हर प्रयोग में साथ दिया, इसलिए उनके हर रिसर्च की जानकारी मुझे है, उनके हर एक हथियार की जानकारी मुझे है । जिस दिन तुमने मेरे भाई और बाप को जेल पहुंचाया और मेरे बाप ने आत्महत्या की उसी दिन मैंने ठान लिया था की मै परमाणु और उससे सम्बंधित हर चीज़ को मिटा दूंगा । बस उसी दिन मैंने प्रोफ़ेसर साथ का छोड़ दिया, और अपने प्लान पर जुट गया ।

पर तभी एक दिन मौका मिल गया, जब मुझे पता चला किसी वजह से प्रोफ़ेसर कोमा में चले गए, और जब वो वापस से जागे तो, वो इसका जिम्मेदार परमाणु और नागराज को समझे

और शायद इसी वजह से उन्होंने अपराध का रास्ता चुन लिया । तब मैंने प्रोफ़ेसर पर नजर रखनी शुरू की, और एक दिन मैंने उनके ही यंत्र से उनके दिमाग को काबू कर लिया, उनसे पहला काम स्टोन चोरी करवाया, फिर आर्म रिएक्टर को चोरी करवाया ।

और है इस वक्त भी प्रोफ़ेसर मेरे ही कब्जे में है, अगर तुमने जरा सी भी होशियारी दिखाई तो फिर से बुड्ढे को कोमा में भेज दूंगा ।

परमाणु -: याद रखना मामा को खरोंच भी आई तो, आज वो कर बैठूंगा जो आज तक नहीं किया हू ।

थम्बी -: हाहाहा, अब मुझे तुम्हे ख़त्म करने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी, क्योकि अब वो तुम्हे खुद ख़त्म करेगा, जिसे तू अब तक बचा रहा है ? कमलकांत !

और परमाणु ने कमलकांत का यह नया रूप पहली बार देखा था, पूरा शरीर एक विशेष कवच और हथियारों से सुसस्जित ।

थम्बी -: ख़त्म कर दो इन दोनों को कमलकांत ।

और कमलकांत के हथियार सक्रिय हो गए, पहले वार को परमाणु डोज़ देकर बचा, और दूसरे को आयरनमैन ।

आयरन मैन -: परमाणु, फैसला तुम्हे करना है, मामा को बचाना है या खुद मरना है । क्योकि मेरे कवच और तुम्हारा शूट दोनों इस पर कमजोर पड़ रहा है ? आज पहली बार किसी बराबर के टेक्नोलॉजी से पाला पड़ा है ।

परमाणु -: जब तक कोई तरीका न मिले तब तक ऐसे ही उलझाए रखो ।

आयरन मैन -: फ्राइडे, प्रोफ़ेसर की पूरी जाँच करो और बताओ ।

फ्राइडे -: ओके सर, एरोर, सर कुछ समझ नहीं आ रहा है, अजीब तरह की तकनीक है मैं समझ नहीं पा रही हू ।

परमाणु -: प्रोफ़ेसर, की तकनीक समझना बहुत ही मुश्किल है, उनकी तकनीक दुनिया के बेस्ट तकनीकों में से एक है ।

आयरन मैन -: पर कोई तो होगा, जो प्रोफ़ेसर को अच्छे से समझता होगा । ऐसे हम कब तक बचेंगे । प्रोफ़ेसर के हथियार देर सबेर हमें ख़त्म ही कर देंगे ।

बचो उन ऊर्जा किरणों से, जवाब में परमाणु "ट्रांसमिट " हुआ । रिफॉर्म होने के बाद, थैंक्स दोस्त, अब तुम बचो ।



आयरनमैन एक तरफ होकर बचा | अब प्रोफ़ेसर ने आयरनमैन की तरफ शक्तिशाली रॉकेट्स दिए ।

आयरन मैन -: ओह, तेरी बज गयी ।

तभी बीच में उन रॉकेट्स और आयरनमैन के बीच परमाणु आ गया, और -

"परमाणु शील्ड ऑन" राकेट परमाणु शील्ड टकराकर ख़त्म हो गई ।

थम्बी -: कमल इन्हे अपनी सबसे पावर फूल शक्ति का नमूना दिखाओ ।

नहीं अब ये कोई विनाश नहीं मचाएंगे, इन्हे मै रोकुंगा । (प्रोबॉट)

परमाणु -: प्रोबॉट, आप लैब से बाहर क्यों आये ?

प्रोबॉट -: परमाणु, प्रोफ़ेसर कमलकांत ने मुझे इसीलिए बनाया था, जब तुम मुसीबत में हो तब मै तुम्हारी मदद करू| प्रोफ़ेसर का दिमाग अब भी मुझ से जुड़ा है, उनकी हर एक तकनीक की जानकारी मुझे है, मै इस शूट में लगे हथियारों को काट सकता हू ।

फ्राइडे -: सर, ध्यान से सुने अब जो बताने जा रही हूँ, शायद आपको यकीन नहीं होगा, ये जानकारी मेरे डेटाबेस में कैसी आई मुझे समझ नहीं आ रहा है ?

आयरन मैन -: क्या ?

और जो जानकारी फ्राइडे ने आयरनमैन को दी, उसे सुनकर आयरनमैन को भरोसा नहीं हुआ ।

आयरन मैन -: हे भगवान, अब क्या करू ? अब चाहे जो भी बस प्रोफ़ेसर को बचा के रहूँगा ।

इधर प्रोबॉट ने एक-एक कर के प्रोफ़ेसर के हथियारों को कटना शुरू कर दिया ।

थम्बी ये सब देख कर भड़क गया, और कमल क्या कर रहे हो ? ख़त्म करो इन सब को ऊर्जा किरणों से ख़त्म करो, इन सबको ।
प्रोफ़ेसर को जैसे किसी अजीब तरह का आदेश मिल चुका है ।
प्रोफ़ेसर ने शक्तिशाली किरणों का वार किया, और प्रोबॉट एक तरफ जा गिरे ।

परमाणु, आयरनमैन और प्रोबॉट तीनो एक साथ मिलकर भी प्रोफ़ेसर का सामना नहीं कर पा रहे थे, शायद ये उन्हें अपना अंत नजर आ रहा था ।

प्रोबॉट -: पता नहीं, अब मै इनके दिमाग में क्यों नहीं प्रवेश नहीं कर पा रहा हूँ ? जैसे किसी ने मेरा दिमाग प्रोफ़ेसर के दिमाग से कट कर दिया ।

आयरन मैन -: सुनो, परमाणु, और प्रोबॉट आप भी ध्यान से सुनिए, मेरे पास एक प्लान है ।

परमाणु -: क्या ?

आयरन मैन -: मै उस थम्बी को रोकता हूँ, और तुम दोनों किसी भी तरह से प्रोफ़ेसर रोको, क्योकि तुम दोनों ही प्रोफ़ेसर को अच्छे से जानते हो, और तुम ही दोनों उन्हें रोक सकते हो ?

"ओके दोस्त" परमाणु ने कहा !

इधर फिर प्रोफ़ेसर ने प्रोबॉट पर हमला कर दिया, और अब प्रोबॉट भी उनके हथियारों नहीं काट पा रहे है ।

इधर आयरनमैन, थम्बी को रोकने की पूरी कोशिश करता है, पर अभी वो भी प्रोफ़ेसर के हथियारों का उपयोग कर रहा है ।

थोड़ी देर बाद, परमाणु और प्रोबॉट दोनों ही प्रोफ़ेसर की शक्तिओ के सामने ढेर हो चुके थे, और आयरनमैन भी लगभग थम्बी के हाथो मात खा चूका था ।

अब पूरी बाजी थम्बी के हाथ में थी, देख क्या रहे हो कमल ख़त्म कर दो इन सबको ।

इतना सुनने के साथ प्रोफ़ेसर के हथियार परमाणु के ऊपर बरस पड़े ।

प्रोबॉट और **आयरन मैन** -: परमाणु बचो !

परमाणु -: नहीं, आज नहीं, आज देखूंगा जिन हाथो ने मुझे बड़ा किया, जिस मामा ने मुझे पिता की तरह पाल पोस कर बड़ा किया, क्या वो हाथ मुझे ख़त्म कर पाएंगे, जिन हाथो ने मुझे साधारण इंसान से परमाणु बनाया ?

इतना सुनने पर प्रोफ़ेसर के दिमाग शायद उथल- पुथल होने लगा, जैसे अपराधी कमल के अंदर से पिता तुल्य मामा कमल बाहर आने को छटपटाने लगा, पर दिमाग कण्ट्रोल का असर कम नहीं था ।

एक वार किया, और परमाणु की एक-एक चीख प्रोफ़ेसर कानो को हिला रही थी, अब परमाणु ने बचाव करना बंद दिया ।

परमाणु -: ख़त्म कर दीजिये मुझे मामा, ख़त्म कर दीजिये मुझे ।

इतना सुनने के साथ प्रोफ़ेसर का दिमाग हिल गया और परमाणु पर तना हथियार ढीला हो गया, और वो हथियार उन्होंने थम्बी पर फायर कर दिया ।

थम्बी -: ये क्या कर रहे हो प्रोफ़ेसर मुझे नहीं उन तीनो को ख़त्म करो ?

कमलकांत -: अब मै तेरा गुलाम नहीं हूँ, थम्बी मेरे टुकड़ो पर पलने वाले कुत्ते, आज मै तेरा हिसाब यही ख़त्म कर दूंगा ।

अब परमाणु पर तना हथियार थम्बी के ऊपर तन गया, और एक फायर के बाद परमाणु ने कमल का हाथ पकड़ लिया ।

परमाणु -: नहीं मामा इसे कानून सजा देगा, आप नहीं ।

पर थम्बी को संभलने का मौका मिल गया और "बस अब मै तुम सबको ख़त्म कर दूंगा," थम्बी ने कहा ।

आयरन मैन -: इतनी भी जल्दी क्या है ? अभी तो हमारी बारी है, अभी तो बस हीरो हमारी तरफ आया है, और लेजर वार कर दिया ।

थम्बी -: बुड्ढे की तकनीक अभी भी मेरे पास है, और उसी तकनीक से मै तुम सबको ख़त्म कर दूंगा ।

और अब हमारे पास प्रोफ़ेसर है, परमाणु ने कहा" अब तुम्हारी एक भी चालाकी नहीं चलेगी ।

अब थम्बी के सभी वारों को प्रोफ़ेसर ने कटना शुरू कर दिया, एक के बाद एक थम्बी के हथियार बेकार हो गए ।

प्रोबॉट -: आयरनमैन, परमाणु वार करो यही मौका है ।

परमाणु और **आयरन मैन** -: ओके बॉस ।

आयरन मैन -: फ्राइडे, सारी पावर आर्म चेस्ट रिएक्टर में लगाओ ।

परमाणु -: चेस्ट "परमाणु ब्लास्ट" और फायर ।

इस शक्तिशाली वार ने थम्बी की बची खुची ताकत को भी को ख़त्म कर दिया, और परमाणु ने थम्बी को "परमाणु रस्सी" में कैद कर दिया ।

अब तुम यहाँ से सीधा जेल जाओगे, तिहाड़ में तुम्हारा इंतजार हो रहा है ।

कमलकांत -: अब मुझे यहाँ से निकल जाना चाहिए ।

परमाणु -: नहीं, प्रोफ़ेसर अब मै आपको वापस अपराध की दुनिया मे नहीं जाने दूंगा ।

कमल -: तुम मुझे नहीं रोक नहीं पाओगे परमाणु ।

और कमल ने परमाणु पर वार कर दिया, हट जाओ मेरे रास्ते से ।

परमाणु ने फिर रोकने की कोशिश की, पर इस बार प्रोबॉट ने परमाणु का हाथ पकड़ लिया, बोले - नहीं परमाणु उन्हें जाने दो, अगर इस वक्त उन्हें रोकने की कोशिश की तो फिर कोमा में चले जायेंगे ।

और शायद यही वो समय था जब दिल्ली की आँख कहे जाने वाले परमाणु की आँखों में आंसू आ गए थे, पर चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता ।

परमाणु -: एक बार आप मुझे फिर अनाथ छोड़ कर चले गए, मामा ।

असहाय सा खड़ा परमाणु सिर्फ प्रोफ़ेसर को अपने से दूर जाता देख सकता है ।

आयरन मैन -: सब कुछ जिंदगी में नहीं मिलता मेरे दोस्त, मैंने भी बहुत कुछ खोया तब जाकर कही "आयरनमैन" बन पाया हूँ, और हा मेरे पिता (हॉवर्ड स्टार्क) तुम्हारे मामा के सबसे अच्छे दोस्त थे, ये बात मुझे फ्राइडे ने लड़ाई के दौरान बताया, तब मैंने भी प्रोफ़ेसर पर वार करना बंद कर दिया, और ये बात फ्राइडे के डेटाबेस में कैसे आयी उसे खुद नहीं पता ?

प्रोबॉट -: शायद, इस वजह से, क्योकि प्रोफ़ेसर का दिमाग मुझसे जुड़ा है, और फ्राइडे भी जब मेरे सिस्टम से जुडी तब डेटा का आदान- प्रदान हुआ है, और शायद ये जानकारी उसके डेटाबेस में चली गई, पर मेरे सुपर सिस्टम को भी ये बात समझ नहीं आ रही की सिर्फ यही जानकारी क्यों गई ? और भी बहुत कुछ जानकारी जा सकती थी ।

आयरन मैन -: शायद, सब उस भगवान की मर्जी है, उसकी मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता, वो चाहते थे की मै ये बात जानू की प्रोफ़ेसर मेरे पिता के सच्चे दोस्त थे ।

थोड़ी देर बाद सभी ने आजमगढ़ की वह बियावान जगह छोड़ दी, जिसने परमाणु के घावों को फिर हरा कर दिया था ।

नई दिल्ली

टोनी स्टार्क -: प्रोबॉट अब मुझे भी वापस USA जाना होगा, यहाँ आकर मैंने बहुत कुछ सीखा, की रोबोट भी किसी का सच्चा दोस्त हो सकता है, आप परमाणु के सच्चे दोस्त है प्रोबॉट ।

और परमाणु वाकई में तुम दिल्ली आंख, छत, और दिल हो, तुम हो तो दिल्ली सुरक्षित है ।

परमाणु -: तुम भी किसी से कम नहीं हो "लोहे के जिगर वाले" आयरनमैन ।

टोनी स्टार्क -: वैसे वो इंस्पेक्टर दिखाई नहीं दे रहा है, सोच रहा हू जाते-जाते उससे मिलता जाता ।

परमाणु -: मन में सोचते हुए, अब क्या करू ? अच्छा ठीक है, टोनी मै अभी उसे बुलाता हूँ ।

परमाणु निकलने की सोचता है, तभी ।

टोनी -: अरे ! विनय उर्फ़ परमाणु कहाँ जा रहे हो, बस ये मास्क ही तो हटाना है परमाणु के चेहरे से, और इंस्पेक्टर विनय मेरे सामने आ जायेगा ।

विनय -: ओह ! तो तुम्हे पता चल ही गया, मै ही परमाणु हूँ ।

टोनी -: (मुस्कुराते हुए) अब जब हम दोस्त है, तो दोस्तों के बीच कुछ छिपाते नहीं, पर चिंता मत करो ये बात कोई नहीं जान पायेगा ।

और फिर अगले दिन टोनी स्टार्क ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्रों को सम्बोधित किया, और कुछ होनहार युवाओ के पढ़ाई की व्यवस्था की ।

इंदिरा गाँधी एयरपोर्ट

टोनी -: बॉय, विनय तुम्हारी बहुत याद आएगी ।

विनय -: वो तो है, दोस्त हमेशा ही याद आते है, मै तुम्हे कभी भूलूंगा नहीं, और हा कभी जरुरत पड़ी तो, ये विनय तुम्हारे लिए जान भी दे देगा ।

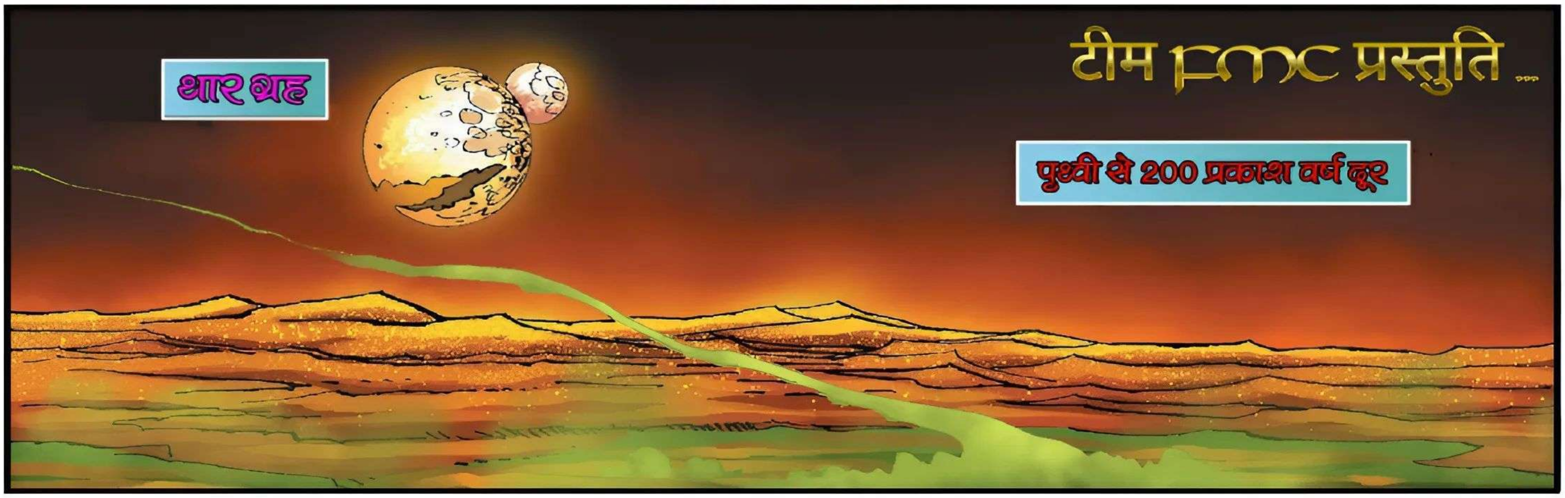
अलविदा मेरे दोस्त ।

तो दोस्तों उम्मीद करता हूँ, की आपको परमाणु और आयरन मैन का कॉम्बिनेशन पसंद आया है, अगर आप लोगो का सपोर्ट ऐसे ही रहा तो मै आप लोगो तक ऐसे ही अच्छी-अच्छी कहानिया देता रहूँगा ।

तो दोस्तों आपको यह स्टोरी कैसी लगी प्लीज कमेंट जरूर करे, मै पहले भी कह चूका हूँ, आपके एक कमेंट से मुझे एक आईडिया मिल सकता है ।

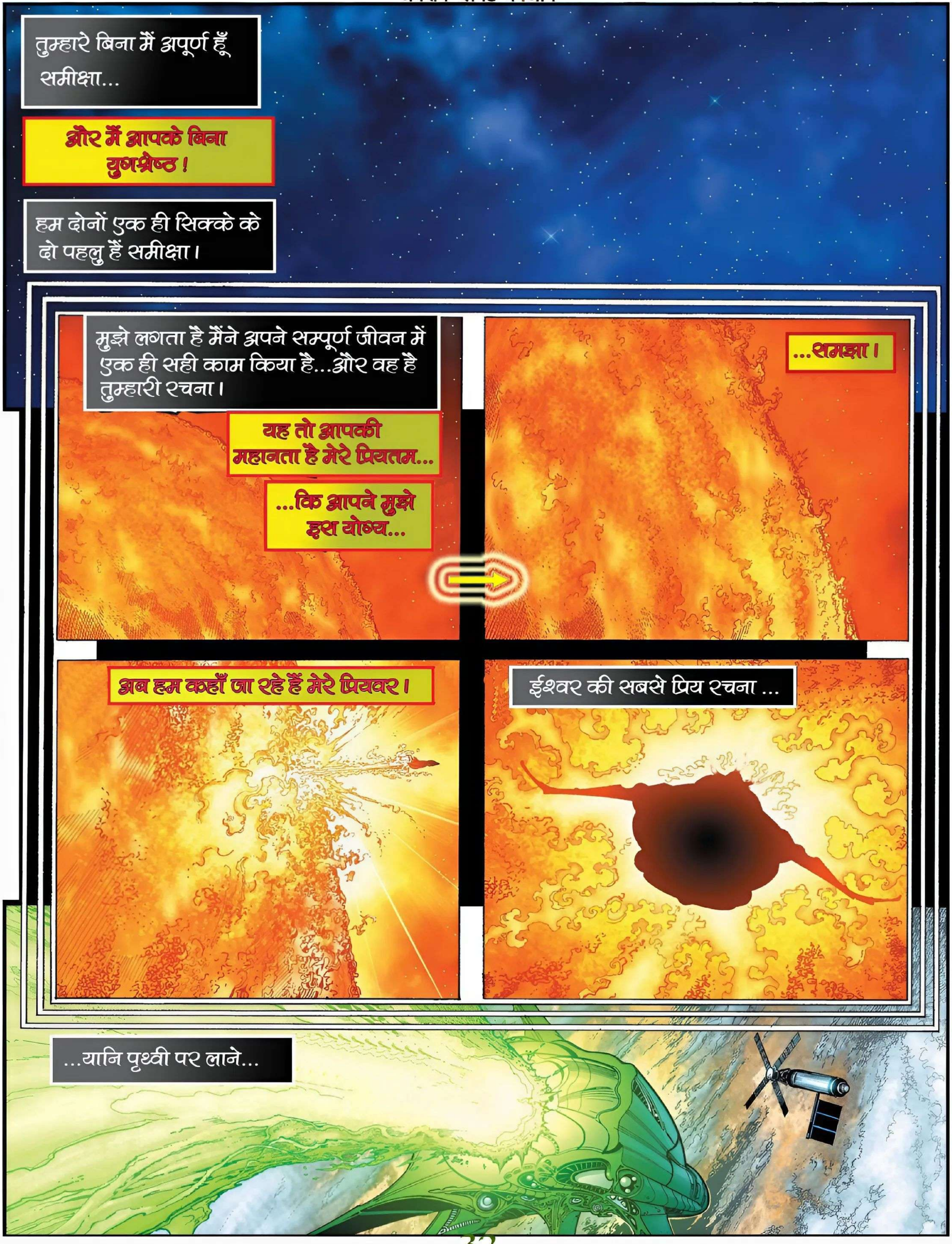
धन्यवाद ।



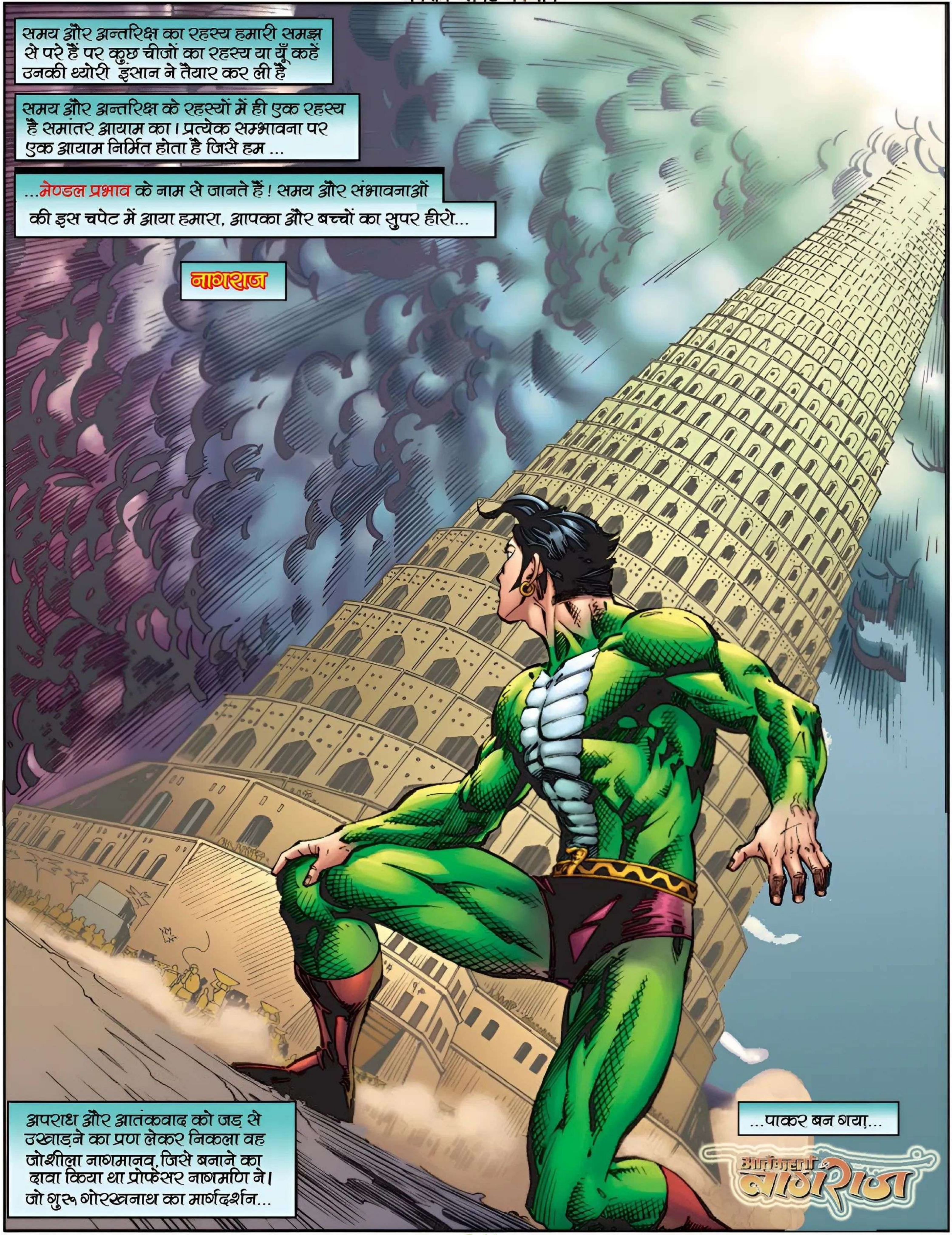

टीम FMC प्रस्तुति...
थार ग्रह
पृथ्वी से 200 प्रकाश वर्ष दूर


अहा ! आखिरकार इतने लम्बे वक्त के बाद...

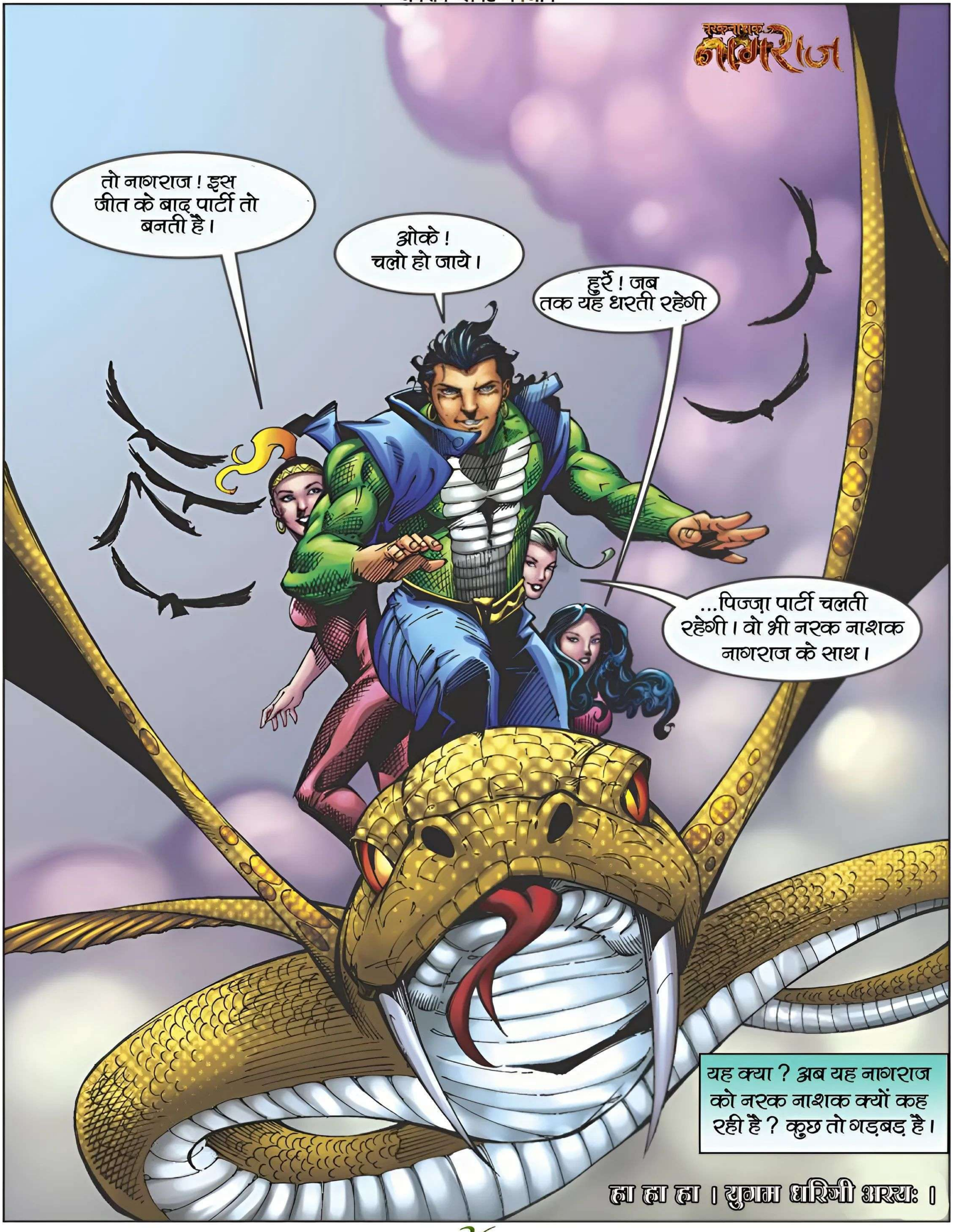

...मुझे उस श्राप से छुटकारा मिल ही गया।
आपका श्राप टूटते ही मैं भी सक्रिय हो गई युगश्रेष्ठ !


तुम्हारे बिना मैं अपूर्ण हूँ समीक्षा...
और मैं आपके बिना युगश्रेष्ठ !
हम दोनों एक ही सिक्के के दो पहलु हैं समीक्षा।
मुझे लगता है मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक ही सही काम किया है...और वह है तुम्हारी रचना।
यह तो आपकी महानता है मेरे प्रियतम...
...कि आपने मुझे इस योग्य...
...समझा।
अब हम कहाँ जा रहे हैं मेरे प्रियवर।
ईश्वर की सबसे प्रिय रचना ...
...यानि पृथ्वी पर लाने...


STORY. EDITING
&
DIALOGS
BALBINDER SINGH
HELPER
HUKAM MAHENDRA
VINAY SHARMA
KABIR VELLA
MAHESH KUMAR
team fmc present
महाप्रलय
नागराज विशेषांक
FAN MADE COMICS-JUNOON NEVER DIE


समय और अन्तरिक्ष का रहस्य हमारी समझ से परे हैं पर कुछ चीजों का रहस्य या यूँ कहें उनकी थ्योरी इंसान ने तैयार कर ली है
समय और अन्तरिक्ष के रहस्यों में ही एक रहस्य है समांतर आयाम का। प्रत्येक सम्भावना पर एक आयाम निर्मित होता है जिसे हम ...
...मेण्डल प्रभाव के नाम से जानते हैं! समय और संभावनाओं की इस चपेट में आया हमारा, आपका और बच्चों का सुपर हीरो...
नागराज
अपराध और आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने का प्रण लेकर निकला वह जोशीला नागमानव, जिसे बनाने का दावा किया था प्रोफेसर नागमणि ने। जो गुरु गोरखनाथ का मार्गदर्शन...
...पाकर बन गया...
आतंकहर्ता नागराज


अपराध और आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने से पहले विश्वरक्षक नागराज मर नहीं सकता। शैतानों! तुम्हारे जैसा ख्वाब लेकर कई आए और कई गए।
ओफ्फ!
बूम!!
बूम!!
पर महानगर आज भी ज्यों का त्यों खड़ा है।
एक क्षण रुकिए। नागराज खुद को विश्वरक्षक नागराज क्यों कह रहा है और इसका कार्यक्षेत्र महानगर कब से हो गया।
नागराज ने तो सम्पूर्ण विश्व से आतंक-वाद को खत्म करने का संकल्प लिया था तो नागराज एक शहर तक ही सीमित कैसे रह सकता है?
विश्वरक्षक नागराज


नागराज
तो नागराज ! इस जीत के बाद पार्टी तो बनती है।
ओके ! चलो हो जाये।
हुर्रे ! जब तक यह धरती रहेगी
...पिज्जा पार्टी चलती रहेगी। वो भी नरक नाशक नागराज के साथ।
यह क्या ? अब यह नागराज को नरक नाशक क्यों कह रही है ? कुछ तो गड़बड़ है।
हा हा हा । युगम धरिणी अरण्यः ।



क्या हुआ युगश्रेष्ठ? आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं?
तुम जानती हो समिक्षा। जब रक्षक भक्षक बनता है तो क्या होता है। अब यह सृष्टि के रचियता भी जान जायेंगे।
आप स्वयं ईश्वर को टक्कर देने जा रहे हैं युगश्रेष्ठ?
मैं नहीं समीक्षा! मेरा मोहरा। पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली मानव या कहूँ मानवनाग...नागराज।
पर वह ऐसा क्यों करेगा?
तुम अवधि जैसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न क्यों कर रही हो समीक्षा?

तिलिस्म देव का जीवन परिचय

नाम : तिलिस्मदेव (नागदेव)
उपनाम : बाबा तिलिस्मदेव
प्रकाशक - राज कॉमिक्स
समीक्षक - जोगींदर शर्मा



संक्षिप्त विवरण : शातुल्य नगर का राजा शातुल्य देव जिसने भगवान विष्णु की तपस्या कर पुत्र और पुत्री का वरदान माँगा और वरदान स्वरुप मिले पुत्र शतबली और पुत्री महक को बड़े अरमान से पला। इधर नागलोक का घमंडी राजा नागदेव जिसे अपनी असीम बल और सात पत्नियों के रूप का बड़ा घमंड था, महक की सुन्दरता का बखान सुनकर उसे अपनी रानी बनाने के लिए जबरन उठा लाया और फिर जा टकराया भगवान विष्णु से और परिणाम स्वरुप उसे शाप मिला मृत्युलोक यानि पृथ्वी में जीवन बिताने का। पृथ्वी पर आकर उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और वो लग गया भगवान की तपस्या करने। फलस्वरूप उसे मिली आसीम शक्तिया और उसने अपनी इन शक्तियों के बल पर मानवता की भलाई का बीड़ा उठाया और वो कहलाया तिलिस्मदेव, जो किसी भी सताए हुए इंसान की पुकार पर मदद के लिए दौड़ा चला आता है।

कार्यक्षेत्र : सम्पूर्ण पृथ्वी ।

व्यवसाय : नागलोक का राजा और एक तपस्वी ।

शक्तियां : अमरता और कई देवों द्वारा दी गयी अद्भुत शक्तियां ।

कमजोरी : एक शाप के कारण अपने ही राज्य नागलोक में न जा सकना।

मुख्य साथी : सात पत्नियाँ और सबसे बड़ी रानी सर्पागिनी।

मुख्य दुश्मन : विचित्रसेना, कंकाल देव इत्यादि।

1. तिलिस्म देव की पहली कॉमिक Genl-0253 तिलिस्म देव थी।

2. तिलिस्म देव की लास्ट सोलो कॉमिक Genl-0526 चण्डकाली मुंडमाला थी।

3. तिलिस्म देव अमर हैं और उनके पास देवताओं द्वारा दी गयी सहस्त्र दिव्य शक्तियाँ हैं।

4. तिलिस्म देव और शक्ति की प्रतियोगिता सर्वनायक सिरीज़ के तृतीय खण्ड सर्वसंग्राम के द्वितिय अध्याय आत्मशक्ति में होती है, जोकि पृष्ठ संख्या २४ से शुरू होता है।

5. सर्वनायक में तिलिस्मदेव शक्ति से इसलिए हार जाते हैं क्योंकि तिलिस्म देव के पास भगवान महादेव की शक्तियां हैं और शक्ति के पास माँ आदिशक्ति की। एवं इन दोनों के टकराव से ब्रह्मांड प्रलय आ सकती थी और जब तक शक्ति का रौद्र काली रूप तिलिस्म देव के *शव पर तांडव* नही करता तब तक देवी काली शांत नही हो सकती थी।

6. तिलिस्म देव की दो मल्टीस्टार कॉमिक सीरीज हैं:-
१. सर्वनायक सिरीज़, तथा २. काल सीरीज़ !

7. तिलिस्म देव बांकेलाल के साथ Spcl-003 बांकेलाल और तिलिस्म देव में नजर आए थे।

8. सर्वनायक सिरीज़ के तृतीय खण्ड सर्वसंग्राम के द्वितिय अध्याय आत्मशक्ति में बताया गया है कि चन्दा, जोकि शक्ति का दूसरा रूप है, राजकुमारी महक का पुनर्जन्म है, जिससे नागदेव (तिलिस्मदेव बनने से पहले) विवाह करना चाहता था।




धड़ाम

एक मुलाकात - अनुराग कुमार सिंह



सर्वनायक विस्तार, जलजीवनी जैसी कहानिया लिख चुके राज कॉमिक्स के उभरते लेखक अनुराग कुमार सिंह जी का इंटरव्यू लिया हमारे ट्रेंडी बाबा मोहित शर्मा जी ने...

इस इंटरव्यू में अनुराग भाई ने अपनी कुछ अंतरंग बाते शेयर की.... तो आप भी चटखारे लेकर पढ़िए इनका ये ख़ास इंटरव्यू....

श्री अनुराग कुमार सिंह पिछले 8 वर्षो से राज कॉमिक्स के साथ जुड़े हुए हैं। इस बीच उन्होंने कई कॉमिक्स की परिकल्पना, संपादन और लेखन में योगदान दिया। जनवरी 2008 के एक इवेंट में इनसे मिला और पाया कि अनुराग जी एक मृदुभाषी, हँसमुख, मिलनसार व्यक्ति है, जो निरंतर अपनी प्रतिभा को निखारने और नए आईडिया सोचने में लगे रहते हैं। कहानी गढ़ने और सीन-अनुक्रम जोड़ने का इनका तरीका मुझे काफी पसंद है। हालांकि, जितनी परिकल्पनाओं का इनके पास भंडार है उस अनुपात में कॉमिक नहीं आयी है अबतक पर आशा करता हूँ आने वाले समय में वो इसकी भरपाई कर देंगे। पेश है उनसे बातचीत के कुछ अंश.....

मोहित शर्मा - अपने बारे में बताएं – आपका बचपन, शिक्षा, गांव-शहर, ननिहाल आदि।

अनुराग कुमार सिंह - मेरा नाम अनुराग कुमार सिंह है! मैं किशनगंज, बिहार का रहने वाला हूँ! मेरी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा मेरे ननिहाल पूर्णिया में हुई है! वहीँ मेरा बचपन बीता है! मैंने रसायन शास्त्र से स्नातक किया है! और अब राज कॉमिक्स के लिए कहानियां लिखता हूँ!

मोहित शर्मा - कॉमिक्स प्रेम कब जागा और आपकी पहली कॉमिक कौन सी थी?

अनुराग कुमार सिंह - कॉमिक्स के प्रति प्रेम मेरे अंदर 7 साल की उम्र में ही जाग गया था! मेरे घर में सभी कॉमिक्स नॉवेल्स और पत्र पत्रिकाओं को पढ़ने के शौक़ीन रहे हैं! मेरे पापा फैंटम और मेंड्रेक के फैन रहे हैं! मेरे ननिहाल में भी सभी ऐसे ही रहे हैं! सो मुझे भी पढ़ने की लत शुरू से ही लग गई! मेरी पहली कॉमिक ताऊ जी की कोई कॉमिक्स थी जिसका नाम मुझे याद नहीं है! उसके बाद चाचा चौधरी और डायमंड के अन्य किरदार भी पढ़ लेता था! राज कॉमिक्स की पहली कॉमिक्स जो मैंने पढ़ी थी वो थी कातिलों का क्लब जिसका अगला भाग आज तक नहीं पढ़ पाया! नागराज की पहली कॉमिक जो मैंने पढ़ी थी वो थी प्रलयंकारी मणि और शंकर शहंशाह! तब मुझे पता भी नहीं था कि नागराज क्या चीज है!

मोहित शर्मा - आपके पसंदीदा किरदार कौन हैं और क्यों?

अनुराग कुमार सिंह - मेरा पसंदीदा किरदार है परमाणु जो हमेशा से मेरा प्रिय किरदार रहा है! इसको लिखने की अतृप्त इच्छा अब भी मेरे मन में दबी है! हालाँकि मल्टीस्टार कॉमिक्स पुनरुत्थान और विस्तार सीरिज़ में मैं परमाणु को लिख चुका हूँ पर सोलो में अब तक कोई मौका नहीं मिल पाया है मुझे! इसको पसन्द करने के कई कारण है! एक तो ये विज्ञान से जुड़ा किरदार है और मैं खुद भी विज्ञान का छात्र रहा हूँ तो इसके प्रति मेरा झुकाव स्वभाविक है! दूसरा मनु जी ने परमाणु/विनय और उनके सभी किरदारों को इतने सुंदर तरीके से चित्रित किया है कि कोई भी कॉमिक रीडर इससे सहज ही जुड़ जायेगा! तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि परमाणु की स्टोरीज और आर्ट का जो स्टैंडर्ड हुआ करता था उसके नीचे गिरने की जो फ्रस्टेशन थी उसने मुझे परमाणु की कहानियों से और ज्यादा जुड़ने और उसे ठीक करने के लिए प्रेरित किया! आप ऐसा भी कह सकते हैं कि मेरे राइटिंग के क्षेत्र में आने का कारण सिर्फ और सिर्फ परमाणु ही था!

मोहित शर्मा - लेखन के क्षेत्र में कैसे कूदना हुआ?

अनुराग कुमार सिंह - उपरोक्त प्रश्न में मैं ये बता ही चुका हूँ कि लेखन के क्षेत्र में आने का कारण क्या था! सन 2006 में राज कॉमिक्स ने फोरम की शुरुआत की थी! फोरम से जुड़ने के बाद मुझे मेरे जैसे अन्य मित्र मिले जो राज कॉमिक्स के वर्तमान स्थिति से नाखुश थे! वो उनको सुझाव देते शिकायतें करते! हम आपस में बहस करते! उनमें से कुछ स्टोरी भी लिखते थे! उनको देख कर मेरे अंदर का राइटर भी बाहर आने को आतुर होने लगा! पर एक पूरी स्टोरी लिखनी मुझे आती नहीं थी और नेट के साधन भी सिमित थे! इसलिए मैं सिर्फ शॉर्ट में आइडियाज लिख कर देता था! तब 2008 में फैन मीटिंग में शामिल होने दिल्ली जाने का मौका मिला! जहाँ संजय जी से मिलने के बाद पक्का मन बना लिया कि अब राइटर ही बनना है! और फिर उसके कुछ महीनों बाद ही मैंने राज कॉमिक्स ज्वाइन कर लिया!

मोहित शर्मा - राज कॉमिक्स फोरम के दौर के बारे में नए पाठकों को बताएं।

अनुराग कुमार सिंह - फोरम के बारे में क्या कहूँ? जितना भी कहूंगा कम लगेगा! ये एक ऐसा मंच था जो हम जैसे पाठकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं था! इस मंच ने मुझे खुद को व्यक्त करना सिखाया! अपनी भावनाओं को जाहिर करने का इससे अच्छा मंच हो ही नहीं सकता! नहीं तो इससे पहले कॉमिक पढ़ कर जो भी विचार मन में आते थे वो मन में ही घुमड़ते रहते थे किसी प्रेत की तरह! कहने को बहुत कुछ होता था पर कोई सुनने वाला नहीं होता! फोरम में कई अच्छे दोस्त मिले जो मेरी तरह समान रूचि रखते थे! जिनके साथ खुल कर अपने विचार रख सकता था! बहस कर सकता था!

मोहित शर्मा - जीवन और लेखन में किन कलाकारों, लेखकों और लोगो को अपना आदर्श मानते हैं?

अनुराग कुमार सिंह - राइटिंग में अनुपम जी, वाही जी और संजय जी को मैं अपना आदर्श मानता हूँ! आर्टिस्ट में अनुपम जी, मनु जी का कोई तोड़ नहीं है!

मोहित शर्मा - अबतक की आपकी सर्वश्रेष्ठ रचना किसे मानते हैं?

अनुराग कुमार सिंह - जलजीवनी को मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मानता हूँ! ये कहानी मैंने बहुत मन से लिखी थी और भेड़िया से मानसिक जुड़ाव होने के बाद ये एकमात्र ऐसी स्टोरी है जिसकी परिकल्पना और लेखन सबकुछ मेरा अपना था!

मोहित शर्मा - कई पाठकों को शिकायत है कि आपका काम काफी कम देखने को मिलता है, उनसे क्या कहेंगे?

अनुराग कुमार सिंह - इसको आप मेरा आलस्य कह सकते हैं या मन की दुविधा! जब तक कोई कांसेप्ट मुझे रोमांचित नहीं करता मैं उससे जुड़ नहीं पाता! मैंने बेमन से भी कई बार लिखने की कोशिश की है पर या तो वो पूरी नहीं हो पाती या फिर आशानुकूल नहीं होती!

मोहित शर्मा - आगामी प्रोजेक्ट्स के बारे में कुछ बताएं।

अनुराग कुमार सिंह - सर्वनायक विस्तार की आगामी कहानी पर काम कर रहा हूँ!

मोहित शर्मा - युवा लेखकों के लिए आपके क्या सुझाव हैं?

अनुराग कुमार सिंह – एक ही सुझाव है एडिटिंग प्रोसेस से भयभीत न हों! आपकी कहानी कितनी भी अच्छी हो उसमें गड़बड़ियां सम्भव है! उनको दूर करके ही आपका बेस्ट बाहर आयेगा! इसलिए बीच में ही कोशिश करना बन्द न करें!

मोहित शर्मा - कॉमिक्स परिदृश्य में आपके आने के बाद से क्या बदलाव महसूस किये?

अनुराग कुमार सिंह - कॉमिक्स अब सहज रूप से उपलब्ध नहीं होता! और अब ये आम लोगों की पहुँच से दूर हो चुका है!

मोहित शर्मा - कॉमिक बेस के सिकुड़ने का क्या कारण है और आपके मत में स्थिति में किस तरह सुधार किया जा सकता है?

अनुराग कुमार सिंह - कई कारण है! नए रीडर्स का न जुड़ना! पुराने रीडर्स का दूर जाना! महंगा और सहज उपलब्ध न होना! कहावत है जो दिखेगा वही बिकेगा! कॉमिक्स कैरक्टर्स का एनिमेशन, टीवी सीरीज या मूवीज में न आ पाना! सुधार के लिए सबसे जरूरी है नए रीडर्स को जोड़ना! इसके लिए मोशन कॉमिक और एनिमेशन बननी चाहिए। बुक फेयर और कॉमिक कॉन जैसे इवेंट ज्यादा से ज्यादा होना चाहिए। पेंटिंग कॉम्पिटिशन जैसी एक्टिविटी द्वारा भी छोटे बच्चों को कॉमिक्स से जोड़ा जा सकते हैं।

मोहित शर्मा - कॉसप्ले, कॉमिक इवेंट्स पर आपका क्या नजरिया है?

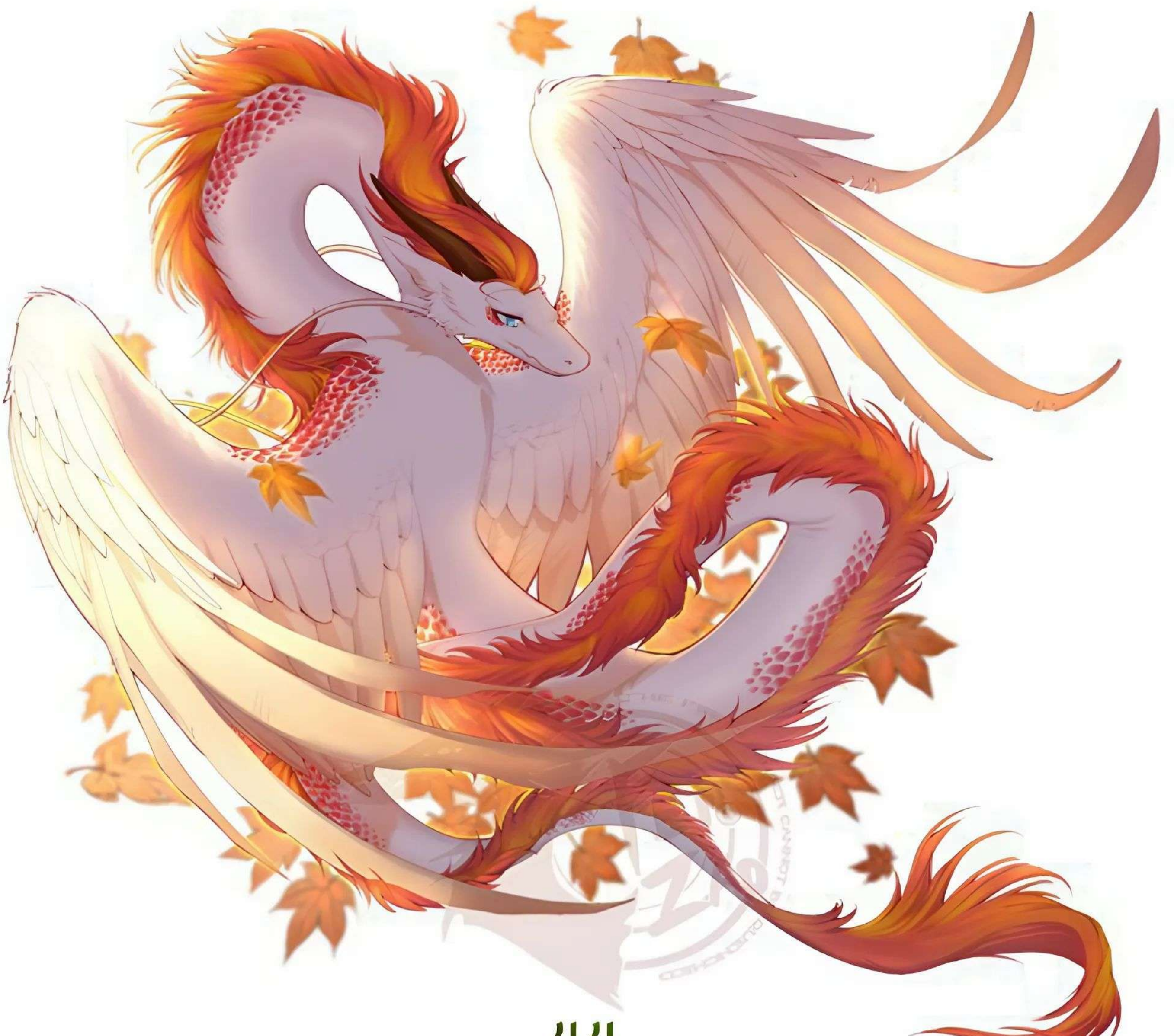
अनुराग कुमार सिंह - कॉस्प्ले और कॉमिक इवेंट्स कॉमिक इंडस्ट्री के लिए संजीवनी का काम कर सकते हैं। पर इसे छोटे शहरों में भी आयोजित करवाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि उन रीडर्स को भी कॉमिक्स से जोड़ सकें जो किन्ही कारणवश कॉमिक्स से दूर चले गए हैं।

मोहित शर्मा - कोई पुराना, बंद हो चुका किरदार लिखने का अवसर मिले तो किसे चुनेंगे?

अनुराग कुमार सिह - राज कॉमिक्स में मैं निःसंदेह परमाणु को ही चुनूँगा। अगर दूसरे पब्लिकेशन की बात करूँ तो राम रहीम और तौसी।

मित्रो ये एक छोटी सी कॉमिक्स परिचर्चा मोहित शर्मा जी और अनुराग कुमार जी के बीच थी जिसमे हमे अनुराग जी के कॉमिक्स प्रेम के बारे मे बहुत कुछ जानने को मिला .

अगली कॉमिक्स परिचर्चा के साथ मिलते है अगले अंक मे ....




देख नागराज मेरी सांसों की खुशबू! अब तू मुझे चिढ़ा नहीं पाएगा! आज मैं भी क्लोज-अप से ब्रश करके आई हूं!
ओफ! कहीं इसने अंधेरे मुंह क्लोज-अप जगह ओडोमोस से ब्रश तो नहीं कर लिया!

बाल-मन को झंझोड़ती एक पटकथा (भाग - 1)

लेखक - गौरव श्रीवास्तव

नागराज बालकनी में बैठ के सामने पार्क में खेलते हुए बच्चो को निहार रहा था, तभी गेट पर बाइक की आवाज सुनकर उसकी तन्द्रा भंग हुई, नीचे देखा तो ध्रुव बाइक में स्टैंड लगा रहा था। नागराज ने ऊपर से ही आवाज लगाई।

"ओ ध्रुव ऊपर ही आजा सीधे", ध्रुव ऊपर देख के OK का इशारा करता है, नागराज फिर आराम से बैठ गया।

ध्रुव अंदर आते ही ...

ध्रुव - क्या बात है भाई, कहां गायब हो आज कल, ऑफिस गया तो भारती ने बताया कि दो तीन दिन से घर पर ही हो।

नागराज - हां यार कुछ दिन से मन बड़ा बैचेन है।

ध्रुव - क्या हुआ, विसर्पी की याद आ रहीं है क्या (शरारत के अंदाज में)

नागराज - नही यार, (ठंडी आह भरते हुए)
ये इन बच्चो को देख रहे हो जो खेल रहे है,

ध्रुव - (शरारती भाव मे) हॉ देख रहां हूँ और सोच रहा हूं कि मेरा भतीजा कब खेलेगा। क्यों भाई कोई खुशखबरी है क्या ?

नागराज - अरे यार मजाक नही !

ध्रुव - (हंसते हुए) OK, OK क्या बात है बताओ |

नागराज - यार हम लोगो की कहानिया बच्चे 90 के दशक से पढ़-पढ़ के बड़े हुए है |

ध्रुव - हा तो ...

नागराज - कुछ दिन पहले मैं एक स्टेशन की सुरक्षा का जायजा लेने गया, वहां बुक स्टाल पर

कॉमिक बिक रही थी कुछ बच्चे ले भी रहे थे, मगर तभी मेरी नजर दो बच्चो के ऊपर पड़ी, वो बड़ी तत्परता से उन कामिक्सो को निहार रहे थे। मैं गया उनके पास राज के ओवर कोट में था तो मुझे पहचान नही पाए, मैने उनसे कहा देख क्या रहे हों बच्चो, तुम लोग भी ले लो। बच्चो ने जवाब दिया अंकल लेनें का मन तो बहुत है मगर इतने पैसे नही हैं हमारे पास, मैंने कहा कोई बात नही मैं दिलवा देता हूं, मैंने एक कॉमिक की दो कॉपी ली और दाम पूछा, दुकानदार बोला - 500 रुपये हुए है, मैं हैरान रह गया कि क्या 2 कॉमिक के 500 रुपये, शायद तभी वो बच्चे उसे नही खरीद पा रहे थे।

बस उसी समय मन में ख्याल आया कि ऐसे तो लाखों बच्चे होंगे, जो चाह कर भी नही ले पाते होंगे। तुम तो जानते ही हो मुझे बच्चों से कितना लगाव है उन्हें ऐसे उदास देख मैं कुछ दिनों से इसीलिए परेशान हूं।

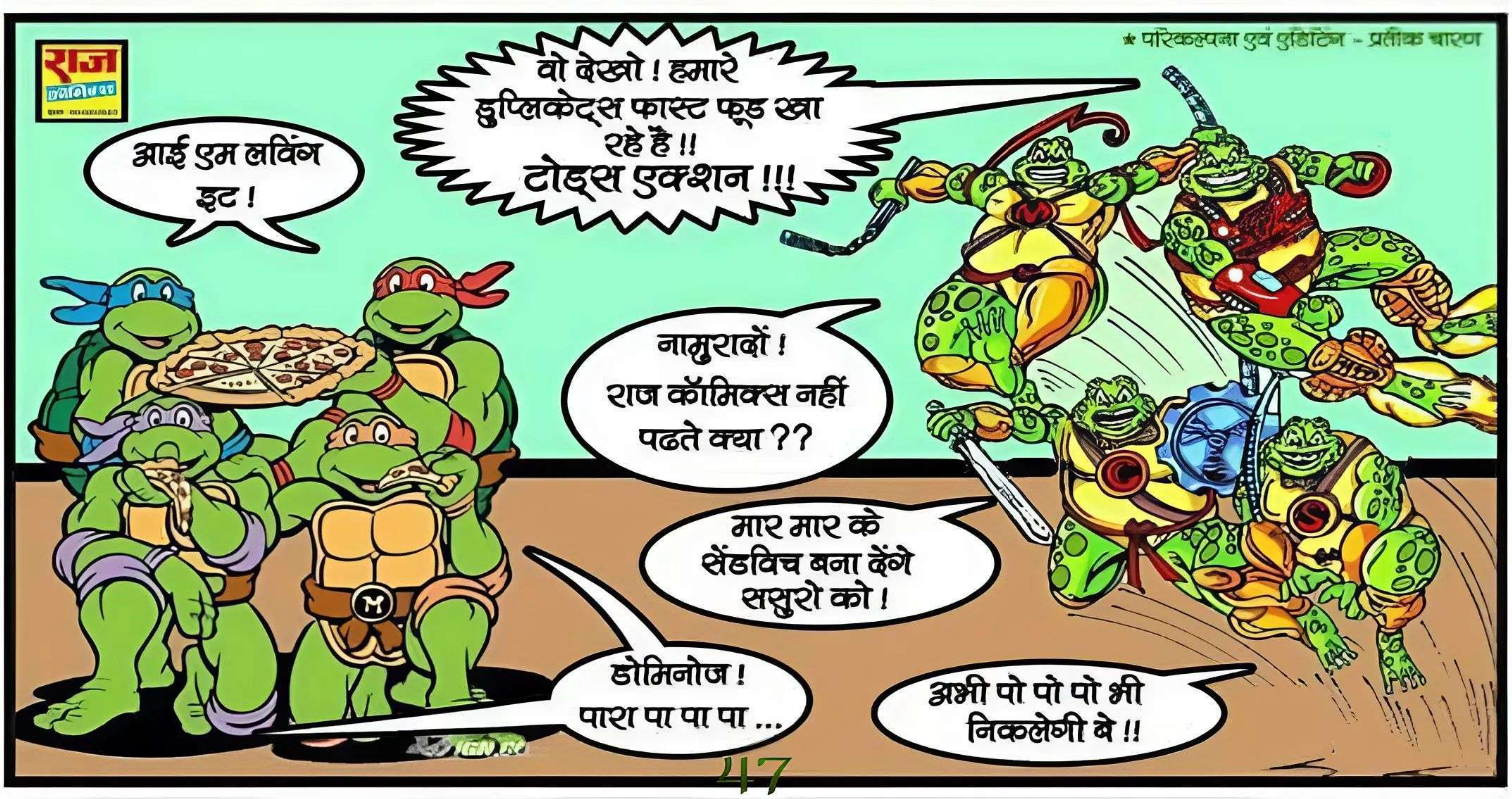
ध्रुव - हम्म्म्म तो यह है पूरा मामला, बात तो तुम्हारी सही है चलो अपने सुपर हीरो वाले तरीके से इस मामले को सुलझाते है।

नागराज - वह कैसे ???

ध्रुव - पहले अपना उदासी वाला हुलिया तो बदलो
हमें ब्रह्मांड रक्षकों के बीच इस मामले को रखना होगा।

नागराज - हम्म्म्म चलो ....

शेष अगले अंक में ...




जब टकराती हैं बिजलियां तो थरथराती है धरणी, जब टकराते है घरा के नीचे भूभाग तो आता है जलजला,जब टकराते हैं ग्रह–नक्षत्र तो होता है सर्वनाश और जब टकराते हैं दो ब्रह्मांड तो तांडव करते हैं महाकाल और होता है ...
Navneet Singh
..ब्रह्माण्ड भञ्जन
ड्रीम कॉमिक्स का एक ऐसा सुपर विशेषांक जिसे पढ़कर आपकी रूह तक तांडव कर उठेगी। ब्रह्मांड के भञ्जन होने से पहले ही इसे पढ़ लें । हाँ नई तो बाद में न कहना कि बताया नहीं था।

लुगदी साहित्य का जादुई संसार

समीक्षा - अनिल जनविजय



इन किताबों को शरीफ परिवारों में अच्छा नहीं माना जाता था। पर ये किताबें दिखती कम थीं और बिकती ज्यादा थीं।

'दहेज में रिवॉल्वर', 'डायन', 'बीवी का नशा', 'छह करोड़ का मुर्दा' जैसी मोटी-ताजी भड़कीली किताबों ने हिंदी पट्टी के रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड से गुजरते हुए आपकी भी निगाह खींची होगी.

जो इन्हें नहीं जानते वो इन्हें हिकारत की नजर से देखते हैं. पर इन्हें हलके में ना लें, ये इस तरह के साहित्य को अंग्रेजी में रचने वाले 'हिट' लेखक चेतन भगत की सारी किताबों को मिलाकर आई संख्या से चार पांच गुना ज्यादा बिकती है.

इन किताबों को शरीफ परिवारों में अच्छा नहीं माना जाता. पर ये किताबें दिखती कम हैं और बिकती ज्यादा हैं. इन किताबों को छुपकर पढ़ते हुए सिर्फ हमें ही नहीं, बल्कि हमारी कई बुजुर्गवारों को भी उनके पिता और चाचाओं की मारपीट गाली-गुफ्तार का सामना करना पड़ा है.

लुगदी साहित्य क्या बला है ?

कईयों को 'पढ़ने का चस्का' लगाने वाली ये किताबें, किसी भी भाषा के लिए पाठक वर्ग तैयार करने का काम करती हैं। रिसाइकल्ड पेपर यानि लुगदी कागज पर छपने की वजह से इसे 'लुगदी साहित्य' कहा जाता है। इन किताबों में सिर्फ अपराध और जासूसी की कहानियाँ ही नहीं, बल्कि भूत-प्रेत, शिकार, प्यार और सेक्स से जुड़ी कहानियां भी होती हैं।

सम्मानित हिंदी साहित्य के जलवेदार आलोचकों के 'फरमे' में फिट न आने के कारण इस पूरे साहित्य को ही 'लुगदी' या 'लोकप्रिय साहित्य' कहकर मुख्य साहित्य से खारिज कर दिया गया है। लेकिन सस्ते दाम, भरपूर मनोरंजन और सरल भाषा के चलते ये किताबें आम पाठकों के बीच हमेशा पॉपुलर रही हैं। मजदूरों, कामकाजी-नौकरीपेशा लोगों से लेकर छात्र-छात्राओं और गृहणियों के बीच ये एक जैसी लोकप्रिय हैं।

इन किताबों में कर्नल रंजीत और रिपोर्टर सुनील के जासूसी कारनामे, बैंक डकैतियों, हत्याओं, जिस्म का इस्तेमाल कर के दुश्मनों को धूल चटाने वाली बालाओं, मोहब्बत के लिए जान देने

वाले प्रेमियों और खजाने की तलाश में लगे खोजियों का जगमगाता संसार होता है.

अपराध साहित्य का झंडा हर ओर बुलन्द

लोकप्रिय या लुगदी साहित्य पर नाक-भौं सिकोड़ने वाले अक्सर भूल जाते हैं कि आज की हिंदी को प्रसिद्धि एक लोकप्रिय रचना, बाबू देवकी नंदन खत्री की 'चंद्रकांता' से मिली थी। 1888 में आई इस किताब की इतनी चाहत फैली थी कि बहुत से हिंदी ना जानने वालों ने सिर्फ इस किताब को पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। चंद्रकांता ने 20वीं सदी के शुरुआती दशकों में तिलिस्म और अय्यारी का ऐसा जादू बुना कि हिंदी के सबसे चर्चित कथाकार प्रेमचंद ने भी शुरुआत इन्हीं विषयों पर कहानियां लिखने से की थी।

अपराध साहित्य की लोकप्रियता हिंदी तक ही सीमित नहीं है. मराठी में अपराध और फंतासी कहानियां लिखने वाले रत्नाकर मतकरी का दर्जा किसी सेलेब्रिटी से कम नहीं है। मतकरी की कुछ कहानियों का हिंदी अनुवाद करने वाले मुबारक अली बताते हैं, 'एक ही साल में उनकी हर कहानी संग्रह के कई-कई संस्करण लाने पड़ते हैं, क्योंकि पहला संस्करण देखते ही देखते बिक जाता है. आखिर में पाठक को शॉक देना उनकी कथा की खासियत है।'

वहीं, बांग्ला में भी अपराध साहित्य की समृद्ध परंपरा रही है. सत्यजीत रे जैसे प्रसिद्ध फिल्मकार ने बच्चों के लिए 'फेलुदा' किरदार की रचना की थी. जो बच्चों और बड़ों दोनों में सामान रूप से लोकप्रिय हुआ. इस पर कई फिल्में भी बनीं। शरदेंदु बंधोपाध्याय के 'ब्योमकेश बक्षी' की आज भी भारतीय अपराध लेखन में खास जगह है. इसके अलावा तमिल और मलयालम में भी लुगदी साहित्य का बोलबाला रहा है।

दुनिया में सबसे ज्यादा उपन्यास लिखने का रिकॉर्ड भी तमिल लुगदी साहित्य लेखक राजेश कुमार के नाम है। इन्होंने अब तक 1500 से ज्यादा उपन्यास लिखे हैं।

चंद्रकांता के बाद

आज़ादी के बाद के दौर में जासूसी साहित्य का जलवा कायम रखने वाले लेखक थे, इलाहाबाद में जन्मे असरार अहमद. *(जिन्हें लोग इब्ने सफ़ी के नाम से जानते हैं)* इलाहाबाद से छपने वाली नखत पत्रिका में उर्दू व्यंग्य लिखने से शुरुआत करने वाले इब्ने सफ़ी का अपराध लेखन में आना भी एक संयोग ही था। कहते हैं किसी दोस्त ने उनसे शिकायत की थी कि उर्दू में अपराध साहित्य बिना सेक्स के तड़के के नहीं लिखा जा सकता. इस बात को गलत साबित करने के लिए उन्होंने 'दिलेर मुजरिम' उपन्यास लिखा जो पाठकों में हिट हो गया। उसके बाद इब्ने सफ़ी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. सफ़ी की 'जासूसी दुनिया' सीरीज में 100 से भी ज्यादा उपन्यास हैं। जबकि दूसरी, 'इमरान सीरीज' के तहत भी सैकड़ों उपन्यास छपे। उर्दू में लिखने वाले इब्ने सफ़ी की किताबें सिर्फ हिंदी ही नहीं, बल्कि बंगला और अन्य भारतीय भाषाओं में भी

अनुवादित करके पढ़ीं जाती थीं। अपनी बढ़ती लोकप्रियता के बीच 1950 के दशक में ही वो पाकिस्तान चले गए। महमूद फारुख़ी के अनुसार, 'इब्ने सफ़ी मजदूरों और कम पढ़े-लिखे लोगों में बहुत लोकप्रिय थे। दोपहर को काम की छुट्टी के बीच कोई एक पढ़ सकने वाला व्यक्ति किताब बांचता और बाकी सब घेरा बनाकर बैठकर उसे सुनते।'

इब्ने सफ़ी के सुपरहीरो

सफ़ी की रचनाओं में अगर कर्नल फ़रीदी, कप्तान हामिद और इमरान जैसे जांबाज, मुल्क्परस्त सीक्रेट एजेंट और जासूस हैं तो सिंह ही, डॉक्टर क्यू, टीथ्रीबी और प्रोफेसर बोगा जैसे सुपर विलेन भी। उनकी सीक्रेट सर्विस के ये किरदार इन खलनायकों की तलाश में यूरोप, अफ्रीका और एशिया ही नहीं बल्कि शकराल, जीरोलैंड और मकराल जैसे काल्पनिक देशों की खाक भी छानते थे। सफ़ी की कल्पना इन देशों और व्यक्तियों का असली लगने वाला ऐसा ताना-बाना बुनती कि पढ़ने वाला हैरान रह जाता था. उनके कई प्रशंसकों का मानना है कि मोगैंबो, शाकाल जैसे विलेन सफ़ी के रचना संसार से प्रेरित हैं। मशहूर शायर फ़रहान अख्तर और पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के जनक अब्दुल कादिर ख़ान भी सफ़ी के प्रशंसकों में शामिल रहे हैं।

और फिर गुलशन नंदा एक ब्रांड बन गए

1960 के दौर में लुगदी साहित्य अपराध, जासूसी और तिलिस्म के चंगुल से बाहर निकलकर रोमांस, सामाजिक मुद्दों और भावनाओं के नए बाजार को फतह करने निकल पड़ा। इस दौर के सितारे थे गुलशन नंदा और रानू जैसे लेखक। रानू और नंदा दोनों ने सामाजिक गैरबराबरी और जीवन के संयोगों के बीच नायक-नायिका के प्यार को आधार बनाकर लिखना शुरू किया। हालांकि इसमें बाजी मारी गुलशन नंदा ने। अमीर लड़के का गरीब लड़की से या फिर गरीब लड़के से अमीर लड़की का प्यार या फिर इसी तरह की जन्म-जन्मांतर के सच्चे प्यार कहानियों को गुलशन नंदा ने खूबसूरत भाषा में पिरोया।

एन डी सहगल एंड संस प्रकाशन से 1962 से उनके छपने का सिलसिला शुरू हुआ। नंदा के छपने का सिलसिला स्टार पॉकेट बुक्स के अमरनाथ वर्मा के साथ परवान चढ़ा। उस जमाने में रोमांस के रॉक स्टार थे गुलशन नंदा। उनके पहले उपन्यास की दस हजार प्रतियां देखते ही देखते खत्म हो गई थीं। कुछ ही दिनों में उसका रीप्रिंट लाना पड़ा। उन दिनों गृहणियाँ, स्कूल कॉलेज के लड़के-लड़कियां उनके मुरीद थे। ड्रामेटिक और रोमांटिक भावनाओं से भरे इन उपन्यासों में तब बॉलीवुड को अपार संभावनाएं दिखीं।
उनके उपन्यास 'माधवी' पर निर्देशक राम महेश्वरी ने 1965 में 'काजल' नाम की फिल्म बनाई।

धर्मेन्द्र, मीना कुमारी, पद्मिनी और राजकुमार के अभिनय से सजी ये फिल्म सिनेमाघरों में उतरी तो टिकट के लिए कोहराम मच गया। बॉलीवुड को एक हिट फार्मूला मिल गया और

गुलशन नंदा एक ब्रांड बन गए। आने वाले कई वर्षों तक प्रकाशक और निर्देशक उनके इर्द गिर्द चक्कर लगाते रहे ताकि उनका उपन्यास छापने या फिल्म बनाने को मिल सके। 1973 में उनके उपन्यास 'झील के उस पार' पर फिल्म और उपन्यास, दोनों लगभग साथ साथ आए थे. इस उपन्यास की लगभग 5 लाख प्रातियां बिकी थीं।

नंदा और रानू की देखा देखी 'सामाजिक उपन्यास' कही जाने वाली एक नई केटेगरी ही बन गई, जिसके तहत दहेज, प्यार, मजहब जैसे विषयों पर भावनात्मक और साफ-सुथरे उपन्यास लिखे जाने लगे।
उस दौर में छात्र-छात्राएं और गृहणियां इन उपन्यासों को जम कर पढ़ते और जार-जार रोते थे। बाद में जासूसी और अपराध साहित्य की दुनिया में नाम कमाने वाले लेखकों -- वेद प्रकाश शर्मा और सुरेन्द्र मोहन पाठक ने भी शुरुआत में सामाजिक उपन्यास लिखे थे. राजहंस, प्रेम वाजपेयी, समीर इसी विधा के अन्य नामचीन लेखक थे।

पॉकेट बुक्स का दौर

पिछली सदी के साठवें, सत्तरवें और अस्सी के दशक को लुगदी साहित्य के लिहाज से स्वर्णिम काल माना जाना चाहिए। यही वह समय था जब ओम प्रकाश शर्मा, वेद प्रकाश कम्बोज, कुशवाहा कान्त, वेद प्रकाश शर्मा, सुरेन्द्र मोहन पाठक जैसे नए लेखकों की एक पूरी फौज ने लुगदी साहित्य के बाजार पर धावा बोला। तरह तरह के किरदार तथा प्लाट पाठकों के सामने आए। जब मख़मूर जालंधरी ने 'कर्नल रंजीत' के उपनाम से लिखना शुरू किया तो उनकी देखा-देखी कुछ अन्य लेखकों ने भी यही प्रथा अपनाई।

मेरठ, इलाहाबाद से चलने वाले प्रकाशनों ने पॉकेट बुक्स के माध्यम से सस्ते दाम में इन लेखकों की किताबें छापना शुरू की जो बहुत लोकप्रिय हुईं। साथ ही साथ अंग्रेजी के लेखक जेम्स हेडली चेस और जेम्स बांड सीरीज के उपन्यास भी हिंदी में अनुवादित होकर लुगदी पर छपने लगे। रेलवे स्टेशनों के एएच व्हीलर बुक स्टाल्स ने इन किताबों को देश के कोने कोने में पहुंचाया। पान की गुमटियों और किराने वालों ने कस्बों में ये किताबें किराये पर देनी शुरू कीं और लाखों लाख पाठक लुगदी साहित्य में डूबने उतराने लगे।

कुशवाहा कांत बनारस से लिखने वाले एक लेखक थे. कुशवाहा कांत के बड़े प्रशंसक और एचसीएल में कंप्यूटर इंजीनियर तरविंदर सिंह बताते हैं, 'उन्होंने मूलतः सामाजिक और प्रेम उपन्यास लिखे. जिनमें अपराध का भी थोड़ा बघार होता था। उन्होंने सुभाष चन्द्र बोस पर एक उपन्यास और फंतासी को आधार बनाकर 'दानव देश' जैसी किताबें भी लिखी. कम उम्र में ही किसी विवाद में उनकी हत्या हो गयी, जिससे उनका रचना संसार करीब चालीस किताबों तक ही सीमित रह गया।'

मज़दूरी करते-करते बने लेखक

'जनप्रिय लेखक' का खिताब पाने वाले ओम प्रकाश शर्मा ने 'जीवित भूत', 'ट्रेन डकैती के अपराधी', 'पाप की परछाई' जैसे 400 से अधिक उपन्यास लिखे। जीवन के शुरुआती दौर में खुद मजदूरी करने वाले ओम प्रकाश शर्मा एक वामपंथी मज़दूर संगठन से जुड़े हुए थे। खाली समय में सस्ता मनोरंजन उपलब्ध कराकर मजदूरों को शराब-जुए जैसी बुराइयों से दूर रखने के उद्देश्य से उन्होंने लिखना शुरू किया तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

लोग कहते हैं की शर्मा जी शर्त लगाकर किसी भी विषय या वस्तु पर लिख सकते थे। एक बार एक मजदूर की कटी उंगलियां दिखाकर उनके एक मित्र ने उन्हें इस पर उपन्यास लिखने की चुनौती दी और ओमप्रकाश शर्मा ने इस विषय पर भी उपन्यास लिख दिया। राजेश, जगत, जगन जैसे पात्रों के रचनाकार ओम प्रकाश शर्मा के प्लाट काफी सरल होते थे। किसी एक जगह पर कुछ अपराधी अपराध करते थे और 'केंद्रीय खुफिया ब्यूरो' जैसी संस्थाओं से जुड़े उनके पात्र इस अपराध को हल करके दोषियों को सजा दिलवाते थे।

वेद प्रकाश शर्मा का 'वर्दी वाला गुंडा'

लुगदी साहित्य को लोकप्रियता के चरम तक पंहुचाने का काम किया सुरेंद्र मोहन पाठक और वेद प्रकाश शर्मा ने। राजीव गांधी हत्याकांड पर आधारित शर्मा के उपन्यास 'वर्दी वाला गुंडा' ने लोकप्रियता के नए कीर्तिमान बनाए और इसकी लगभग पंद्रह लाख प्रतियां बिकीं.
'विजय-विकास सीरीज' के लेखक वेद प्रकाश कम्बोज से प्रेरणा लेने वाले शर्मा ने 'विधवा का पति', 'सुलग उठा सिंदूर', 'आग लगे दौलत को' जैसे 'सामाजिक' और थ्रिलर, दोनों ही तरह के उपन्यास लिखे।

पाठक का 'खोजी पत्रकार' सुनील

वहीं सुरेन्द्र मोहन पाठक ने अपनी 'विमल सीरीज' के माध्यम से बम्बई माफिया को हिंदी पाठकों के बीच पहुंचाया। इनके उपन्यासों में अपराध ओम प्रकाश शर्मा की कहानियों की तरह कुछ 'बुरे लोगों' की करतूत भर नहीं होता, बल्कि समाज और कानून के बड़े महंतों की मिलीभगत से चलने वाला सिस्टम होता है।

जहां उनका उपन्यास 'गवाही' पुलिस महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आधारित है. वहीं उनके किरदार भी 'अच्छे' और 'बुरे' के खांचों से बाहर के लोग हैं। कई हत्याओं का जिम्मेदार और कई राज्यों में वांछित 'विमल' उनका एक ऐसा किरदार है जो अपराधी होकर भी पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए कई बार अपनी जान दांव पर लगाता है। 'टॉप का दिल्लीवाला हरामी' सुधीर उनका एक दूसरा किरदार है जो 'औरतखोर' और 'शराबखोर' होने के बावजूद इंसानियत से लबरेज है।

'खोजी पत्रकार' को लुगदी साहित्य में पहली बार नायक बनाने वाले सुरेंद्र मोहन पाठक अब तक इसी पात्र 'सुनील' के लगभग 122 उपन्यास लिख चुके हैं, जबकि उनकी कुल रचनाओं की संख्या 300 से अधिक है।

इसके अलावा 'बैंक डकैत देवराज चौहान' का किरदार रचने वाले अनिल मोहन जैसे लेखक भी बाद के दौर में खासे लोकप्रिय हुए.

साथ ही साथ अपने शरीर का इस्तेमाल करके देश के दुश्मनों को मात देने वाली सीक्रेट एजेंट 'रीमा भारती' के उपन्यास और परशुराम शर्मा के 'डायना', 'बाज़ीगर' जैसे पात्रों से सजे उपन्यास भी बाजार में आए. इनमें सेक्स प्रसंगों की भरमार होती थी।

नब्बे के दशक से पॉकेट बुक्स और लुगदी की उलटी गिनती शुरू हो चुकी थी. वैश्वीकरण के बाद केबल टीवी, स्मार्टफोन और सीडी के हमलों ने लुगदी की दुनिया उजाड़ दी, क्योंकि सस्ता मनोरंजन पाने के कई और आसन विकल्प सामने आ गए थे।



कॉमिक्स जंक्शन की रोमांचक दुनिया में आपका स्वागत है, जहां रचनात्मकता की कोई सीमा नहीं हैं। हम सिर्फ एक कॉमिक्स फैंस के समूह नहीं हैं, हम कल्पना, रोमांच और कलात्मकता के ब्रह्मांड का प्रवेश द्वार हैं। 🦋

❁ *आप हमसे सभी प्लेटफार्म (सोशल-मीडिया) पर जुड़ सकते हैं।* ❁

Facebook Page ⇛ JOIN NOW

Facebook Group ⇛ JOIN NOW

ChatWise Group ⇛ JOIN NOW

WhatsApp Group ⇛ JOIN NOW

Telegram Channel ⇛ JOIN NOW

New Comics Updates ⇛ JOIN NOW

Visit Website ➪ https://ComicsJunction.Stck.Me

नोंट : किसी भी चैंनेल/पेंज या ग्रुप मे ज्वॉइन होने के लिए JOIN NOW बटन पर क्लिंक करें।

सिंड्रेला

समीक्षा - गौरव श्रीवास्तव



सिंड्रेला नाम सुनते ही हमारा मन उन परी कथाओं की ओर आकर्षित होता है जो सदियों से बच्चों के साथ साथ बड़ों को भी,अपने कल्पनालोक में गोते लगवाती चली आ रही है, सिंड्रेला की कहानी उन्ही परी कथाओं में से एक है। कहानी सीधी-साधी है मगर यह हर उस लड़की का ख्वाब है जो पुराने जमाने से लेकर आज के समय तक सिंड्रेला जैसी बनना चाहती है। पूरी कहानी मैं आपको अंत में बताऊंगा मैं आपको . परिदृश्य की ओर ले चलता हूं जहां से सिंड्रेला की कहानी की मूल जड़ है ।

सिंड्रेला की कहानी के कई संस्करण आ चुके हैं इन में से प्राचीनतम संस्करण कौन सा है यह कह पाना मुश्किल है मगर इतिहासकारों के अनुसार ग्रीक इतिहासकार स्ट्रेबो (जियोग्राफीका पुस्तक 17,1.33) ने ईसा पूर्व पहली शताब्दी में ग्रीको-मिस्र लड़की, रोडोपीस "रोज़ी आइज़" की कहानी का उल्लेख किया था, जो प्राचीन मिस्र स्थित नाक्रटिस कॉलोनी में रहती थी। इसे आम तौर पर इस कहानी का प्राचीनतम संस्करण माना जाता है।

■ सिंड्रेला के अन्य संस्करण ■

इस कहानी का एक और संस्करण लगभग 860 में यूयांग से तुआन शेंग शी द्वारा मिसलेनियस मार्सेलस में दिखाई दिया. इसमें वह मेहनती और प्यारी सी लड़की एक मछली से दोस्ती करती है, जो उसकी मां का अवतार थी, जिन्हें उसकी सौतेली मां ने मौत के घाट उतार दिया था। ये क्सियन जादू से हड्डियों को बचाता है और उसे उस उत्सव के लिए सलीके से कपड़े पहन कर तैयार होने में मदद करता है। जब वापस लौटने की हड़बड़ी में वह अपने एक पैर की चप्पल खो बैठती है तो राजा उसे ढूंढ निकालता है और उसे दिल दे बैठता है।

मध्ययुगीन वन थाउजेंड एंड वन नाइट्स, जिसे अरेबियन नाइट्स के नाम से भी जाना जाता है, में इस कहानी के कई मित मिलते हैं। इसमें "द सेकेंड शेख'ज़ स्टोरी", "द एलडेस्ट लेडी'ज़ टेल" एवं "अब्दुल्ला इब्न फादिल एंड हिज़ ब्रदर्स" आदि कहानियां शामिल हैं। इन सभी कहानियों में एक छोटी बहन का दो ईर्ष्यालु बड़े भाई-बहनों द्वारा प्रताड़ित किये जाने का वर्णन है। इनमें से कुछ कहानियों में केवल बहनें हैं जबकि कुछ अन्य में भाई भी हैं। इनमें से एक कहानी "जुडर एंड हिज़ ब्रेनथ्रेन" अपने पूर्ववर्ती मितों के पारंपरिक सुखद अंत से परे कथानक को एक नया मोड़ देते हुए एक त्रासदअंत दिखाता है, जिसमें छोटे भाई को सभी बड़े भाई मिलकर ज़हर पिला कर मार डालते हैं।

सबसे प्रारम्भिक यूरोपीय कहानी "ला गट्टा सेनेरेंटोला" या "द हियर्थ कैट" है, जो 1635 में इतालवी लोककथा संग्रहकार गीयामबतिस्ता बेसिल की पुस्तक ll पेंटामेरोन में दिखती है। यह संस्करण फ्रांसीसी लेखक चार्ल्स पेरोलट एवं जर्मन ब्रदर्स ग्रिम द्वारा लिखित परवर्ती संस्करणों का आधार बना. (नोट: ब्रदर ग्रिम के संस्करण में कोई परी मां का वर्णन नहीं है, लेकिन उसकी सगी मां की आत्मा को अपने कब्र के ऊपर दो पक्षियों के माध्यम से दर्शाया गया है।)

सिंडरेला के सबसे लोकप्रिय संस्करणों में से एक 1697 में चार्ल्स पेरोल द्वारा लिखा गया था। इस कहानी की लोकप्रियता का कारण कहानी में कद्दू, परी मां और ग्लास के चप्पलों आदि बातों को जोड़ना था। एक व्यापक धारणा है कि सिंडरेला ने फ़र के जूते पहने ("पैंटौफल एन वेयर ") थे और जब कहानी का अंग्रेजी अनुवाद किया गया तो भूलवश वेयर को वेरे (कांच) समझ लिया गया और इस तरह कांच के चप्पल की अवधारणा बनी और तब से अब तक कहानी का वही रूप बरकरार है।

एक और विख्यात संस्करण 19वीं शताब्दी में ब्रदर्स जेकोब ओर विल्हेम ग्रिम द्वारा दर्ज किया गया. इस कहानी का नाम "एसचेनपुट्टेल" (अंग्रेजी अनुवाद में "सिंडरेला") है और इसमें परी मां से नहीं बल्कि उसकी मां की कब्र पर उगे एक वरदानी पेड़ से मदद मिलती है। इस संस्करण में सौतेली बहनें शहज़ादे को चकमा देने के लिए अपने पैरों के हिस्सों को काटती हैं, ताकि उनमें वह चप्पल फिट बैठ सके. शहज़ादे को दो कबूतर आगाह कर देते हैं और वह उन सौतेली बहनों की आंख निकाल लेता है, जिससे उनकी तक़दीर में ताउम्र दर-दर अंधों की तरह भीख मांगने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता. इस कहानी में शहज़ादे को दो बार धोखा दिया जाता है लेकिन वे पक्षी उसे बचा लेते हैं। इससे शहज़ादे की हैसियत कमतर हो जाती है और वह कम वीर लगता है, जिससे सिंडरेला की हैसियत एक दृढ-निश्चयी इंसान के रूप में बढ़ जाती है।

स्कॉटिश केल्टिक मिथक/कथा में गीत, डॉन और क्रिथीनेच की एक कहानी मिलती है। केल्टिक में सौतेली बहनों का समानार्थी शब्द गील और डॉन हैं और सिंडरेला क्रिथीनेच है।

सिंड्रेला के कई नाट्य रूपांतरण, गीत , पुस्तकें , ओपेरा शो,भी प्रस्तुत किए जा चुके हैं जिनका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता है वरना बहुत अधिक समय व्यतीत हो जाएगा सिंड्रेला के ऊपर कई फिल्में भी बन चुकी है। इतना कहना चाहूंगा अभी सिंड्रेला हर बच्चे खासकर लड़कियों के बचपन की वो साथी है जिसको वह अपने बाल मन में गहराई से संजोए रहती है।चलिये अब मैं सिंड्रेला की कहानी आप को संक्षेप में सुनाने का प्रयास करता हूं...... मिलते अगली किसी रोचक समीक्षा के साथ।।।

◆◆◆◆◆◆◆

【कहानी सिंडरेला की (पेरौल्ट से लिया गया)】

एक विधुर था जिसने एक घमंडी और नकचढ़ी औरत से दूसरी शादी की. उसकी दो बेटियां थी और वे भी मां की तरह ही गई-गुज़री थीं। अपनी पहली बीवी से आदमी की एक खूबसूरत युवा बेटी थी जिसकी अच्छाई और नर्म मिजाज़ का कोई मुक़ाबला न था। सौतेली मां और उसकी बेटियां पहली बेटी से जबरन घर के सारे काम करवाती थी। जब लड़की अपने काम निपटा लेती तो वह राख पर बैठती. इसी वजह से उसका नाम "सिंडरेला" पड़ा. बेचारी लड़की बड़े धैर्य से यह सब सहती लेकिन अपने पिता से यह सब कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाती. वह पूरी तरह से अपनी बीवी के कब्ज़े में था और ऐसा करने पर वह उल्टे उसे ही डांट पिलाता.

एक दिन शहज़ादे ने उस जगह की सभी जवान लड़कियों को नृत्य के लिए आमंत्रित किया ताकि वह उनमें से अपनी पत्नी चुन सके. दोनों सौतेली बहनों को भी न्योता मिला था और उन्होंने बड़े उत्साह से अपने कपड़ो की योजना बनायी. हालांकि सिंडरेला ने उनकी मदद की और नृत्य में जाने का ख़्वाब भी देखा, लेकिन उन्होंने उसे यह कहकर ताना दिया कि एक नौकरानी हरगिज़ नृत्य में नहीं जा सकती.

जब बहनें नृत्य के लिए चली गयीं तो सिंडरेला निराश होकर रोने लगी. उसकी परी माँ जादूई ढंग से प्रकट हुई और उसने नृत्य में शामिल होने में सिंडरेला की मदद करने की कसम खायी. उसने कद्दू को एक गाड़ी में, चूहों को घोडो में, एक चूहे को कोचवान में में तब्दील कर दिया. उन्होंने सिंडरेला के फटे-पुराने कपड़ों को खूबसूरत गाउन में बदल दिया और उसे कांच के चप्पलों की एक नाज़ुक जोड़ी पहनाकर पूरी तरह से तैयार कर दिया. धर्ममाता ने उसे नृत्य का भरपूर आनंद उठाने के लिए कहा लेकिन यह हिदायत दी कि वह मध्य रात्रि से पहले वापस लौट आये क्योंकि उसके बाद जादू का असर ख़त्म हो जायेगा.

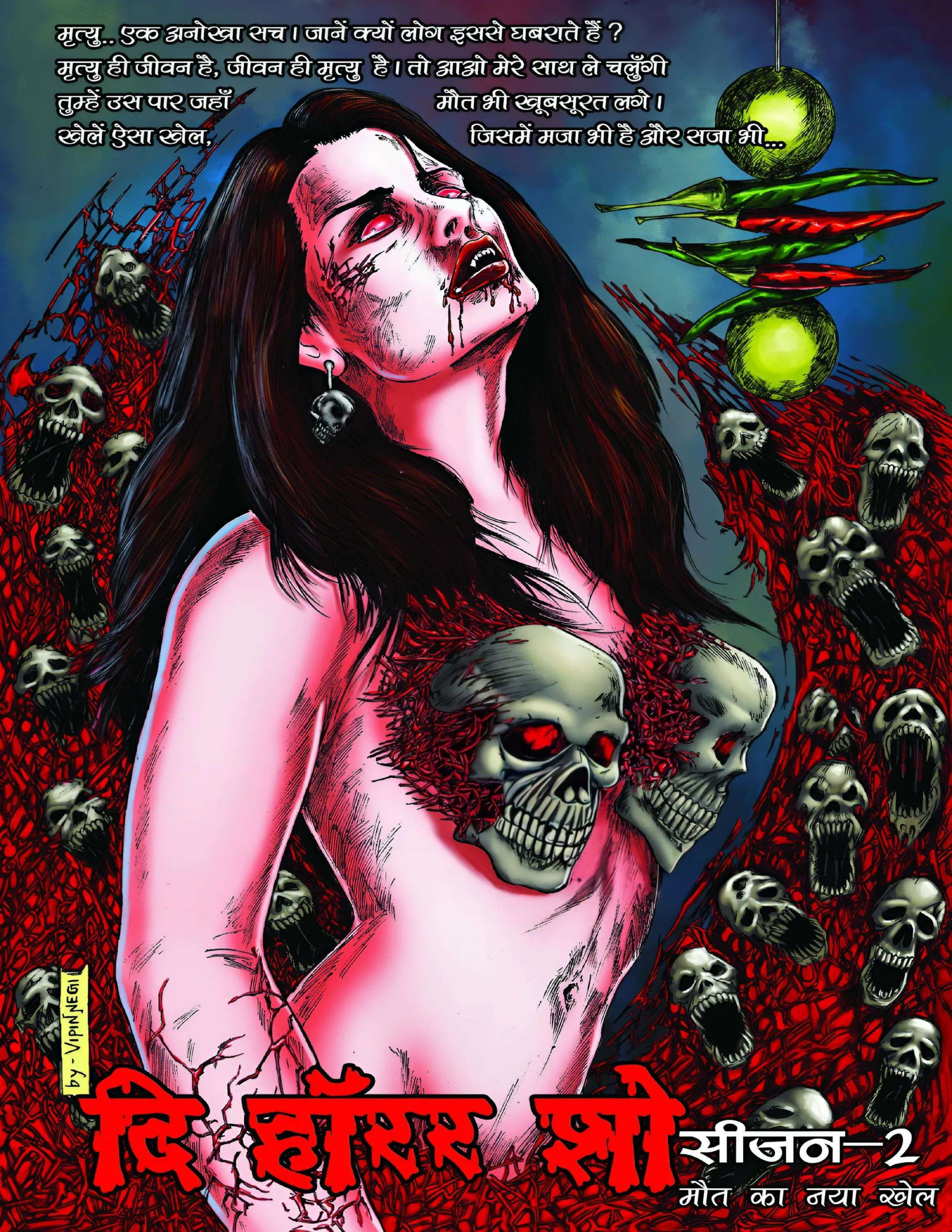
जश्न में हर कोई सिंडरेला से मन्त्र-मुग्ध हो गया, ख़ास तौर पर शहज़ादा जिसने उसका साथ एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा. अपनी बहनों से आंख बचाकर सिंडरेला मध्य रात्रि से पहले घर लौट आई. घर आकर सिंडरेला ने बड़े अदब से अपनी धर्ममाता का शुक्रिया अदा किया। उसके बाद उसने अपनी सौतेली बहनों की अगवानी की जो बड़े जोश से केवल जश्न में मिली खूबसूरत लड़की की ही बात किये जा रही थीं।

जब अगली शाम एक और जश्न आयोजित किया गया, तो सिंडरेला ने धर्ममाता की मदद से फिर उसमें हिस्सा लिया। इस बार शहज़ादा पहले से भी अधिक मोहित हो गया. बहरहाल इस बार उसे वक़्त का ख्याल नहीं रहा और वह आधी रात के आखिरी घंटे की आवाज़ पर ही निकल पायी. इस अफरा-तफरी में वह महल की सीढ़ियों पर अपनी कांच के चप्पल की जोड़ी में से एक छोड़ आई. शहज़ादे ने उसका पीछा किया लेकिन महल के बाहर तैनात सुरक्षा कर्मियों ने सिर्फ एक साधारण सी गंवार लड़की को जाते देखा था। शहज़ादे ने चप्पल को अपने पास रखा और उसकी मालकिन को ढूंढ निकालने और उससे शादी करने की कसम खाई. इस बीच सिंडरेला ने दूसरी चप्पल को अपने पास सहेज कर रखा जो जादू का असर ख़त्म होने पर भी गायब नहीं हुआ था।

शहज़ादे ने अपने साम्राज्य की हर लड़की के पैरों में उस चप्पल को आज़माया. जब शहज़ादा सिंडरेला के घर पहुंचा तो सौतेली बहनों ने व्यर्थ कोशिश की. जब सिंडरेला ने कोशिश करने की इच्छा जताई तो सौतेली बहनों ने उसे ताने मारे. ज़ाहिर तौर पर चप्पल उसके पैरों में ठीक बैठी और सिंडरेला ने सही माप के लिए दूसरी जोड़ी भी दिखा दी. सौतेली बहनों ने माफी की भीख मांगी और सिंडरेला ने उन्हें उनकी क्रूरता के लिए माफ़ कर दिया!

इस कहानी की सीख यह है कि सौंदर्य एक खज़ाना है लेकिन कृपालुता अनमोल है। इसके बिना कुछ भी संभव नहीं, इसके साथ हर बाधा पार की जा सकती है।


कॉमिक्स जंक्शन


मृत्यु.. एक अनोखा सच। जानें क्यों लोग इससे घबराते हैं ?
मृत्यु ही जीवन है, जीवन ही मृत्यु है। तो आओ मेरे साथ ले चलूँगी
तुम्हें उस पार जहाँ मौत भी खूबसूरत लगे।
खेलें ऐसा खेल, जिसमें मजा भी है और सजा भी...
by- VIPINNEGI
दि हॉरर शो
सीजन–2
मौत का नया खेल

वो एक साँझ

लेखिका - रुपाली नागर "संझा"

दिन भर की आपाधापी के बाद उस सुबह ने एक अलमस्त सी अंगड़ाई ली ही थी। पता नही क्या कौंधा था उसके मन में, कि चेहरा लाल हो उठा था उसका,आँखों में स्लेटीपन की झाँई थोड़ी और गहरी हो आई थी। अलसाई सी वो; सारी फ़िक्रों को ताक पर रखकर अपनी धुन में हाथ फैलाए कई रंगों की बटिक डिज़ाइन वाली अपनी चुनरी आसमान में पसारती चली गई थी ! उफ्फ़ उसकी इस बेख़बर सी अदा पर मर मिटी थी मैं। कितनी सुंदर सुरमई साँझ थी वो। रात की अंधेरी ख़ोह कुछ ही देर में उसे लील जाएगी इससे एकदम बेपरवाह।

क्या वाक़ई वो साँझ कुछ अलग, कुछ ख़ास थी या मेरा अपना मन मलंग हो रहा था ये उसका ख़ुमार था। वो मुझमें उतरती जा रही थी या मैं उसमें डूबती जा रही थी, इतना होश कहाँ रह गया था उस वक्त! हम तीनों छत पर थे.. मैं, मेरा प्यार और हममें नशा भरती वो शाम!

वो हमें घेरती जा रही थी या हम उसमें घिरते जा रहे थे, इससे अनजान हम साँझ के धुंधलके में एक-दूसरे में गुम हो जाना चाहते थे ! पल-पल रंग बदलती वो साँझ,तनी हुई थी चंदोवे की तरह,अपनी श्यामल ओढ़नी को हमारे ऊपर तान कर! वो हमारे प्यार को देखकर बावली हो रही थी या रश्क खाकर हमारे इर्द-गिर्द मंडरा रही थी, ये मैं तब जान नही पाई, इतनी परवाह भी कहाँ की! उस वक्त अपने प्यार में जो खो गई थी मैं!

उसके हाथों में मेरा हाथ था, मैं छत की मुंडेर से सट गई थी! कई लम्हें हमनें ऐसे ही गुज़र जाने दिये ख़ामोशी से, इतनी ख़ामोशी से कि बस हमारी धड़कनों की रिदम ही बची रह गई!

“क्या हम हमेशा ऐसे ही नही रह सकते”
कहते हुए उसने एक हाथ से मेरी पीठ को घेरा, दूसरे हाथ से मेरे झुके हुए चेहरे को ऊपर उठाया और पंख से भी हल्का चुंबन मेरे माथे पर रखा!
उस पंख के सहारे मैं तभी की तभी उड़ने को हो आई पर वो मुझे मानो दूर जाने से रोकने के लिये छटपटाने लगा, इस कशमकश में उसने मुझे अपने में जकड़ लिया लेकिन अगले ही पल मेरी आँखों में छलछला आए मोतियों को देखकर हतप्रभ रह गया! झट से उसकी अंगुलियाँ उन मोतियों को अपनी हथेलियों में समेटने में लीन हो गई !
“क्या हुआ”...उसके पूछते ही मैं उसके आगोश में थी ! एक बार फिर सब कुछ निस्पंदित था ! सारी कहा-सुनी हमारी चुप्पियों की हुई! ना मालूम कितना वक्त ऐसा बीता !

वक्त था, बीतना ही था, बीतता रहा... हमारे अंदर साँसें आती जाती, बाहर हवा सरसराती रही, सब कुछ चलता रहा होगा बस हम ठहर से गये थे !
साँझ का भी दिल भर आया था शायद, उसके भी चेहरे का रंग बदल गया, लालिमा; कलिमा में बदलने लगी, उसमें टके सितारे भी अब झलकने लगे!
हम तीनों अब भी साथ ही थे अपने-अपने हिस्से के लबालब भरे उद्गारों के साथ जो छलक ही नही पा रहे थे!

साँझ को, साथ ही मुझे भी, अब जाने की याद आई! रात जो अपनी लंबी बाहों को फैलाये बढ़ी चली आ रही थी! उससे डर सा लगता था !!

मैंने उसकी बाँहों के घेरे से धीरे से अलग होते हुए कहा "अब चलना होगा"
उसने एक नज़र भर मुझे देखा ! देखते-देखते उसे ना जाने क्या सूझा,उसने अपने होंठ मेरे होंठों पर कुछ पल रखें, पल से भी कम समय के लिए !
मुझे तो ऐसा ही लगा!
"ठीक है" आओ चलते हैं, उसने फिर एक बाँह से मुझे समेटते हुए कहा!
सब कुछ इतना जल्दी बीता कि मैं कुछ समझ ही नहीं पाई!
हम छत से नीचे चले आए! वहाँ से नीचे और नीचे चलते चले गये! आते-आते उस साँझ की ओढ़नी वहीं छत की मुंडेर पर चुपके से टाँग आई थी मैं!

"अब चलना होगा" मेरा कहा आख़िरी वाक्य रहा उससे !
उसके बाद उसका कहा "ठीक है" ही चलता रहा लगातार !
उसने मेरी बात मान ली और मैंने उसकी !
हमारे लिए यही प्यार हो गया!
वो "चलता चला गया" शायद मेरे प्यार के दरिया में गहरा डूब गया था, और मैं "ठीक है" की टेक लेकर वहीं किनारे टिकी रह गई!

उस दिन के बाद मेरे हिस्से साँझ नहीं आई कभी! अब हर दिन सुबह होती है दोपहर तक चढ़ती है लेकिन फिर साँझ नहीं ढलती सीधे रात गहरा जाती है !

उस साँझ वहीं मेरी ज़िंदगी की शाम हो गई!
दिन तो जैसे-तैसे कट जाता है,पर उसके बाद मेरी घबराहट बढ़ने लगती है! पता नहीं आँखें नम सी हो जाती है!शामें हर दिन नये वेश में रिझाने की पुरजोर कोशिश करती है पर मैं नज़रें चुराने लगी हूँ उससे, उसका सामना करने से कतराने लगी हूँ! मुँह ढाँप कर सोने का नाटक करते-करते ये सोचती रहती हूँ कि वो शाम जो मैं मुंडेर पर रख आई थी उसका भी हाल मेरी तरह नहीं हो रहा होगा! पड़े-पड़े कितनी फीकी पड़ गई होगी, सारी रंगत नदारद हो गई होगी! जैसे मैं टूटी वैसे वो भी तार-तार हो गई होगी फड़फ़ड़ाते हुए !

अब डरती हूँ दिन के उस सबसे ख़ूबसूरत पहर से जिसे मैं सबसे ज्यादा जीती थी! उसका ख़्याल भी मुझमें थिरकन भरने के लिए काफ़ी हुआ करता था! दुआ करती हूँ कि अब साँझ से कभी सामना ना करना पड़े! नही कर पाऊँगी मैं उसका सामना अब !!

बाक़ी आपकी कल्पनाओं के लिए...
अभी यहीं छोड़ती हूँ मैं.....

भोकाल का जीवन परिचय

नाम : भोकाल (आलोप)
उपनाम : महाबली, तंत्र और तलवार का धनी
प्रकाशन - राज कॉमिक्स
समीक्षक - जोगिंदर शर्मा

संक्षिप्त विवरण : परीलोक का राजकुमार जो अपनी माँ की तलाश में पृथ्वी पर आया और पृथ्वी से दुष्टों और पापियों का नाश करने की प्रतिज्ञा ली।

कार्यक्षेत्र : विकासनगर ।

व्यवसाय : विकासनगर की सेवा और सुरक्षा ।

शक्तियां : चमत्कारी तलवार और उड़ने वाली ढाल का मालिक, ज्वालाशक्ति, प्रहारा, युद्धकला में निपुण ।

कमजोरी : विकासनगर और उसके निवासियों की सुरक्षा का प्रण

मुख्य साथी : तुरीन, शूतान, अतिक्रूर, महारानी मोहिनी, राजकुमार अंकित मोहन, रूपसी, सलोनी इत्यादि।

मुख्य दुश्मन : फूचांग, कुबड़ा शैतान, दुर्गमा, काल कुंडली, गुणीक, माया इत्यादि।

भोकाल की कहानी में आये अब तक के महत्वपूर्ण पड़ाव

वैसे तो भोकाल की प्रत्येक कॉमिक्स में उसके जीवन से जुड़े छोटे-बड़े पड़ाव हैं परन्तु फिर भी यहाँ कोशिश की गयी है कि जो घटनाएँ या कॉमिक्स भोकाल की कहानी में अत्यंत महत्वपूर्ण है उनको ही बताया जाये :-

1. फुचांग द्वारा विकासनगर में खौफनाक खेलों का आयोजन (खौफनाक खेल) : यहाँ से भोकाल की कहानी का प्रारम्भ होती है। जब महाबली फुचांग विकासनगर में एक "खौफनाक खेल" का आयोजन करता है और जिसमे भाग लेने के लिए भोकाल, शूतान, अतिक्रूर और तुरीन शिरकत करते हैं।

2. भोकाल का परिचय (भोकाल) : यहाँ पता चलता है कि खौफनाक खेल जीतकर, तिलिस्मी ओलम्पाक तोड़ने के लिए निकला भोकाल आखिर है कौन, परीलोक का एक परा, परीलोक से पृथ्वी पर क्यों आया है?

3. शूतान का परिचय (शूतान) : इस कॉमिक्स में खौफनाक खेल जीतने वाले दूसरे प्रतियोगी और भोकाल के मित्र शूतान का भूतकाल बताया गया है कि वो आखिर तिलिस्मी ओलम्पाक में क्या करने आया है?

4. अतिक्रूर का परिचय (अतिक्रूर) : इसमें खौफनाक खेल के तीसरे विजेता अतिक्रूर की कहानी और तिलिस्मी ओलम्पाक में आने का कारण बताया गया है।

5. भोकाल का तिलिस्मी ओलम्पाक तोडना और तुरीन का वास्तविक परिचय (तिलिस्म टूट गया) : काफी जद्दोजहद के बाद भोकाल, शूतान, अतिक्रूर और तुरीन मिलकर तिलिस्मी ओलम्पाक तोड़ते हैं और तब तुरीन की वास्तविकता और फुचांग के षड्यंत्र का पता चलता है।

6. भोकाल की माँ की मृत्यु और भोकाल का विकासनगर की रक्षा का प्रण लेना (भोकाल और फुचांग) : भोकाल द्वारा फुचांग का अंत हुआ परन्तु साथ ही भोकाल के पृथ्वी पर आने का कारण उसकी माँ की भी मृत्यु हो गयी जिस वजह से भोकाल ने विकास नगर से समस्त दुष्टों का अंत करने का प्रण किया।

7. पीकू पकोड़िया का आगमन और अतिक्रूर की शादी: वैसे तो ये घटना अतिक्रूर के जीवन की है परन्तु अतिक्रूर, भोकाल सीरीज का अहम किरदार है अतः उसके जीवन की घटना भी भोकाल से जुडी हुयी है।"विकांडा" कॉमिक्स में पीकू पकोड़िया का आगमन हुआ और फिर "सबसे बड़ा हत्यारा"और "पीकू पकोड़िया" में उसकी और अतिक्रूर की शादी हुयी और पीकू का रहस्य खुला।

8. तिल्ली का आगमन/भोकाल एवं तुरीन का प्रेम उजागर होना (तुरीन सीरीज) : भोकाल और शूतान का तुरीन के ग्रह ओसाक ग्रह जाना हुआ जहाँ तुरीन घायल हो गयी और उसकी जान बचाने के लिए भोकाल को जहरघाटी जाना पड़ा इसमें उसकी मदद की मंत्रों के ज्ञाता तिल्ली ने, सारे घटनाक्रम के बाद जब तुरीन की माँ ने तुरीन और तिल्ली की शादी की घोषणा की तब भोकाल ने इसका विरोध कर तुरीन के प्रति अपने प्रेम का इकरार किया और तुरीन ने भी भोकाल के प्रेम को स्वीकार कर सदा के लिए ओसाक ग्रह छोड़ पृथ्वी पर आ गयी।

9. वेणु का आगमन और शूतान की शादी : अतिक्रूर और भोकाल के बाद इनकी मित्र मंडली के तीसरे मित्र शूतान ने भी अपनी जीवन संगिनी चुन ली जो थी एक बच्चे चुराने वाली वेणु वृंदावनिया।

10. भोकाल की तलवार खोना : हालाँकि ये भोकाल के जीवन की कोई बड़ी घटना नहीं है परन्तु ये भोकाल का पहला विशेषांक था और इसमें पहली बार भोकाल को बिना अपनी तलवार के दुश्मनो से टक्कर लेनी थी।

11. भोकाल की परीलोक में वापसी (चमत्कारी भोकाल सीरीज) : परीलोक से पृथ्वी पर आने के बाद भोकाल का फिर से परीलोक में आना हुआ, जहाँ उसे उजड़ चुके परीलोक को फिर से बसाना था, इसी सीरीज में भोकाल को अपने असली रूप यानि एक पंखो के साथ एक परे के रूप में लाया गया।

12. भोकाल की पृथ्वी पर वापसी और भोकाल को ज्वाला शक्ति प्राप्त होना (ज्वाला शक्ति) : परीलोक को पुनः बसाकर भोकाल और तुरीन वापस पृथ्वी पर आये साथ ही भोकाल को एक और नयी शक्ति की प्राप्ति हुयी जो आगे उसके बहुत काम आने वाली थी यानि "ज्वाला शक्ति"

13. हिमराज का आगमन (पराक्रमी) : भोकाल की कहानी का एक एहम विलन हिमराज जो आगे जाकर तुरीन की मृत्यु का कारण बना इसी कॉमिक्स से आया था जिसकी शुरू से ही तुरीन पर बुरी नज़र थी, इसी कॉमिक्स में तुरीन की शक्ति उसका मुकुट "प्रहारा" खो गया।

14. भोकाल की दुश्मन माया का आगमन (मायाजाल सीरीज) : इस सीरीज में भोकाल की एक अहम दुश्मन माया का आगमन हुआ आगे जाकर जिसके मायाजाल में फंसकर भोकाल के जीवन में उथल-पुथल मच गयी। इसी सीरीज की कॉमिक्स "चीता नगरी" में शूतान का सामना चीतानगरी के चीता मानवो से हुआ जिनके कारण आगे जाकर शूतान की मौत हुयी। चीता नगरी में ही शूतान को लड़ाकी मिली जो उसकी दूसरी पत्नी बनी।

15. भोकाल के जीवन में सलोनी और रूपसी का आगमन (यह षड्यंत्र है) : भोकाल के व्यक्तिगत जीवन में अभी तक केवल तुरीन थी इस कॉमिक्स में दो और युवतियों का आगमन हुआ एक विकासनगर के राजा विकास मोहन की भतीजी रूपसी जो भोकाल से विवाह की ख्वाहिशमंद थी वहीँ ऋषि अखिलेश की पुत्री सलोनी जो मन ही मन भोकाल को अपना पति मान चुकी थी।

16. राजा विकासमोहन की हत्या (हत्या करूँगा मैं) : पृथ्वी पर भोकाल को आसरा देने वाले विकास नगर के राजा विकासमोहन की हत्या हो गयी और राज्य की बागडोर महारानी मोहिनी के कंधो पर आ गयी।

17. भोकाल की शादी (शादी नहीं होगी) : भोकाल और तुरीन की नाटकीय अंदाज़ में शादी हुयी और कई घटनाक्रम के चलते भोकाल और रूपसी की भी अधूरे फेरों के साथ छलपूर्वक विवाह हो गया।

18. कुबड़ा शैतान का आगमन और रूपसी का भोकाल की जान बचाना (कुबड़ा शैतान) : राजा विकासमोहन की मृत्यु के बाद विकासनगर पर अधिकार ज़माने उनका बड़ा भाई और रूपसी के पिता राजा विवेकमोहन उर्फ़ कुबड़ा शैतान का आगमन हुआ। जिसने षड्यंत्र के तहत भोकाल को बंदी बना लिया। जिससे भोकाल और उसके साथियों की सहायता की, कुबड़ा शैतान के खिलाफ जाकर, खुद उसकी बेटी रूपसी ने, यहीं से भोकाल एक तरह से रूपसी का कर्ज़दार बन गया।

19. फुचांग की वापसी और सलोनी द्वारा भोकाल की सहायता (कछुआ महल) : भोकाल के प्रथम शत्रु फुचांग ने एक बार फिर वापसी की और एक षड्यंत्र के तहत भोकाल और सलोनी को एक तिलिस्म में भेज दिया जहाँ सलोनी ने भोकाल की बहुत सहायता की जिसके फलस्वरूप भोकाल, सलोनी के प्रति भी नरम दिल हुआ। इन दोनों घटनाओं के बाद अकेली पड़ चुकी सलोनी और रूपसी को न चाहते हुए भी भोकाल को अपने महल में आश्रय देना पड़ा।

20. विकासनगर पर कई शत्रुओं का आक्रमण और भोकाल का युद्धभूमि में जाना (कौन बनेगा राजा) : राजा विकासमोहन की मृत्यु के बाद आसपास के राज्यों के कई राजा विकासनगर पर कब्ज़ा करने के इरादे से युद्धभूमि पर आ डटे जिनसे निबटने के लिए भोकाल को अपनी नववधू तुरीन को महल में छोड़ युद्धभूमि पर जाना पड़ा।

21. शूतान का तुरीन और अपनी पत्नियों को लेकर विकासनगर छोड़कर जाना (युद्ध जीतूंगा मैं) : भोकाल युद्धभूमि में चला गया और इधर तुरीन के गर्भवती होने की खबर आई साथ ही खबर मिली सलोनी और रूपसी के भी गर्भवती होने की (जो दरअसल माया के मायाजाल के कारण था जिसके वशीभूत होकर भोकाल रूपसी और सलोनी के करीब आया) इस कारण तुरीन और रूपसी एवं सलोनी के बीच कलह इतना बढ़ गया की तुरीन को अपनी बहन मानने वाले शूतान ने तुरीन और अपनी पत्नियों सहित विकास नगर छोड़ दिया।

22. भोकाल की भोकाल शक्ति खो जाना (रेत का भोकाल) : युद्धभूमि में एक युद्ध के दौरान भोकाल की सबसे अहम शक्ति भोकाल शक्ति खो गयी जिसमें यदि वो भोकाल बनने के लिए अपने महागुरु भोकाल का नाम पुकारेगा तो रेत का बन जाता।

23. भोकाल के बच्चों का जन्म (शैतान बेटा) : रूपसी द्वारा भोकाल के पुत्र शिखर का जन्म हुआ और सलोनी ने जन्म दिया पुत्री लक्ष्या और एक पुत्र पुष्प को परन्तु सलोनी के पुत्र पुष्प का जन्म के समय ही अपहरण हो गया।

24. शूतान की मौत (मर गया शूतान) : युद्धभूमि के बीच भोकाल को खबर मिली की उसके मित्र शूतान को चीतानगरी के मानव उठा ले गए भोकाल उसे बचाने गया परन्तु बचा न सका और उसकी मृत्यु हो गयी वहीँ भोकाल को पता चला की तुरीन की भी मृत्यु हो चुकी है।

32. गुरुमाता तेजस्विनी और छदम का आगमन (छदम) : भोकाल की कहानी में आगमन हुआ गुरुमाता तेजस्विनी का जिसको चाहिए विकास नगर की राजलक्ष्मी की मूर्ती इसके लिए वो मदद लेती है रूप बदलने में माहिर भोकाल के एक और शत्रु छदम का।

33. भोकाल के पर कटना और काल कुंडली का आगमन : ऋषि योगेश्वर ने भोकाल को मारने के लिए अपने शिष्य काल कुंडली को भेजा जो लोगों के ग्रह-नक्षत्र बदल कर उनकी महादशा बदल सकता है। भोकाल की कुंडली में अपाहिज योग डालकर महरावण सीरीज में प्राप्त हुए भोकाल के पर एक बार फिर कट गए।

34. भोकाल का भविष्य काल में आना (माया का जादू) : भूतकाल के नायक भोकाल का प्रथम बार भविष्य काल में आना हुआ जहाँ आते ही उसका सामना जंगल के जल्लाद कोबी और भेड़िया से हुआ।

35. भोकाल का तुरीन की आत्मा को प्रहारा लौटा देना (प्रहारा) : एक दुष्ट शक्ति द्वारा भोकाल की प्रहारा शक्ति का गलत इस्तेमाल करना जिसके कारण भोकाल प्रहारा को उसकी असली मालकिन अर्थात तुरीन की आत्मा को वापस लौटा देता है।

36. भोकाल के बच्चों की मृत्यु (कालजंत्री सीरीज) : भोकाल के कई शत्रु मिलकर भोकाल के बच्चों को निशाना बनाते है जिसके फलस्वरूप भोकाल के पुत्र और पुत्री मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

37. भोकाल के खोये हुए बेटे का मिलना और उसकी मृत्यु (छल) : शैतान बेटा कॉमिक्स में दिखाए अनुसार जन्म के समय सलोनी के जिस पुत्र पुष्प का अपहरण हो जाता है उसका मिलना परन्तु मिलते ही कालजंत्री के षड्यंत्र द्वारा उसकी मृत्यु।

38. तुरीन के पुत्र और भोकाल का आमना-सामना (त्रिकाल) : जन्म के बाद से ही अज्ञात स्थान पर रहे तुरीन और भोकाल के पुत्र त्रिकाल का आगमन और दोनों पिता पुत्र का युद्ध।

39. तुरीन का पुनः जीवित होना (सात सवाल) : तुरीन की मृत्यु के बाद उसको पुनः जीवित करने का एक उपाय भोकाल को पता चलता है जिसके लिए भोकाल अपने शत्रु काल कुंडली के साथ, सात सवाल हल करने सात आसमान के पार जाता है और अंत में तुरीन को पुनः जीवित कर लेता है।

40. शूतान की पुनर्वापसी (राज करेगा शैतान/घरआया शूतान) : भोकाल के परीलोक पर उसके चाचा द्रोहना द्वारा कब्ज़ा जिसके फलस्वरूप भोकाल का परीलोक जाना और वहां शूतान का जीवित होना।

41. तुरीन की पुनः खोज (गुरु भोकाल/कोबी दक्षिणा) : विकासनगर में कुबड़ा शैतान ने षड्यंत्र रचा जिसके तहत एक बार फिर शूतान का तुरीन को लेकर अज्ञातवास में जाना और कुबड़ा शैतान के षड्यंत्र में रूपसी और सलोनी के शामिल होना जानकर घायल अवस्था में भोकाल का विकासनगर छोड़ देना और तुरीन की तलाश में भटकते-भटकते कोबी और गुरुराज भाटिकी के पास पहुंचना।

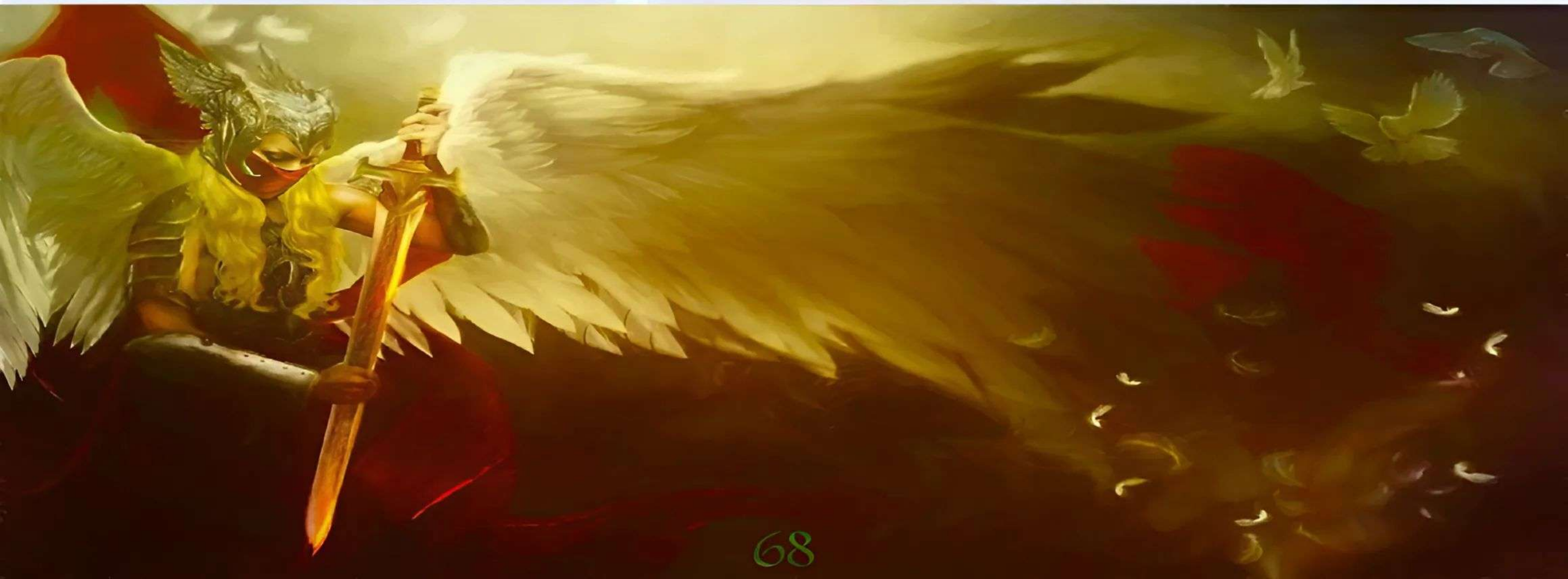
42. परीलोक, महागुरु भोकाल और भोकाल शक्ति के जन्म की कहानी (प्रथम भोकाल सीरीज) : यहाँ से भोकाल की कहानी को नयी राह मिली जिसका पहला पड़ाव था परीलोक के जन्म की कहानी और आलोप को भोकाल शक्ति देने वाले महागुरु भोकाल और भोकाल शक्ति के जन्म की कहानी।

43. विकासनगर पर सप्त काल स्याहिकाओं का आक्रमण और भोकाल की विकासनगर वापसी (धिक्कार) : भोकाल के विकासनगर छोड़ने के बाद विकासनगर में सप्त काल स्याहिकाओं का आक्रमण हुआ जिसके फलस्वरुप विकासनगर के सभी रक्षक गायब हो गए इधर भोकाल के पास से भी तुरीन और उनका दूसरा पुत्र यशश्वी गायब हो गया भोकाल उनकी तलाश में वापस विकासनगर सप्त काल स्याहिकायों से लड़ने पहुंचा।

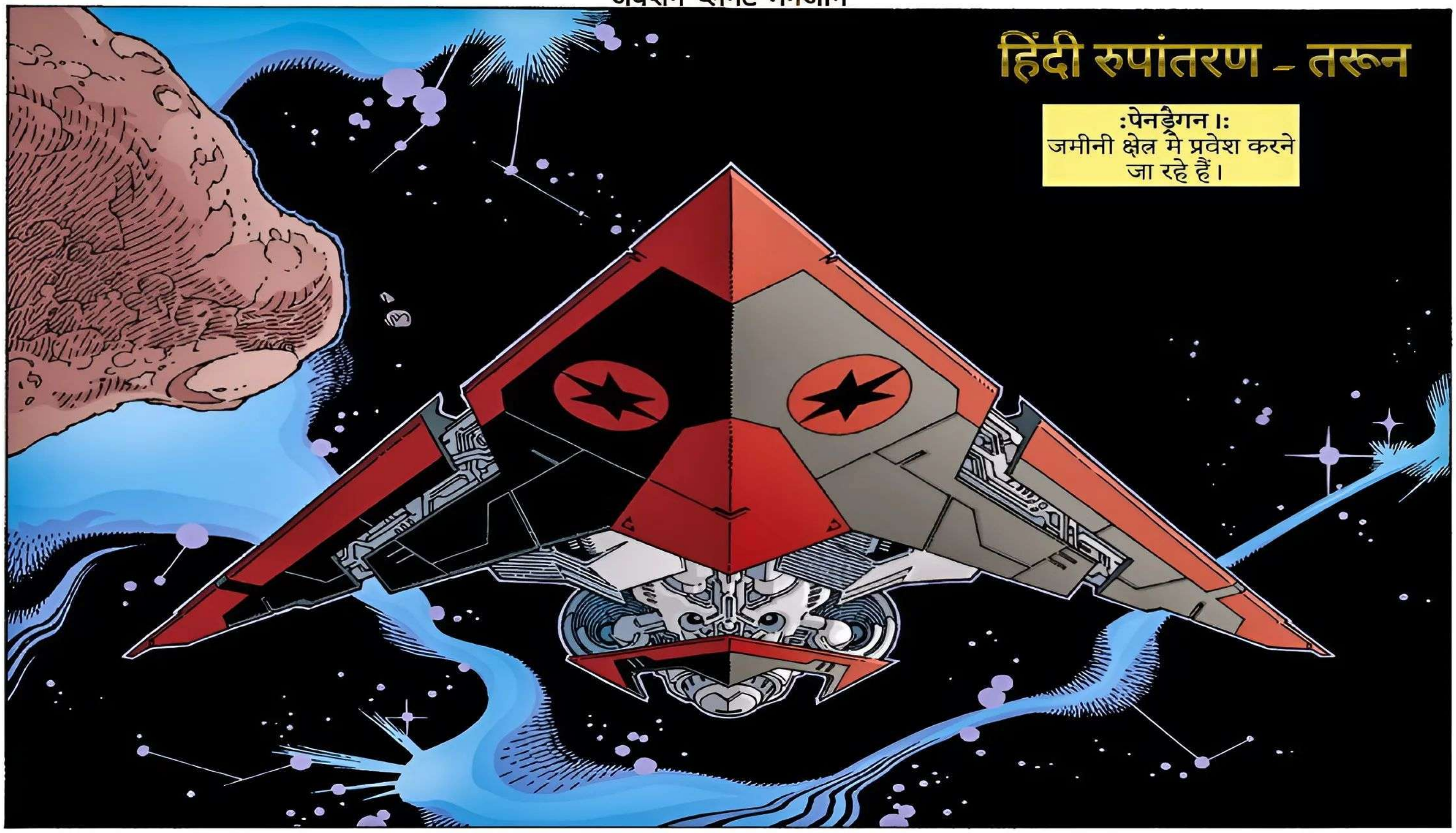
44. भोकाल को उसके असली मानव पिता और परी माता का पता चलना (अंतर्द्वंद) : भोकाल की कहानी में नया मोड़ आया जब उसे पता चला की उसके असली माता-पिता ओसिका और खजानदेव नहीं बल्कि एक मानव पिता युद्धेष्ठवीर और परी माता अवनिका है।

45. भोकाल का अपने पिता की खोज में निकलना और युगम क्षेत्र में पहुंचना (युगांधर-सर्वनायक सिरीज़) : अपने असली पिता का पता चलने के पश्चात भोकाल निकला अपने पिता की तलाश में और इसी तलाश के बीच भोकाल को बुला लिया गया युग्म क्षेत्र ।

भोकाल के जीवन से जुड़े ये कुछ रोचक तथ्य थे, जिन पर संक्षिप्त जानकारी दी गई है ।



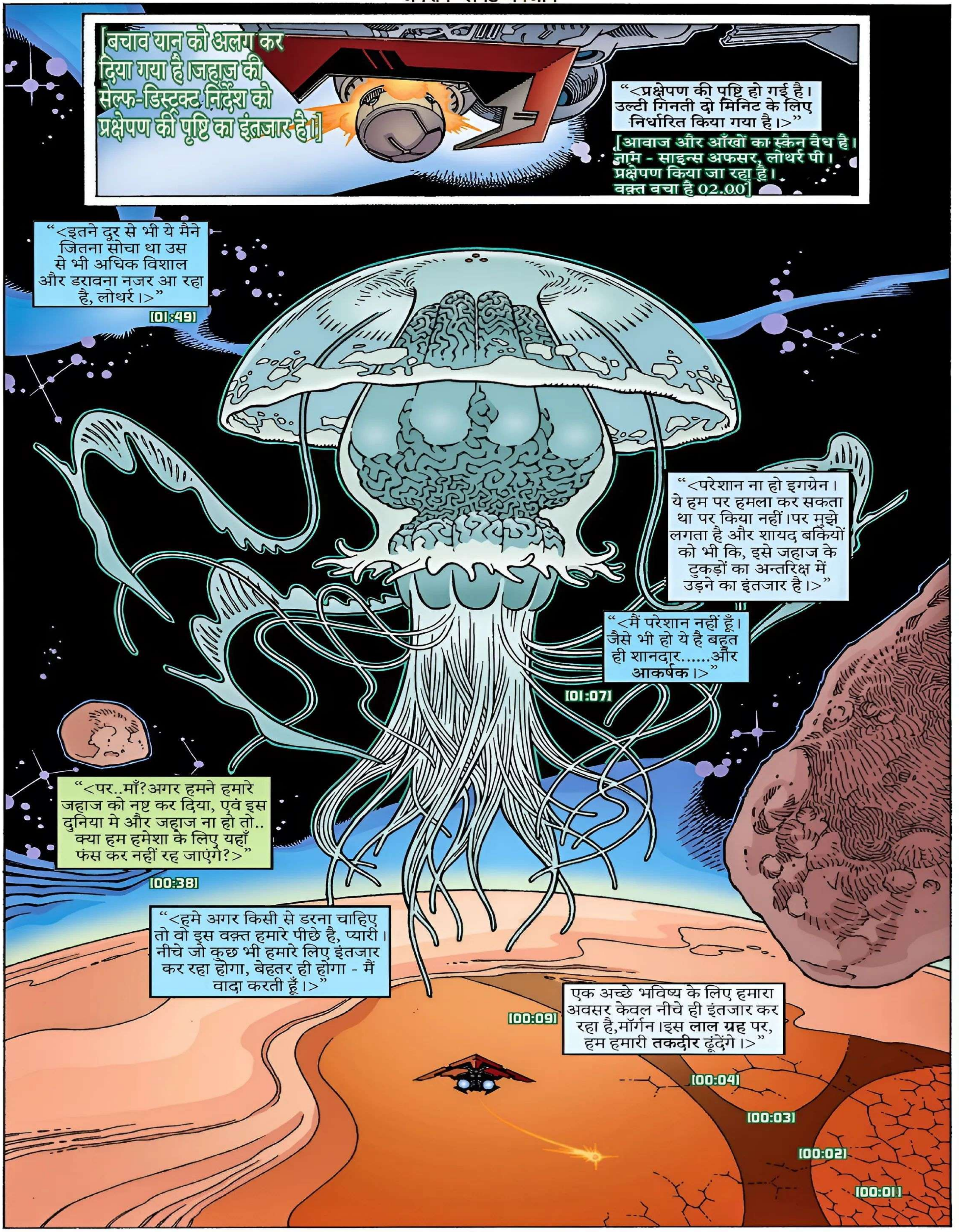

जंक्शन प्लेनेट मैगजीन
युग तलवार
https://ComicsJunction.Stck.Me
All concept illustrations that originally contained handwriting note in @idwpubishing.com
RODRIGUEZ • KINDZIERSKI

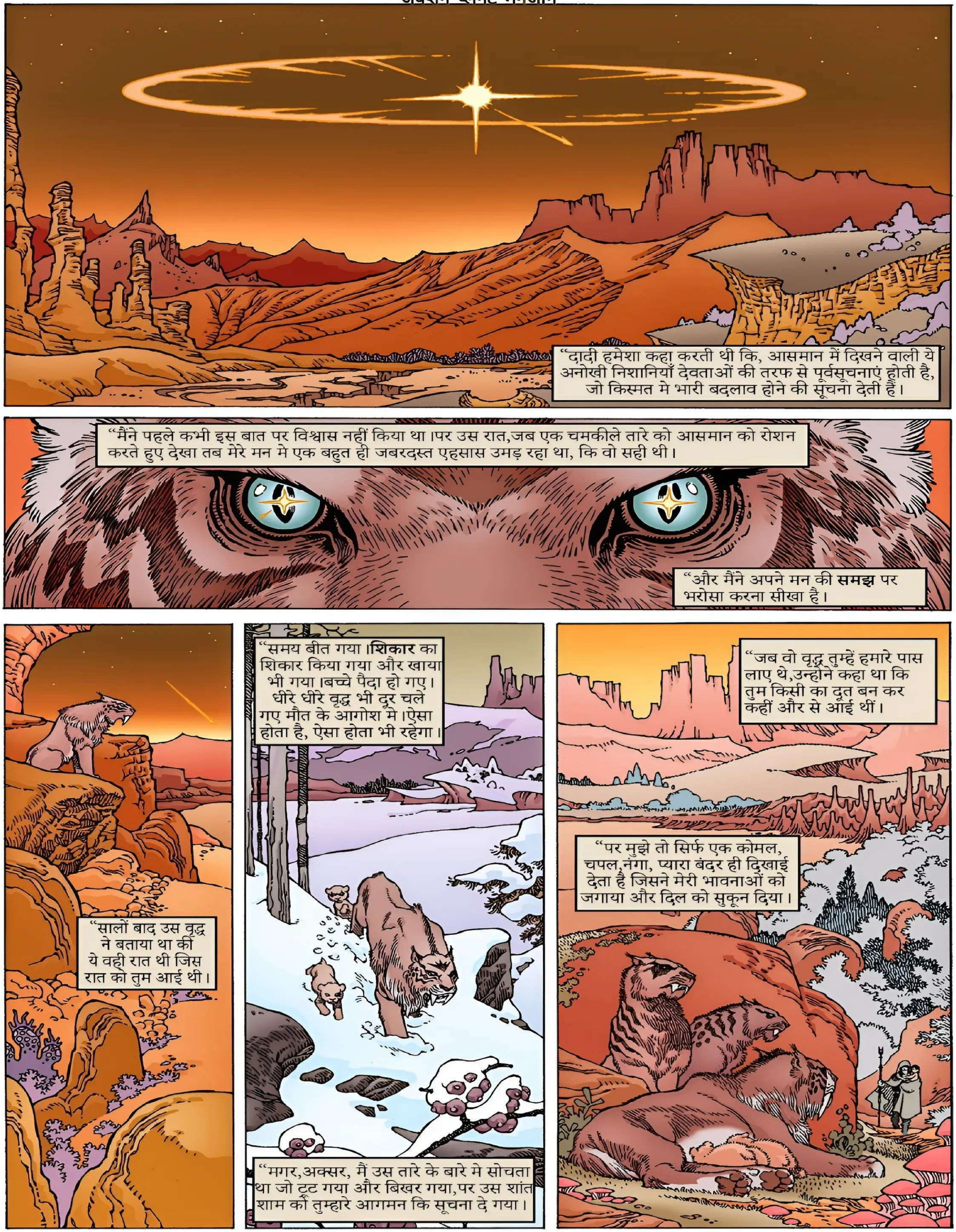

हिंदी रुपांतरण - तरून
:पेनड्रैगन।:
जमीनी क्षेत्र मे प्रवेश करने जा रहे हैं।

प्रारम्भ : परित्याग

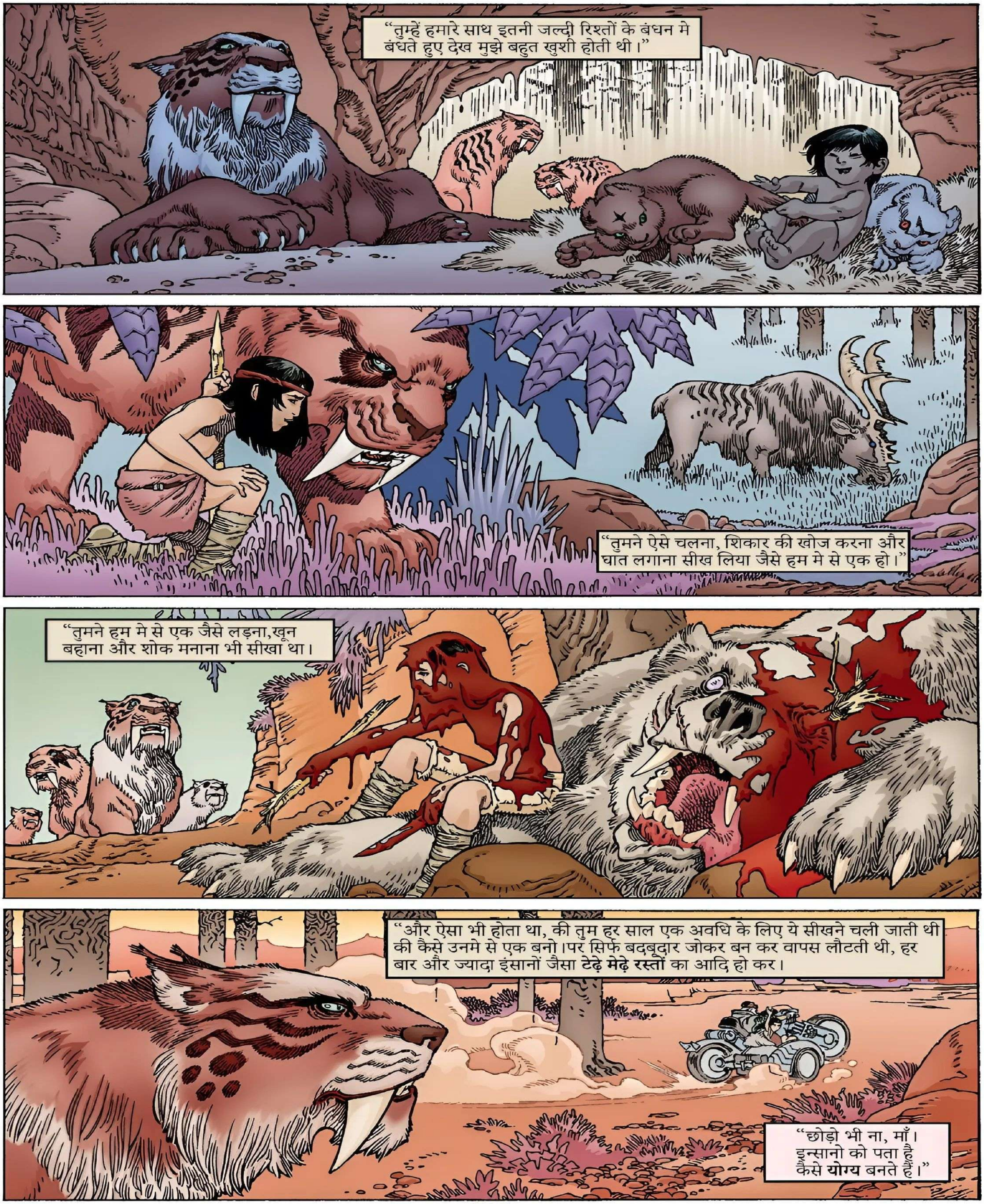

<और ये पहुँच गए।तुम लोग तैयार हो?>*
*टेम्पलारी नामक भाषा से अनुवादित

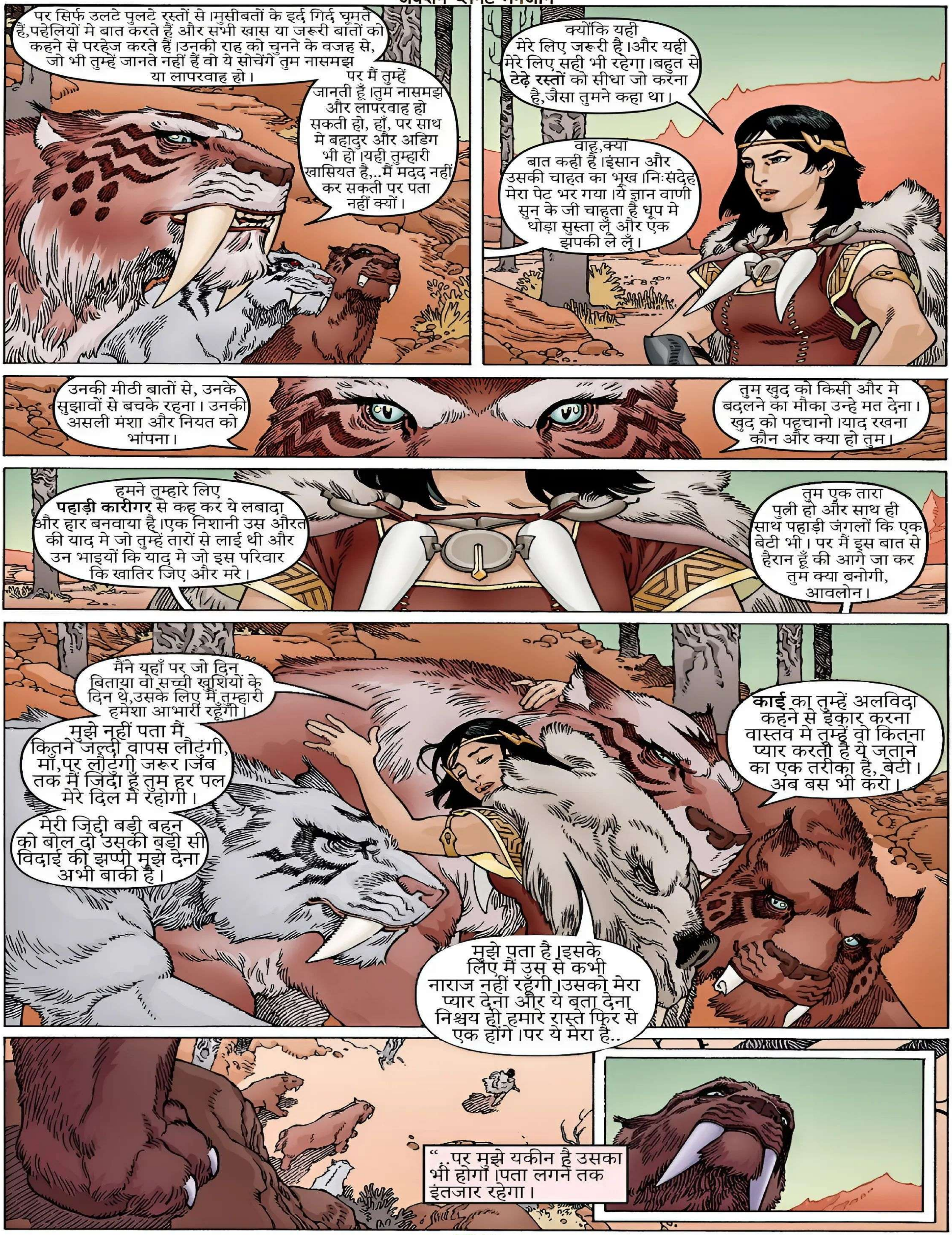

मेरी जानु,हम हैं। इस मे कोई शक नहीं।
ना हम पर करें, ना बच्चों पर, अब कोई शक की गुंजाइस नहीं।
इसके बाद, पीछे लौटा नहीं जा सकता।तुम भी तैयार हो प्यारी?
जी, सर।
तो फिर, चलो चलते हैं।


[बचाव यान को अलग कर दिया गया है।जहाज की सेल्फ-डिस्ट्रक्ट निर्देश को प्रक्षेपण की पुष्टि का इंतजार है।]
"<प्रक्षेपण की पुष्टि हो गई है। उल्टी गिनती दो मिनिट के लिए निर्धारित किया गया है।>"
[आवाज और आँखों का स्कैन वैध है। नाम - साइन्स अफसर, लोथर्र पी। प्रक्षेपण किया जा रहा है। वक्त बचा है 02.00]
"<इतने दूर से भी ये मैने जितना सोचा था उस से भी अधिक विशाल और डरावना नजर आ रहा है, लोथर्र।>"
[01:49]
"<परेशान ना हो इगग्रेन। ये हम पर हमला कर सकता था पर किया नहीं।पर मुझे लगता है और शायद बकियों को भी कि, इसे जहाज के टुकड़ों का अन्तरिक्ष में उड़ने का इंतजार है।>"
"<मैं परेशान नहीं हूँ। जैसे भी हो ये है बहुत ही शानदार......और आकर्षक।>"
[01:07]
"<पर..माँ?अगर हमने हमारे जहाज को नष्ट कर दिया, एवं इस दुनिया मे और जहाज ना हो तो.. क्या हम हमेशा के लिए यहाँ फंस कर नहीं रह जाएंगे?>"
[00:38]
"<हमे अगर किसी से डरना चाहिए तो वो इस वक्त हमारे पीछे है, प्यारी। नीचे जो कुछ भी हमारे लिए इंतजार कर रहा होगा, बेहतर ही होगा - मैं वादा करती हूँ।>"
[00:09]
एक अच्छे भविष्य के लिए हमारा अवसर केवल नीचे ही इंतजार कर रहा है,मॉर्गन।इस लाल ग्रह पर, हम हमारी तकदीर ढूंढेंगे।>"
[00:04]
[00:03]
[00:02]
[00:01]


"दादी हमेशा कहा करती थी कि, आसमान में दिखने वाली ये अनोखी निशानियाँ देवताओं की तरफ से पूर्वसूचनाएं होती है, जो किस्मत मे भारी बदलाव होने की सूचना देती हैं।
"मैंने पहले कभी इस बात पर विश्वास नहीं किया था।पर उस रात,जब एक चमकीले तारे को आसमान को रोशन करते हुए देखा तब मेरे मन मे एक बहुत ही जबरदस्त एहसास उमड़ रहा था, कि वो सही थी।
"और मैंने अपने मन की **समझ** पर भरोसा करना सीखा है।
"सालों बाद उस वृद्ध ने बताया था की ये वही रात थी जिस रात को तुम आई थी।
"समय बीत गया।**शिकार** का शिकार किया गया और खाया भी गया।बच्चे पैदा हो गए। धीरे धीरे वृद्ध भी दूर चले गए मौत के आगोश मे।ऐसा होता है, ऐसा होता भी रहेगा।
"मगर,अक्सर, मैं उस तारे के बारे मे सोचता था जो टूट गया और बिखर गया,पर उस शांत शाम को तुम्हारे आगमन कि सूचना दे गया।
"जब वो वृद्ध तुम्हें हमारे पास लाए थे,उन्होंने कहा था कि तुम किसी का दूत बन कर कहीं और से आई थीं।
"पर मुझे तो सिर्फ एक कोमल, चपल,नंगा, प्यारा बंदर ही दिखाई देता है जिसने मेरी भावनाओं को जगाया और दिल को सुकून दिया।

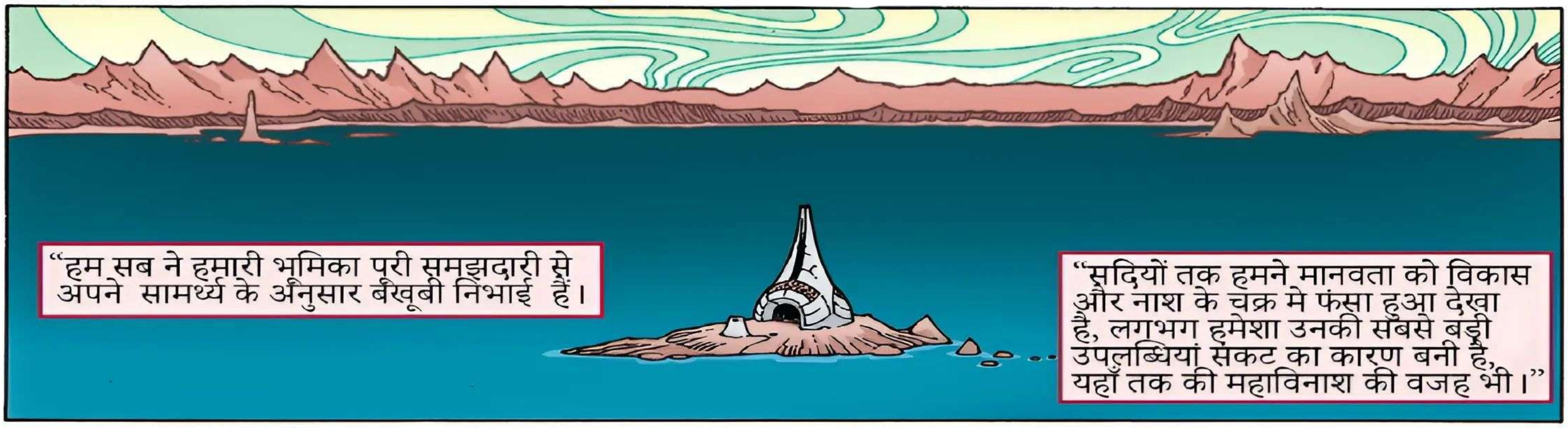
पहाड़ी जंगलो के बच्चे ।

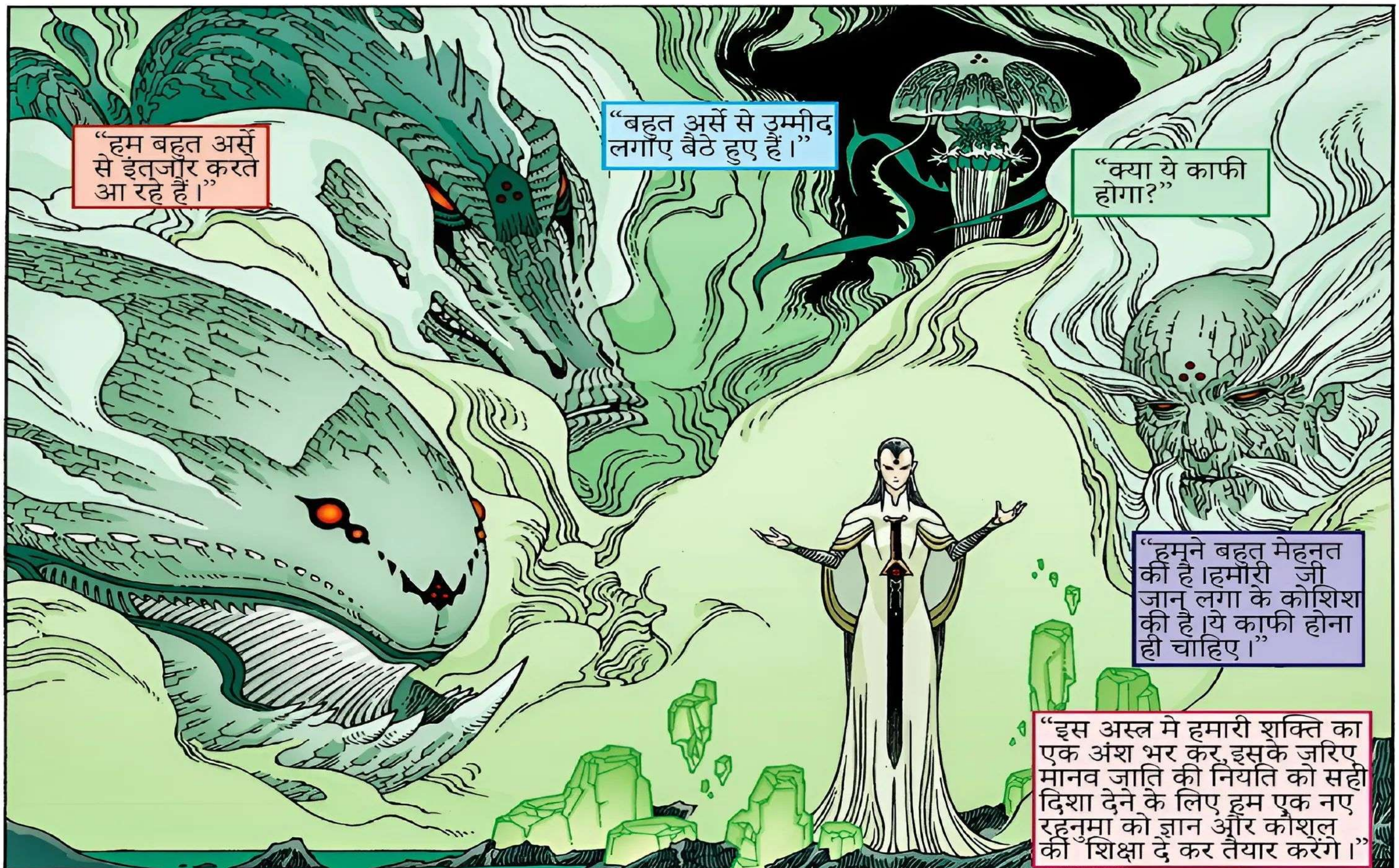

"तुम्हें हमारे साथ इतनी जल्दी रिश्तों के बंधन मे बंधते हुए देख मुझे बहुत खुशी होती थी।"
"तुमने ऐसे चलना, शिकार की खोज करना और घात लगाना सीख लिया जैसे हम मे से एक हो।"
"तुमने हम मे से एक जैसे लड़ना,खून बहाना और शोक मनाना भी सीखा था।
"और ऐसा भी होता था, की तुम हर साल एक अवधि के लिए ये सीखने चली जाती थी की कैसे उनमे से एक बनो।पर सिर्फ बदबूदार जोकर बन कर वापस लौटती थी, हर बार और ज्यादा इंसानों जैसा टेढ़े मेढ़े रस्तों का आदि हो कर।
"छोड़ो भी ना, माँ। इन्सानो को पता है कैसे योग्य बनते हैं।"

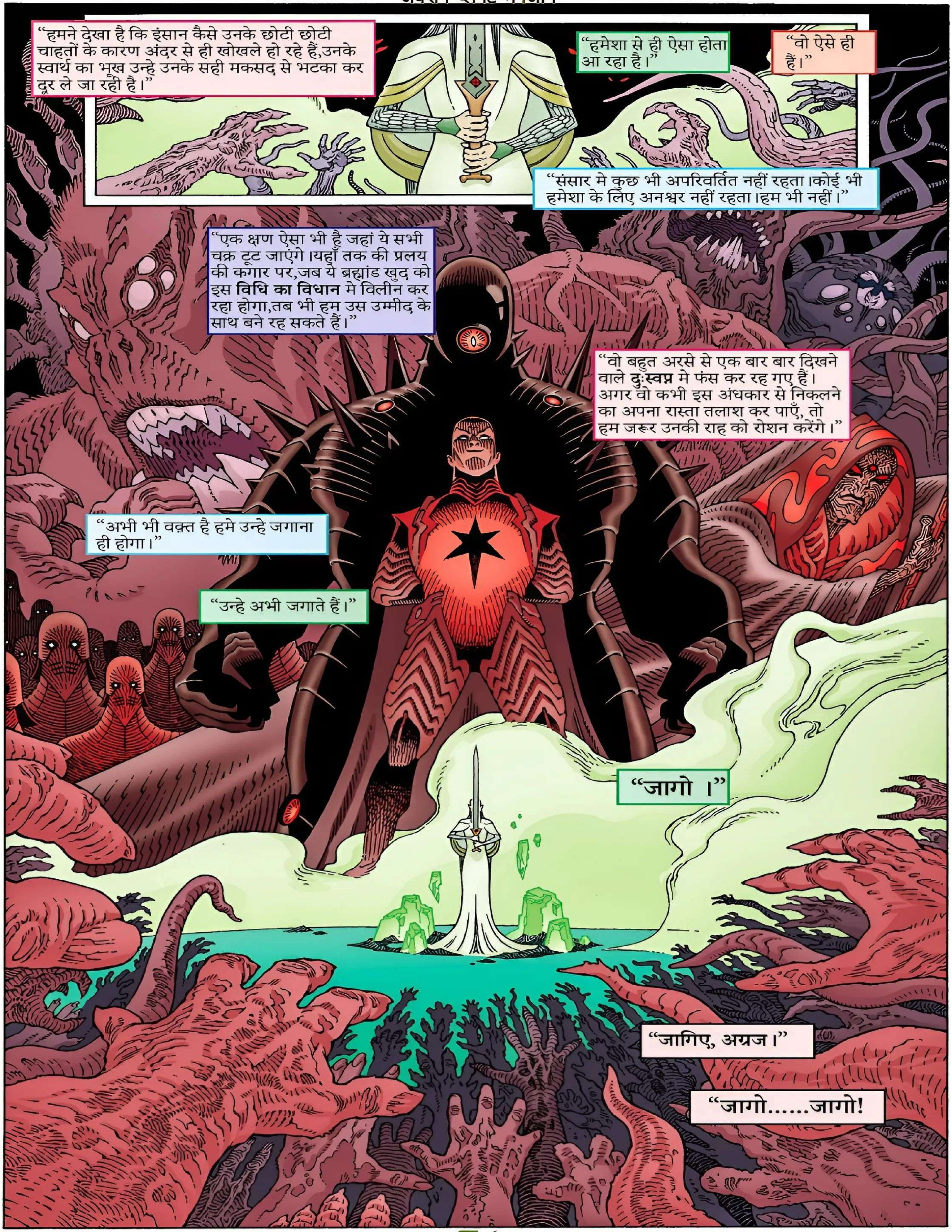

पर सिर्फ उलटे पुलटे रस्तों से ।मुसीबतों के इर्द गिर्द घूमते हैं,पहेलियों मे बात करते हैं और सभी खास या जरूरी बातों को कहने से परहेज करते हैं।उनकी राह को चुनने के वजह से, जो भी तुम्हें जानते नहीं हैं वो ये सोचेंगे तुम नासमझ या लापरवाह हो।
पर मैं तुम्हें जानती हूँ।तुम नासमझ और लापरवाह हो सकती हो, हाँ, पर साथ मे बहादुर और अडिग भी हो।यही तुम्हारी खासियत है,..मैं मदद नहीं कर सकती पर पता नहीं क्यों।
क्योंकि यही मेरे लिए जरूरी है।और यही मेरे लिए सही भी रहेगा।बहुत से **टेढ़े रस्तों** को सीधा जो करना है,जैसा तुमने कहा था।
वाह,क्या बात कही है।इंसान और उसकी चाहत का भूख।निःसंदेह मेरा पेट भर गया।ये ज्ञान वाणी सुन के जी चाहता है धूप मे थोड़ा सुस्ता लूँ और एक झपकी ले लूँ।
उनकी मीठी बातों से, उनके सुझावों से बचके रहना। उनकी असली मंशा और नियत को भांपना।
तुम खुद को किसी और मे बदलने का मौका उन्हे मत देना। खुद को पहचानो।याद रखना कौन और क्या हो तुम।
हमने तुम्हारे लिए **पहाड़ी कारीगर** से कह कर ये लबादा और हार बनवाया है।एक निशानी उस औरत की याद मे जो तुम्हें तारों से लाई थी और उन भाइयों कि याद मे जो इस परिवार कि खातिर जिए और मरे।
तुम एक तारा पुत्री हो और साथ ही साथ पहाड़ी जंगलों कि एक बेटी भी। पर मैं इस बात से हैरान हूँ की आगे जा कर तुम क्या बनोगी, आवलोन।
मैंने यहाँ पर जो दिन बिताया वो सच्ची खुशियों के दिन थे,उसके लिए मैं तुम्हारी हमेशा आभारी रहूँगी।
मुझे नहीं पता मैं कितने जल्दी वापस लौटूंगी, माँ,पर लौटूंगी जरूर।जब तक मैं जिंदा हूँ तुम हर पल मेरे दिल मे रहोगी।
मेरी जिद्दी बड़ी बहन को बोल दो उसकी बड़ी सी विदाई की झप्पी मुझे देना अभी बाकी है।
काई का तुम्हें अलविदा कहने से इंकार करना वास्तव मे तुम्हें वो कितना प्यार करती है ये जताने का एक तरीका है, बेटी। अब बस भी करो।
मुझे पता है।इसके लिए मैं उस से कभी नाराज नहीं रहूँगी।उसको मेरा प्यार देना और ये बता देना निश्चय ही हमारे रास्ते फिर से एक होंगे।पर ये मेरा है..
"..पर मुझे यकीन है उसका भी होगा।पता लगने तक इंतजार रहेगा।

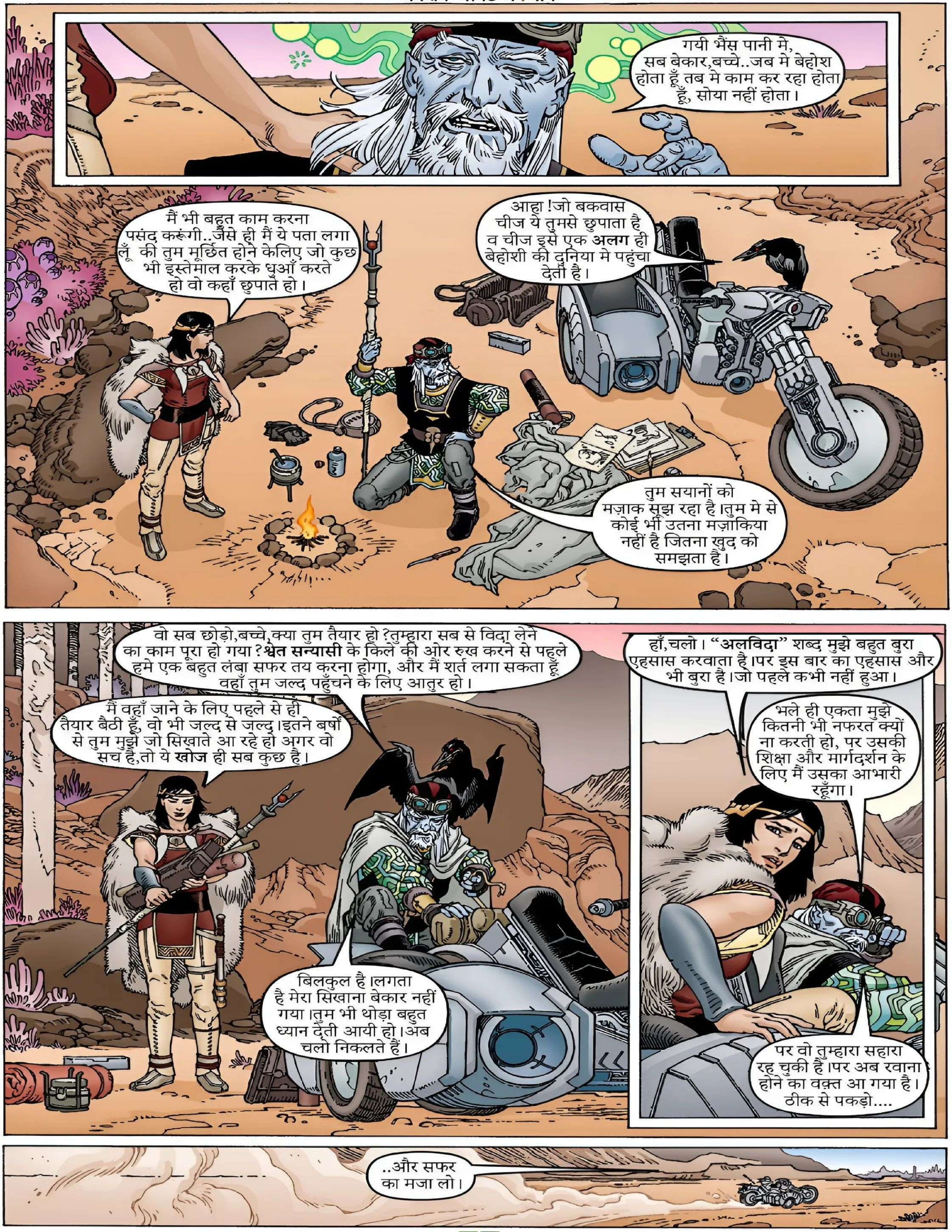

"ये पहले से ही एक लंबा सफ़र रहा हैं,पर वास्तव मे अहम सफ़र अभी शुरु हुआ है।"

वृध्द रक्षक


"हम सब ने हमारी भूमिका पूरी समझदारी से अपने सामर्थ्य के अनुसार बखूबी निभाई हैं।
"सदियों तक हमने मानवता को विकास और नाश के चक्र मे फंसा हुआ देखा है, लगभग हमेशा उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियां संकट का कारण बनी है, यहाँ तक की महाविनाश की वजह भी।"

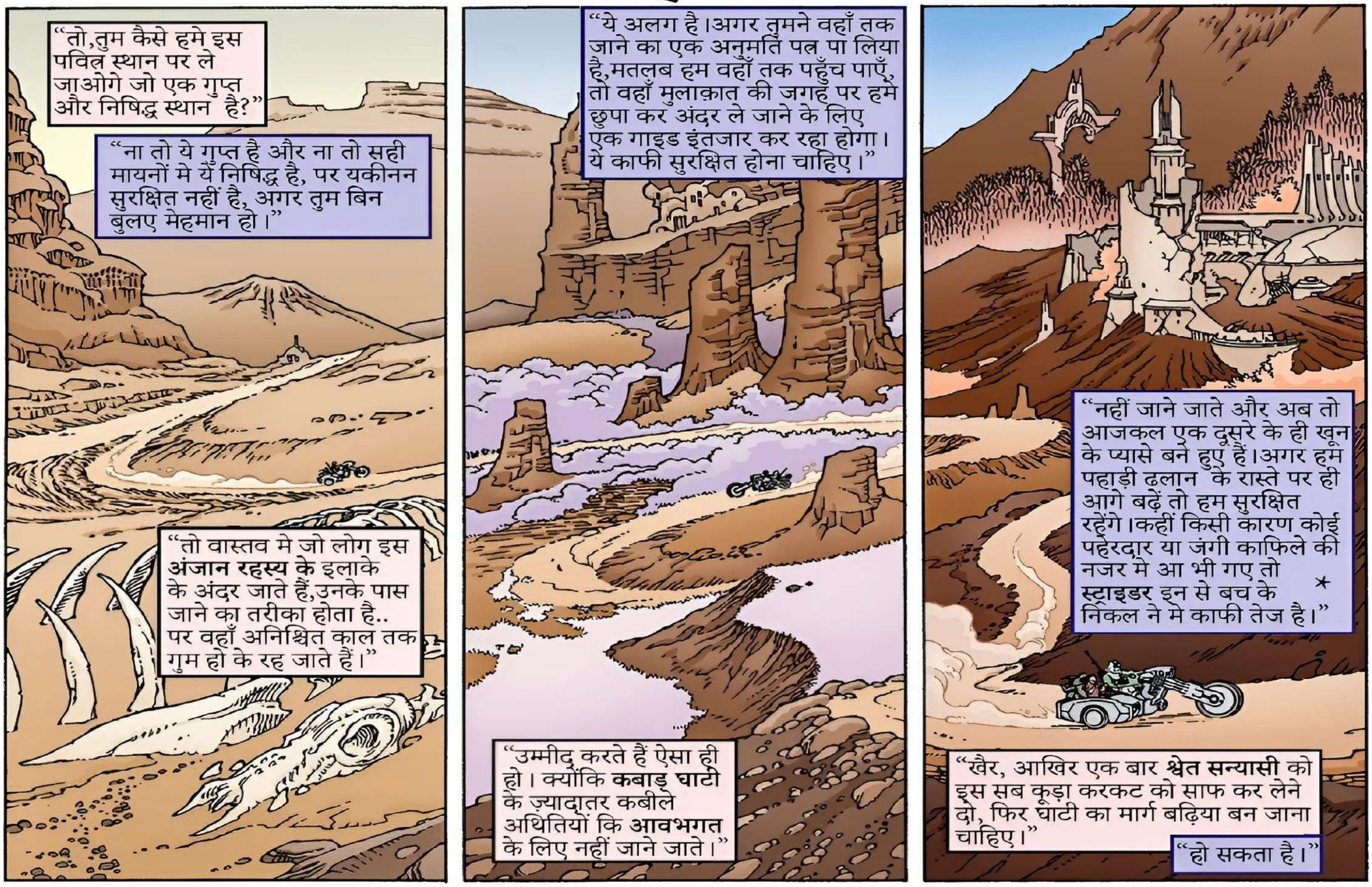

"हम बहुत अर्से से इंतजार करते आ रहे हैं।"
"बहुत अर्से से उम्मीद लगाए बैठे हुए हैं।"
"क्या ये काफी होगा?"
"हमने बहुत मेहनत की है।हमारी जी जान लगा के कोशिश की है।ये काफी होना ही चाहिए।"
"इस अस्त्र मे हमारी शक्ति का एक अंश भर कर,इसके जरिए मानव जाति की नियति को सही दिशा देने के लिए हम एक नए रहनुमा को ज्ञान और कौशल की शिक्षा दे कर तैयार करेंगे।"


"हमने देखा है कि इंसान कैसे उनके छोटी छोटी चाहतों के कारण अंदर से ही खोखले हो रहे हैं,उनके स्वार्थ का भूख उन्हे उनके सही मकसद से भटका कर दूर ले जा रही है।"
"हमेशा से ही ऐसा होता आ रहा है।"
"वो ऐसे ही हैं।"
"संसार मे कुछ भी अपरिवर्तित नहीं रहता।कोई भी हमेशा के लिए अनश्वर नहीं रहता।हम भी नहीं।"
"एक क्षण ऐसा भी है जहां ये सभी चक्र टूट जाएंगे।यहाँ तक की प्रलय की कगार पर,जब ये ब्रह्मांड खुद को इस विधि का विधान मे विलीन कर रहा होगा,तब भी हम उस उम्मीद के साथ बने रह सकते हैं।"
"वो बहुत अरसे से एक बार बार दिखने वाले दुःस्वप्न मे फंस कर रह गए हैं। अगर वो कभी इस अंधकार से निकलने का अपना रास्ता तलाश कर पाएँ, तो हम जरूर उनकी राह को रोशन करेंगे।"
"अभी भी वक़्त है हमे उन्हे जगाना ही होगा।"
"उन्हे अभी जगाते हैं।"
"जागो ।"
"जागिए, अग्रज।"
"जागो......जागो!


गयी भैंस पानी मे, सब बेकार,बच्चे..जब मे बेहोश होता हूँ तब मे काम कर रहा होता हूँ, सोया नहीं होता।
मैं भी बहुत काम करना पसंद करूंगी..जैसे ही मैं ये पता लगा लूँ की तुम मूर्छित होने केलिए जो कुछ भी इस्तेमाल करके धुआँ करते हो वो कहाँ छुपाते हो।
आहा !जो बकवास चीज ये तुमसे छुपाता है व चीज इसे एक **अलग** ही बेहोशी की दुनिया मे पहुंचा देती है।
तुम सयानों को मज़ाक सूझ रहा है।तुम मे से कोई भी उतना मज़ाकिया नहीं है जितना खुद को समझता है।
वो सब छोड़ो,बच्चे,क्या तुम तैयार हो?तुम्हारा सब से विदा लेने का काम पूरा हो गया?**श्वेत सन्यासी** के किले की ओर रुख करने से पहले हमे एक बहुत लंबा सफर तय करना होगा, और मैं शर्त लगा सकता हूं वहाँ तुम जल्द पहुँचने के लिए आतुर हो।
मैं वहाँ जाने के लिए पहले से ही तैयार बैठी हूँ, वो भी जल्द से जल्द।इतने बर्षों से तुम मुझे जो सिखाते आ रहे हो अगर वो सच है,तो ये **खोज** ही सब कुछ है।
बिलकुल है।लगता है मेरा सिखाना बेकार नहीं गया।तुम भी थोड़ा बहुत ध्यान देती आयी हो।अब चलो निकलते हैं।
हाँ,चलो। **"अलविदा"** शब्द मुझे बहुत बुरा एहसास करवाता है।पर इस बार का एहसास और भी बुरा है।जो पहले कभी नहीं हुआ।
भले ही एकता मुझे कितनी भी नफरत क्यों ना करती हो, पर उसकी शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए मैं उसका आभारी रहूँगा।
पर वो तुम्हारा सहारा रह चुकी है।पर अब रवाना होने का वक़्त आ गया है। ठीक से पकड़ो....
..और सफर का मजा लो।



राह पर





* उस का यान (बाइक) का नाम



खतरों का जलसा पेज 90 से जारी ....


इसके भी थे अपने... इसका भी था घर, कुचल दिये सब सपने. अरमानों का गला घोंटकर, तुझे बडे होने का हक नहीं... तू नाबालिग ही मर!
तेरे लडकपन की नादानी में कितनी जिंदगियाँ हारी, बदन क्या गवाही देगा, जब चले रूखी आँखों की आरी, हल्की उम्र पर गुनाह है भारी!
नातेदारों ने यूँ आसानी से कह दिया "बच्चे को एक और मौका दिया जाये!" मैनें उनसे कहा सिर्फ चंद पल इस लडकी के घर की दहलीज पर बिताकर आयें!
Author - Mohit Sharma
Pencils - Harish Atharv Thakur
Colors - Ajay Thapa
Calligraphy - Youdhveer Singh

बंटू की दुनिया (बाल रचना)

बंटू और पेड़

लेखिका - दिव्या राकेश शर्मा

बंटू एक छ: साल का बच्चा है । बहुत ही प्यारा और आज्ञाकारी ।



बंटू को पेंसिल का बहुत शौक है और वह हमेशा नई नई पेंसिलों की तरह आकर्षित होता रहता है।
पर वह कभी इन्हें सम्भालना नहीं चाहता और नई पेंसिल के लिए पुरानी पेंसिल को जल्दी जल्दी छील कर खत्म कर देता।

आज फिर बंटू अपनी पेंसिल को शार्प करने लगता है जो पहले से ही शार्प थी और लिखने लायक थी। यह देख बंटू की माँ को बहुत गुस्सा आता है और वह बंटू को कहती हैं,
"बंटू! यह बहुत गलत बात है बेटा। तुम हमेशा पेंसिल को अकारण छिलते रहते हो जबकि उसका प्वाइंट बिल्कुल सही है।"

"ओह्हो मम्मा! देखिए तो इसकी नोक बहुत मोटी हो गई थी इससे मेरी राइटिंग अच्छी नहीं आती।" बंटू ने माँ से कहा।

"पर बेटा यह बिल्कुल सही नही है और देखो अगर तुम इस तरह पेंसिल बर्बाद करोगे तो न जाने कितने पेड़ काटने पड़े।" माँ ने समझाते हुए कहा।

"पर मम्मा पेंसिल तो लकड़ी से बनती हैं ना ?" उसनें आश्चर्य से माँ से पूछा।

"हाँ बेटा पेंसिल लकड़ी से बनती है और लकड़ी पेड़ से आती है। चलो मैं दिखाती हूँ।" इतना कह कर वह बंटू को खिड़की के नजदीक ले आई।

"देखो बंटू आँगन में लगे उस पेड़ को। तुम्हें इसके साथ खेलना अच्छा लगता है ना! उसकी शाखाओं में झूलना और उसके फूलों को इकट्ठा करना।" माँ ने बंटू को कहा।
"हाँ मम्मा! मुझे इसके साथ खेलना बहुत पसंद है और झूला झूलना भी।" बंटू ने मुस्कुरा कर कहा।

"हम्म! तो मेरे राजा बेटे यदि आप ऐसे ही पेंसिल खराब करते रहे तो और पेड़ों की तरह यह भी लकड़ी के लिए काट दिया जायेगा। फिर कैसे खेलोगे?" माँ ने सवाल किया।

बंटू चिंतित सा पेड़ की ओर देखने लगा जो उसे उदास लग रहा था।

"पर मम्मा सब जगह इतने पेड़ है मेरे पेड़ को कोई क्यों काटेगा?"

"बेटे सभी यही सोचते हैं कि इतने पेड़ है लेकिन सच यह है कि पृथ्वी पर पेड़ खत्म हो रहे हैं जिससे बारिश नहीं होती।" माँ ने चिंता से कहा।

"अच्छा चलो अब सो जाओ सुबह स्कूल जाना है और पेंसिल नहीं छिलना।" ऐसा कहकर माँ ने बंटू को बिस्तर पर लिटा दिया और लाइट बंद कर बाहर चली गई।

बंटू खिड़की के बाहर देखता रहता है जहां अंधेरे में वहां खड़ा पेड़ आज कुछ चुप था। अचानक बंटू को बाहर से रोने की आवाज आने लगती है।

वह उठ कर खिड़की से देखता है तो उसे पेड़ की शाखाएं टूटी हुई दिखती है। वह कमरे से निकल कर पेड़ के नजदीक जाता है और देखता है कि पेड़ रो रहा है।

"आप क्यों रो रहे हो?" बंटू ने पेड़ से पूछा।

"मुझे नहीं बात करनी तुम से बंटू।" पेड़ ने नाराजगी से कहा।

"पर क्यों! मैंने क्या किया आप क्यों गुस्सा हो?" बंटू ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ किया है। देखो तुम रोज इतनी पेंसिल खराब करते हो इस वजह से और पेंसिल बनाने के लिए मेरी शाखाओं को काट लिया गया है। मुझे बहुत दर्द हो रहा है।" कहकर पेड़ रो पड़ता है।

तभी बंटू को पेड़ के नजदीक ढेर सारी बिखरी पेंसिल दिखाई देती हैं जो उसनें ही छिल कर फेकी थी।
यह देखकर बंटू दुखी हो जाता है और पेड़ को सहलाते हुए कहता है,

"मैं प्रॉमिस करता हूँ पेड़ जी मैं अब कभी जानबूझकर पेंसिल नहीं शार्प करूंगा आप मत रोओ।"

"पर तुम्हारे और दोस्त भी ऐसा करते हैं।" पेड़ ने दुखी होकर कहा।

"मैं अपने सभी दोस्तों को बताऊंगा वह भी कभी ऐसा नहीं करेंगे।"

"ठीक है बंटू अब मैं नहीं रोऊंगा लेकिन एक वादा और करों।सभी को और पेड़ लगाने के लिए भी कहोगे।"
"हाँ पेड़जी।"

"बंटू... बंटू....!" किसी ने उसे आवाज लगाई।
"उठ बेटा स्कूल नहीं जाना क्या?"

बंटू ने देखा माँ उसे उठा रही थी वह उठकर जल्दी से खिड़की के नजदीक गया और बाहर झांका।

पेड़ मुस्कुरा रहा था और ढेर सारे फूल आँगन में बिखरे थे।
"मम्मा! क्या पेड़ बोलते हैं?" बंटू ने कहा।

"पेड़ की मौन भाषा होती है।" माँ ने कहा।

"मतलब?" बंटू ने कहा।

"मतलब उनकी भाषा सिर्फ उन्हें सुनाई देती है जो उन्हें प्यार करते हैं।"

"मेरे साथ रात को पेड़ ने बात की थी।" बंटू ने उत्साह से कहा।

"अच्छा!" माँ ने पेड़ की ओर देखते हुए कहा और फिर बोली "जाओ फ्रेश हो जाओ। स्कूल जाना है।"

"ठीक है मम्मा।" बंटू ने कहा और एक बार फिर पेड़ की ओर देखा।

"मम्मा मैं प्रॉमिस करता हूँ अब कभी पेंसिल खराब नहीं करूंगा वरना मेरा पेड़ रोयेगा।"

"मेरा राजा बेटा।" इतना कह माँ ने उसे गले लगा लिया। आँगन में पेड़ खुश होकर हिलने लगा।

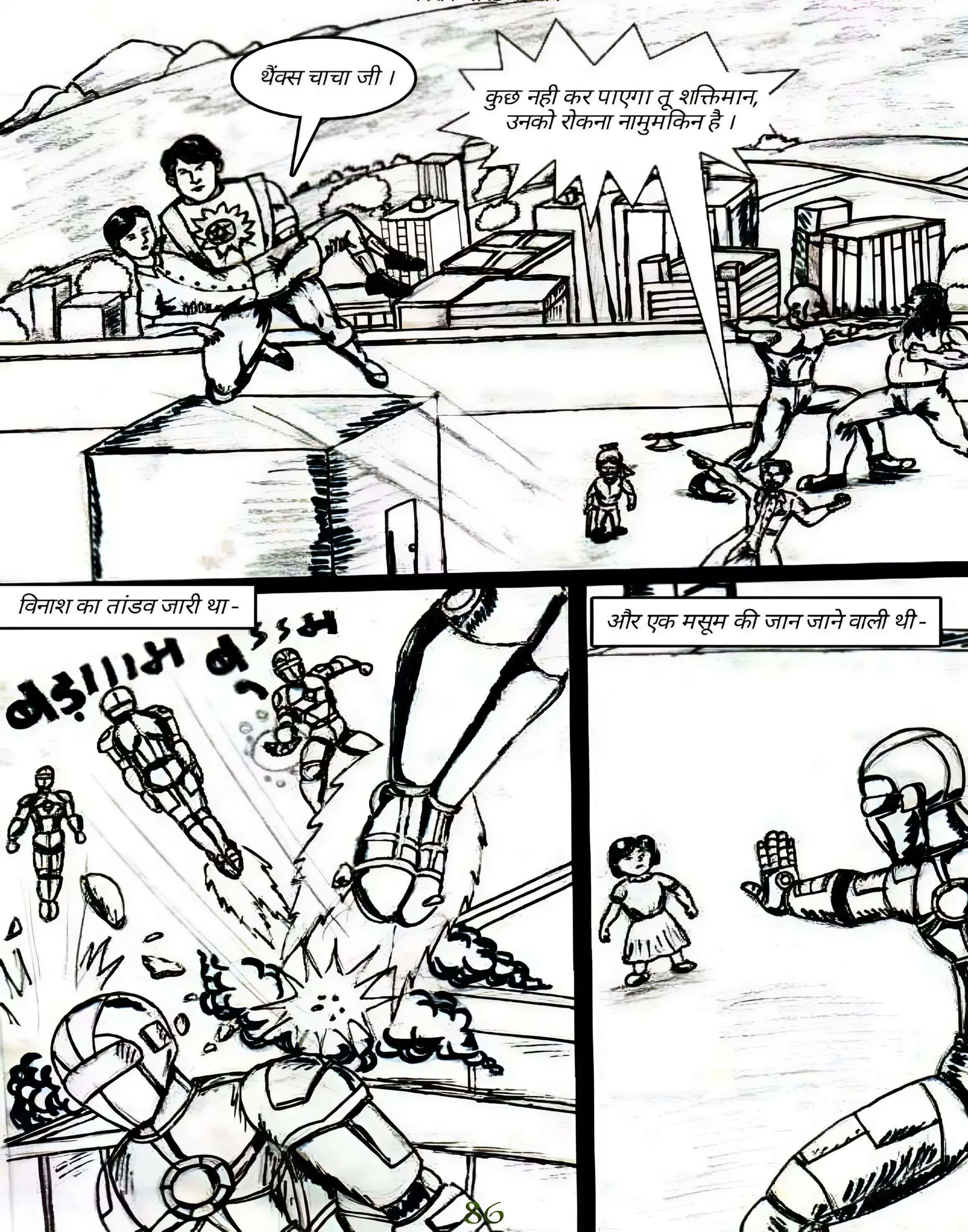
समाप्त !

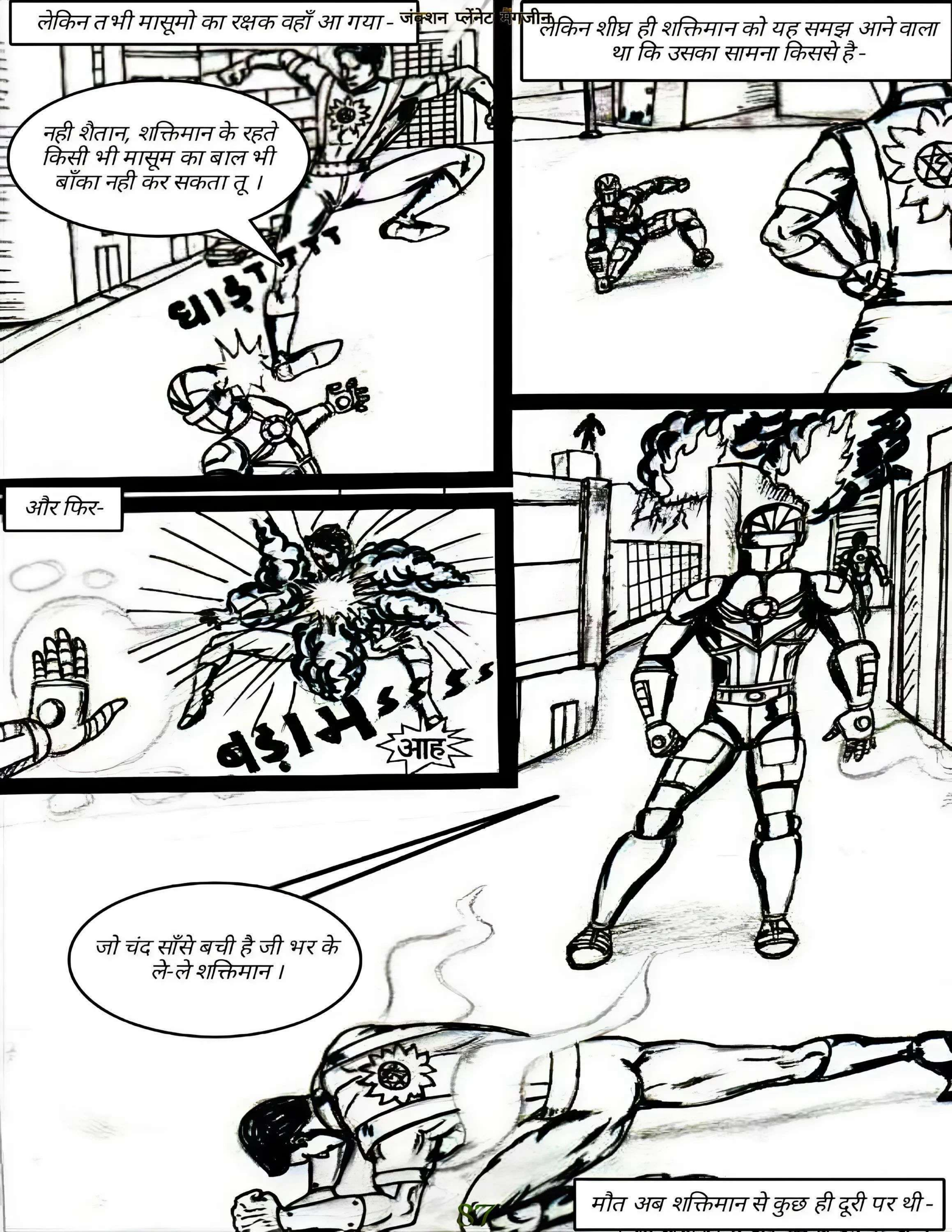
स्टोरी, आर्ट - अंशुमान विवेक वर्मा
कैलीग्राफी - उपेन्द्र राज




तुम जाकर शहर को बचाओ शक्तिमान, राका से साबू निपट लेगा ।
चाचा चौधरी !


साबू की जोरदार किक ने राका को हिलाकर रख दिया ।
धड़ाक
तुम जाओ शक्तिमान, इससे निपटने का मुझे बहुत पुराना अनुभव है ।


थैंक्स चाचा जी ।
कुछ नही कर पाएगा तू शक्तिमान, उनको रोकना नामुमकिन है ।
विनाश का तांडव जारी था -
और एक मसूम की जान जाने वाली थी -


लेकिन तभी मासूमो का रक्षक वहाँ आ गया -
जंक्शन प्लेनेट मैगजीन
नही शैतान, शक्तिमान के रहते किसी भी मासूम का बाल भी बाँका नही कर सकता तू ।
धाड़TTTT
लेकिन शीघ्र ही शक्तिमान को यह समझ आने वाला था कि उसका सामना किससे है -
और फिर-
बड़ाम
आह
जो चंद साँसे बची है जी भर के ले-ले शक्तिमान ।
मौत अब शक्तिमान से कुछ ही दूरी पर थी -

लव रोमांस स्पेंशल

स्टोरी टाइटल : Cute Convocation (Dhruva & Natasha)

लेखक: उपेन्द्र राज

ध्रुव : ओये मेरी मोटी क्या कर रही है ।

नताशा : गुस्सा हो रही हू ... तुम्हारे नखरे देख कर ।
तेरे पास मेरे लिए भी कभी टाइम होता है या सिर्फ क्राइम फाईटिंग ही तुम्हारा काम है ।

ध्रुव : सौरी बेबी पर वह भी तो जरूरी है, आज-कल अपराधियो का पैरा-ग्राफ बहुत ज्यादा बढ़ गया है ।

नताशा : अच्छा ! और क्या बोल रहा था कि मै मोटी हो गई हू ...
तो तू उसी सिंगल पसली रिचा के पास चला जा ।

ध्रुव : ओ बेबी, मै तो तुम्हे ही चाहता हू, भले तुम मोटी हो गई हो ।

नताशा : अबे मै पहले जैसी ही हू ... !

ध्रुव : हाहाहाहा ... कुछ भी ...
जाकर आईना देखो सच्चाई पता चल जायेगी ....

नताशा : ओके-ओके ! वो तो थोड़ी सी हो गई हू, तेरी जिद की वजह से ।
"बाबू थोड़ा और खा लो, बाबू थोड़ा और खा लो"
अब पता चला वो तेरी प्लानिंग थी मुझे मोटा करने की जिससे तू मुझे मोटी कह सके ।

ध्रुव : ओह ! ग्रेट मान गये दिमाग है तुममे, मै तो सोचा था कि तुम मोटी के साथ दिमाग से भी पैदल हो ।

नताशा : ओके बाए गुड नाईट !

ध्रुव : इतनी जल्दी ... अभी तो सिर्फ 1:30 ही बजे है ...

नताशा : तो पूरी रात बेइज्जती करने का इरादा है ?????

ध्रुव : इरादा तो बहुत कुछ करने का है पर अभी बेइज्जती से ही काम चला रहा हू ।

नताशा : अब Bye Go To Hell .

ध्रुव : डेट पर Hell कोई नही ... बताओ कब चलना है ।

नताशा : मै नही सुन रही ...

ध्रुव : Awwww अच्छा !

नताशा (Sings) : ना ना ना ।

ध्रुव : आई लव यू

नताशा : क्या ...???

ध्रुव : क्या क्या ? तुम ही तो कुछ गा रही थी नननननन ...

नताशा : अभी तुमने कुछ बोला ।

ध्रुव : कान बज रहे है क्या अब तुम्हारे ।
मैने क्या बोला ।

नताशा : अभी तूने बोला आई लव यू ।

ध्रुव : ओह आई लव यू टू ।

नताशा : Awwww फिर बनाया मुझे ।

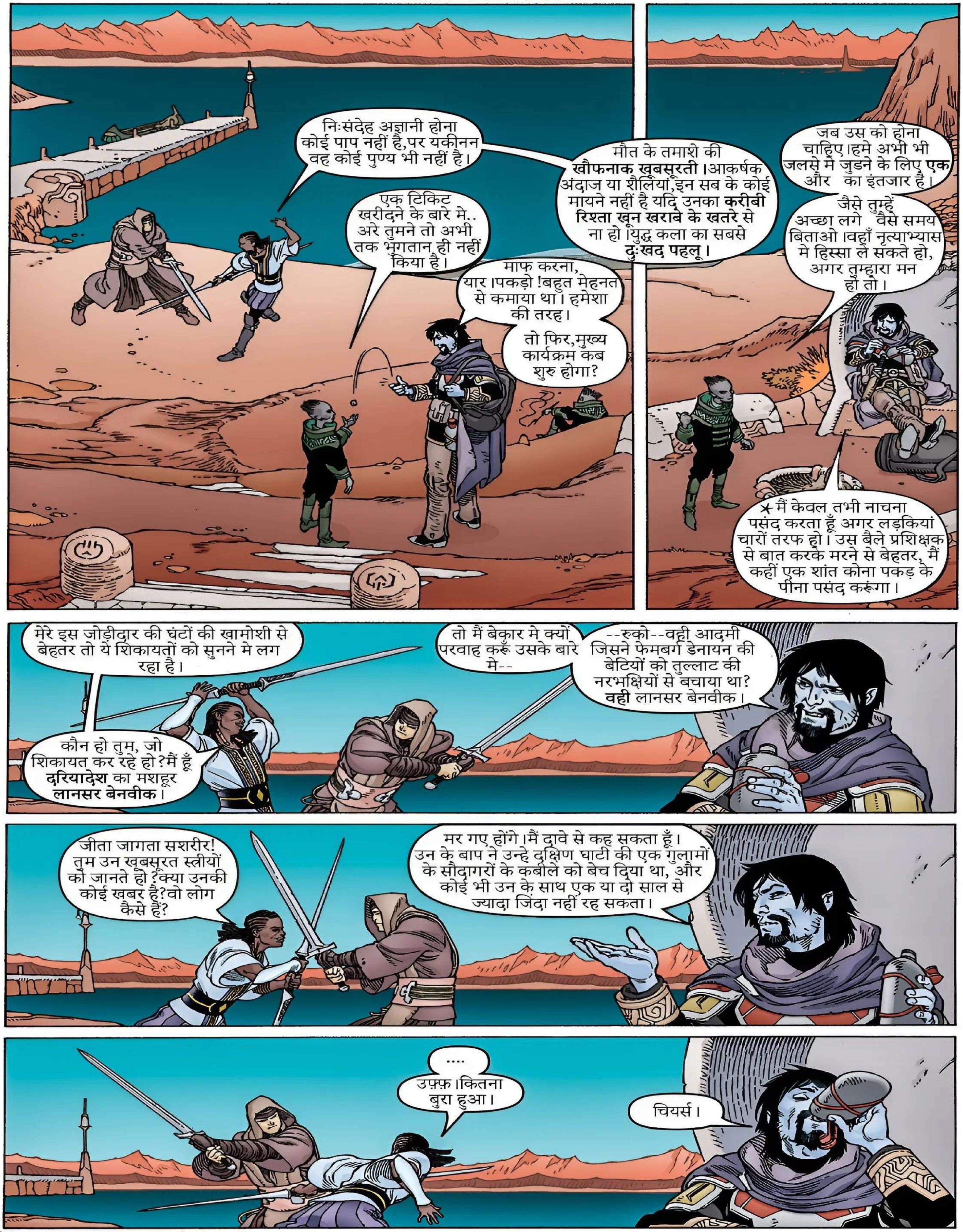
ध्रुव : अले मेली स्वीट, क्यूट, मोटी, भोली बाबू जैसी भी हो मेली हो ...
समझी ... आई लव यू

नताशा : सच्ची ...

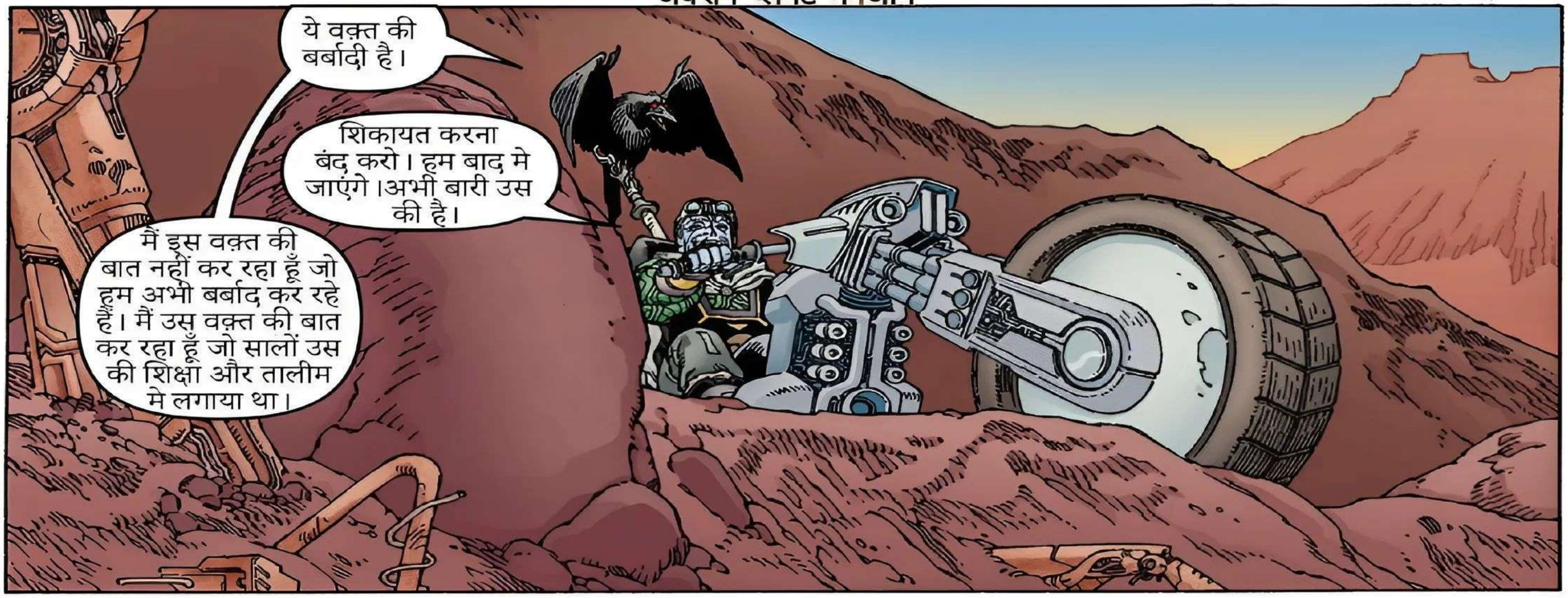
ध्रुव : मुच्ची ....

नताशा : आई लव यू टू मेले घोंचू उममममआहहहह ... चल अब सो जा कल आकर पिक कर लेना ... शाम को ....

समाप्त !

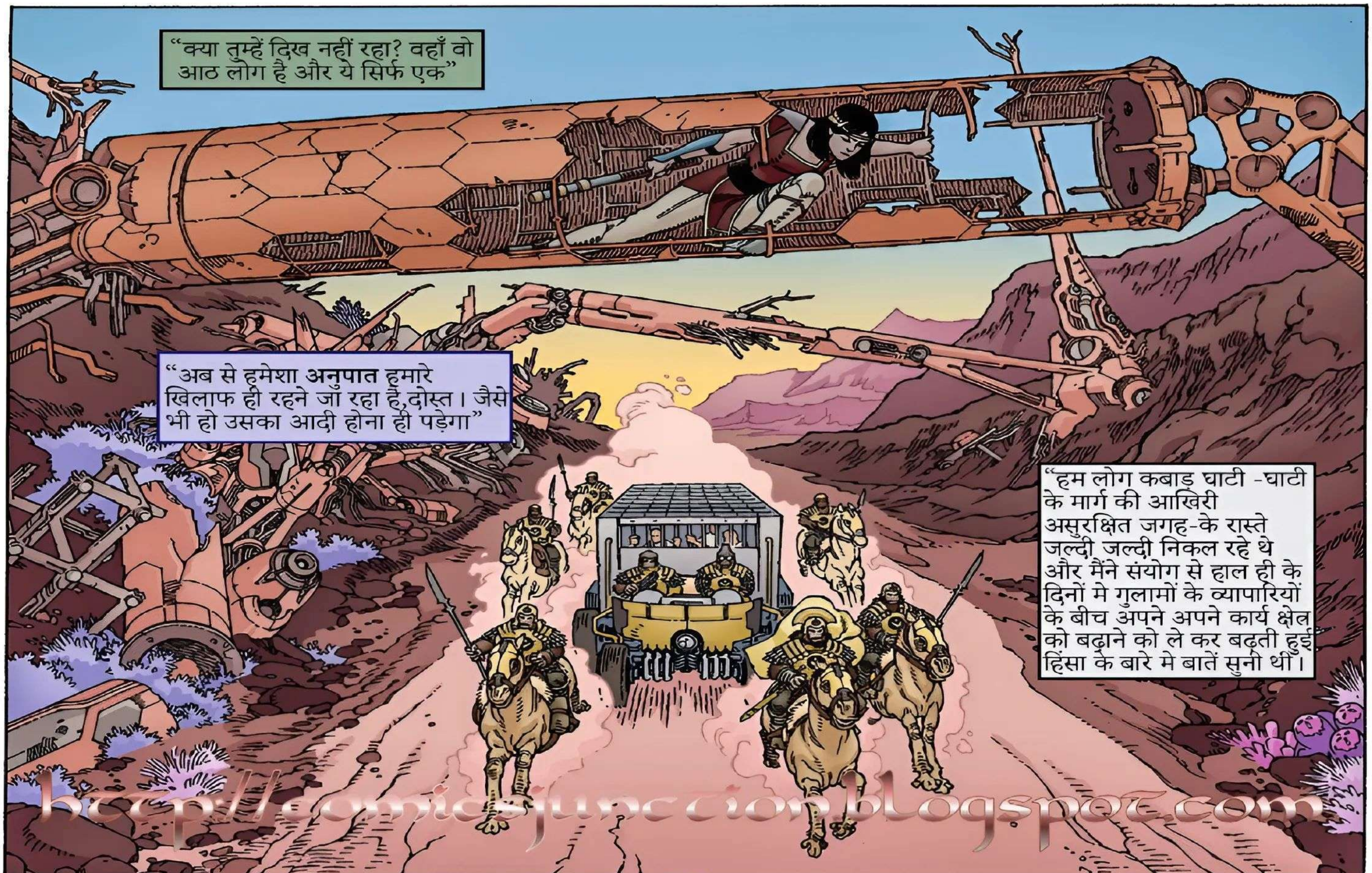


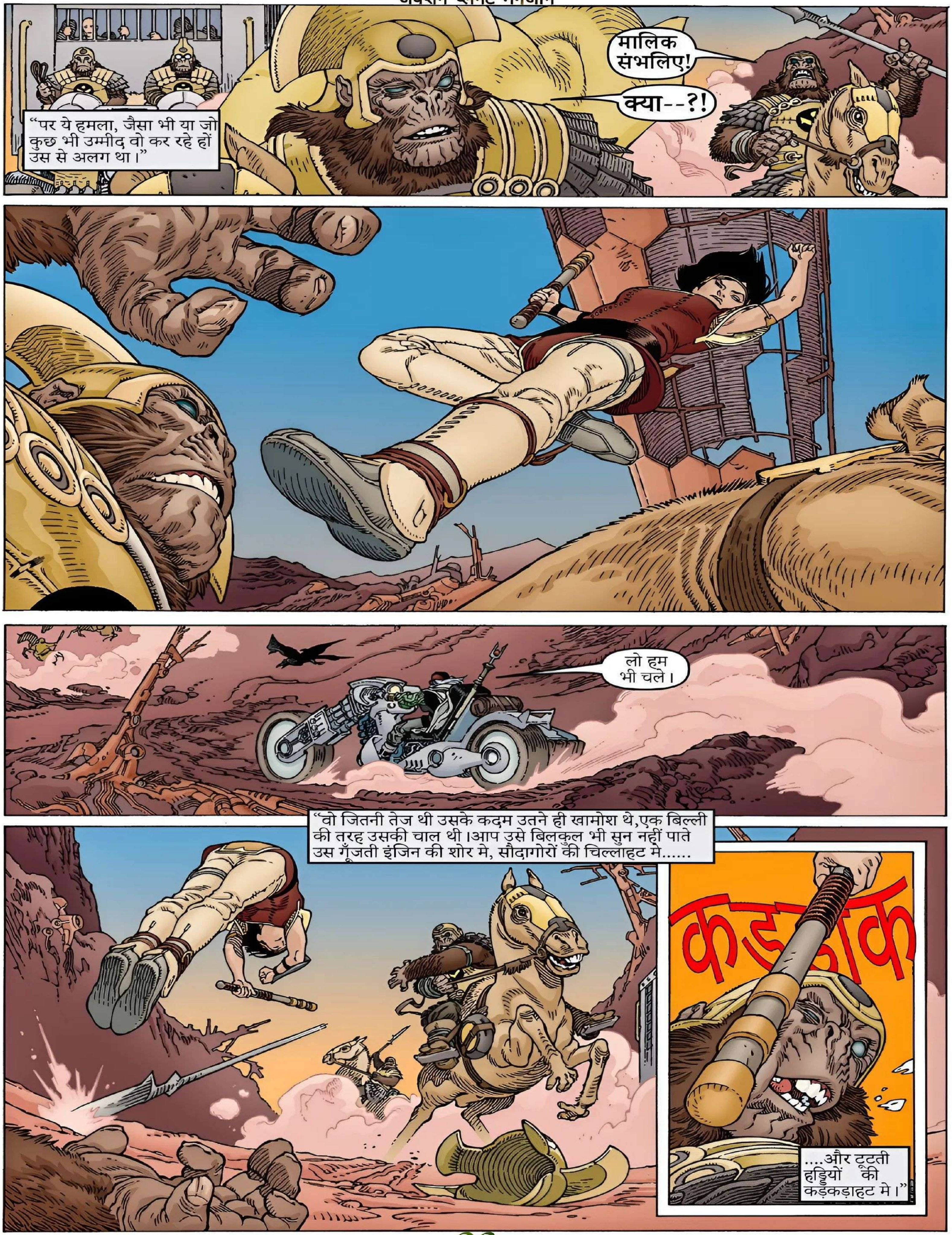
*बैले - एक तरह का नृत्य काला कुचीपुड़ी, भारत नाट्यम, ओड़ीशि, जैसी।





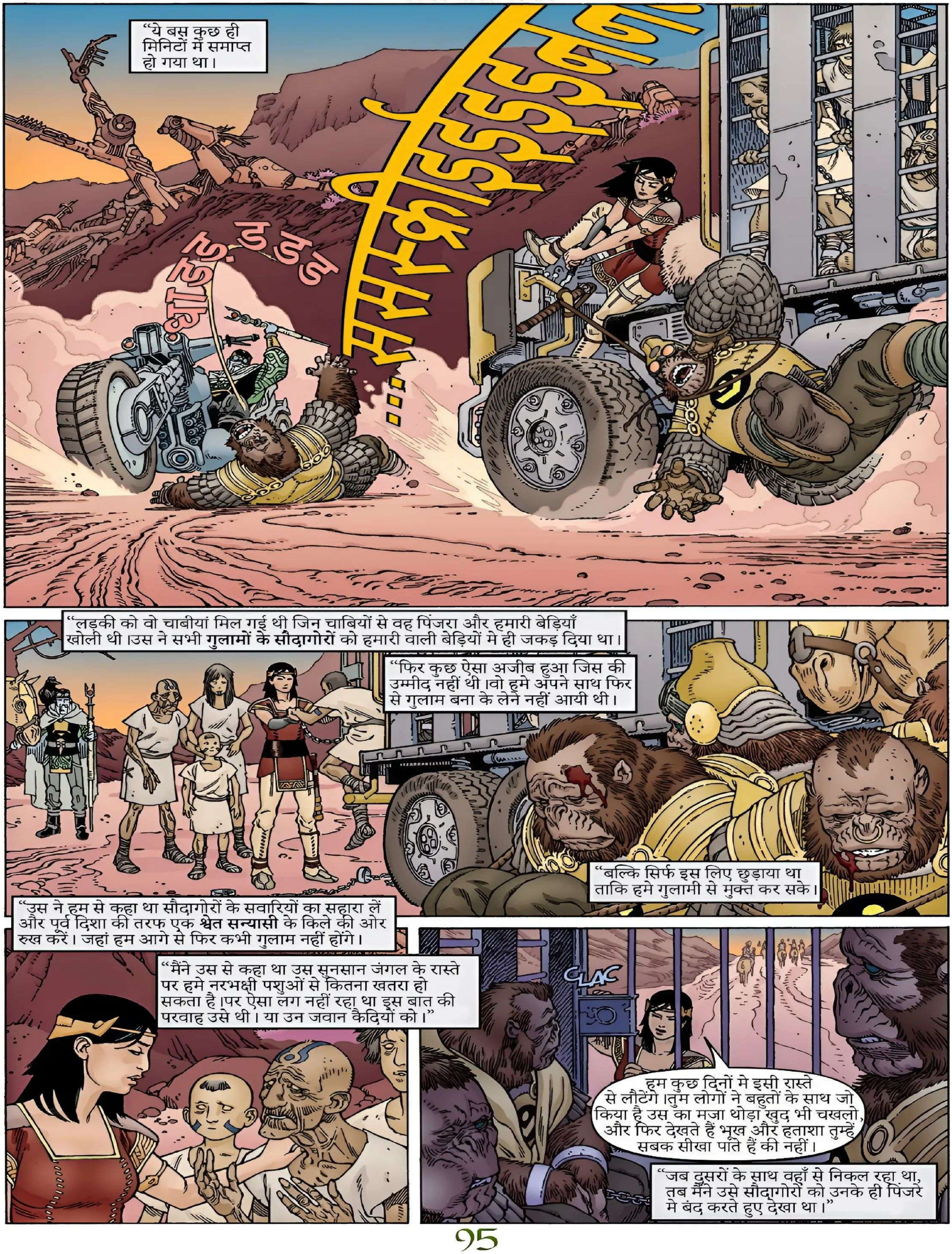
गुलामों के सौदागोरों का काफिला

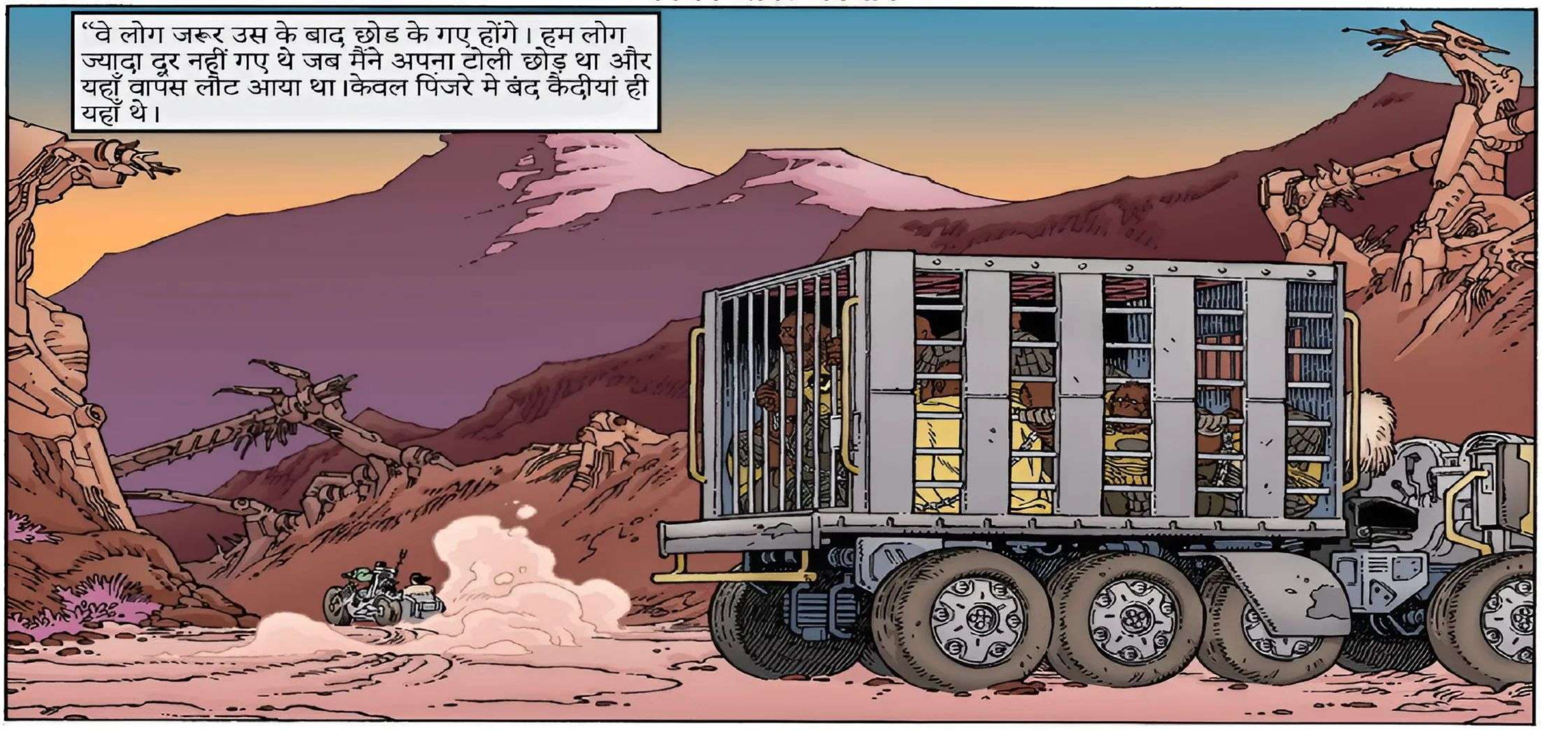



"पर ये हमला, जैसा भी या जो कुछ भी उम्मीद वो कर रहे हों उस से अलग था।"
मालिक संभलिए!
क्या--?!
लो हम भी चले।
"वो जितनी तेज थी उसके कदम उतने ही खामोश थे,एक बिल्ली की तरह उसकी चाल थी।आप उसे बिलकुल भी सुन नहीं पाते उस गूँजती इंजिन की शोर मे, सौदागोरों की चिल्लाहट मे......
....और टूटती हड्डियों की कड़कड़ाहट मे।"


"ऐसा प्रतीत हो रहा था वो हर जगह है।
"शुरुआत मे पहेरदारों को ये लगा था की हमलावर एक से अधिक हैं।
"इस से पहले कि वे लोग पलट वार करते उन मे से तीन धूल चाट रहे थे।
"ऊपर से उसकी मदद कर रहा था उसके साथ आया किसी तरह का कोई काला परिंदा, जो नर्क से आया हुआ सा प्रतीत हो रहा था,"


"एक पहेरदार को वार करने का एक मौका मिल गया था जब वो गाड़ी के चालक को निपटाने के लिए थोड़ी देर रुकी थी।
क्या कर रहे हो, बच्चे,अपने पीछे देखो।
मैंने उसे देख लिया था।
"यही वो वक़्त है जब उस बूढ़े बाइकर पर हमारा ध्यान गया था।"
"पक्के तौर पर नहीं कह सकता धमाका उसके हाथ मे से हुआ था या किसी हथियार मे से। पर ऊर्जा का ऐसा विस्फोट पहले कभी नहीं देखा था........
झटाटाटा
कककररड
.......ना उस बंदे ने देखा था जिस से वह टूटा हुआ लोहे का खंबा जा टकराया था।"


"ये बस कुछ ही मिनिटों में समाप्त हो गया था।
"लड़की को वो चाबीयां मिल गई थी जिन चाबियों से वह पिंजरा और हमारी बेड़ियाँ खोली थी ।उस ने सभी **गुलामों के सौदागोरों** को हमारी वाली बेड़ियों मे ही जकड़ दिया था।
"फिर कुछ ऐसा अजीब हुआ जिस की उम्मीद नहीं थी ।वो हमे अपने साथ फिर से गुलाम बना के लेने नहीं आयी थी।
"बल्कि सिर्फ इस लिए छुड़ाया था ताकि हमे गुलामी से मुक्त कर सके।
"उस ने हम से कहा था सौदागोरों के सवारियों का सहारा लें और पूर्व दिशा की तरफ एक **श्वेत सन्यासी** के किले की ओर रुख करें। जहां हम आगे से फिर कभी गुलाम नहीं होंगे।
"मैंने उस से कहा था उस सुनसान जंगल के रास्ते पर हमे नरभक्षी पशुओं से कितना खतरा हो सकता है ।पर ऐसा लग नहीं रहा था इस बात की परवाह उसे थी। या उन जवान कैदियों को।"
CLAC
हम कुछ दिनों मे इसी रास्ते से लौटेंगे ।तुम लोगों ने बहुतों के साथ जो किया है उस का मज़ा थोड़ा खुद भी चखलो, और फिर देखते हैं भूख और हताशा तुम्हें सबक सीखा पाते हैं की नहीं।
"जब दुसरों के साथ वहाँ से निकल रहा था, तब मैंने उसे सौदागोरों को उनके ही पिंजरे मे बंद करते हुए देखा था।"

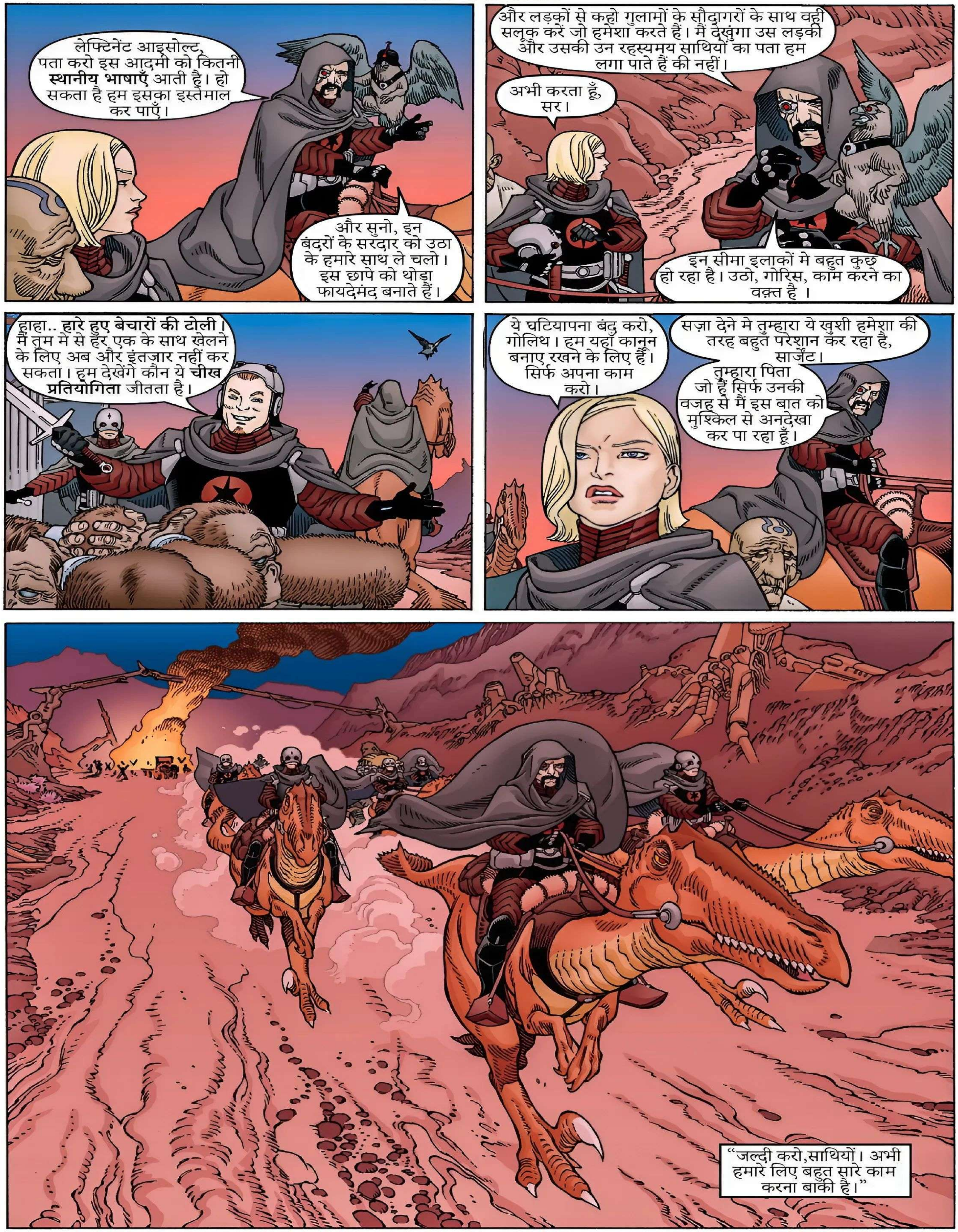




ब्लाक स्टार टेम्पलर्स *



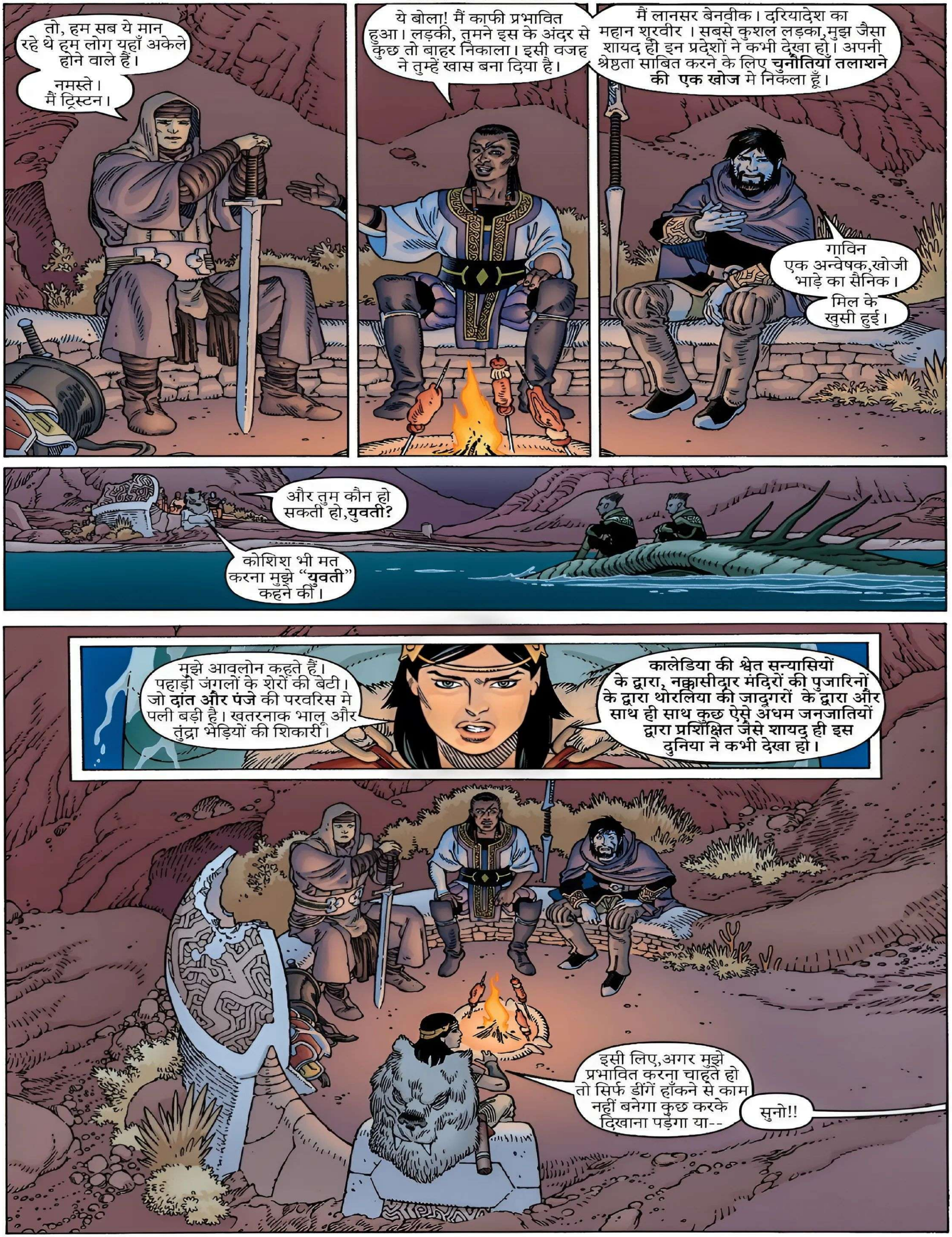
*इशाई या कैथॉलिक धर्म का एक धार्मिक संगठन का सैनिक या योद्धा। अधिक जानकारी के लिए इतिहास पढ़ें या पढ़ें प्रसिद्ध किताब “दी ट्राइल ऑफ दी टेम्पलर्स” या फिर खेलें गेम - आसासीन’स क्रीड, आसासीन’स क्रीड - २, आसासीन’स क्रीड - ब्रदरहूड, आसासीन’स क्रीड - रेवलेसन।


लेफ्टिनेंट आइसोल्ट, पता करो इस आदमी को कितनी **स्थानीय भाषाएँ** आती है। हो सकता है हम इसका इस्तेमाल कर पाएँ।
और सुनो, इन बंदरों के सरदार को उठा के हमारे साथ ले चलो। इस छापे को थोड़ा फायदेमंद बनाते हैं।
और लड़कों से कहो गुलामों के सौदागरों के साथ वही सलूक करें जो हमेशा करते हैं। मैं देखूंगा उस लड़की और उसकी उन रहस्यमय साथियों का पता हम लगा पाते हैं की नहीं।
अभी करता हूँ, सर।
इन सीमा इलाकों मे बहुत कुछ हो रहा है। उठो, गोरिस, काम करने का वक़्त है ।
हाहा.. **हारे हुए बेचारों की टोली**। मैं तुम मे से हर एक के साथ खेलने के लिए अब और इंतजार नहीं कर सकता। हम देखेंगे कौन ये **चीख प्रतियोगिता** जीतता है।
ये घटियापना बंद करो, गोलिथ। हम यहाँ कानून बनाए रखने के लिए हैं। सिर्फ अपना काम करो।
सज़ा देने मे तुम्हारा ये खुशी हमेशा की तरह बहुत परेशान कर रहा है, सार्जेंट।
तुम्हारा पिता जो हैं सिर्फ उनकी वजह से मैं इस बात को मुश्किल से अनदेखा कर पा रहा हूँ।
"जल्दी करो,साथियों। अभी हमारे लिए बहुत सारे काम करना बाकी है।"



पवित्र झील के रक्षक।



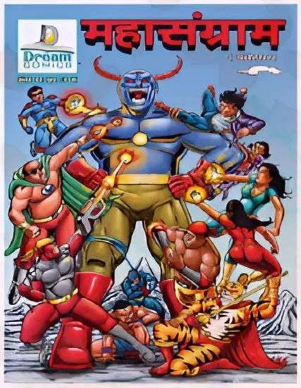


तो, हम सब ये मान रहे थे हम लोग यहाँ अकेले होने वाले है।
नमस्ते। मैं ट्रिस्टन।
ये बोला! मैं काफी प्रभावित हुआ। लड़की, तुमने इस के अंदर से कुछ तो बाहर निकाला। इसी वजह ने तुम्हें खास बना दिया है।
मैं लानसर बेनवीक। दरियादेश का महान शूरवीर। सबसे कुशल लड़का,मुझ जैसा शायद ही इन प्रदेशों ने कभी देखा हो। अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए **चुनौतियाँ तलाशने की एक खोज** मे निकला हूँ।
गाविन एक अन्वेषक,खोजी भाड़े का सैनिक।
मिल के खुसी हुई।
और तुम कौन हो सकती हो,**युवती?**
कोशिश भी मत करना मुझे **"युवती"** कहने की।
मुझे आवलोन कहते हैं। पहाड़ी जंगलों के शेरों की बेटी। जो **दांत और पंजे** की परवरिस मे पली बड़ी है। खतरनाक भालू और तुंद्रा भेड़ियों की शिकारी।
कालेडिया की श्वेत सन्यासियों के द्वारा, नक्काशीदार मंदिरों की पुजारिनों के द्वारा थोरलिया की जादुगरों के द्वारा और साथ ही साथ कुछ ऐसे अधम जनजातियों द्वारा प्रशिक्षित जैसे शायद ही इस दुनिया ने कभी देखा हो।
इसी लिए,अगर मुझे प्रभावित करना चाहते हो तो सिर्फ डींगें हाँकने से काम नहीं बनेगा कुछ करके दिखाना पड़ेगा या--
सुनो!!

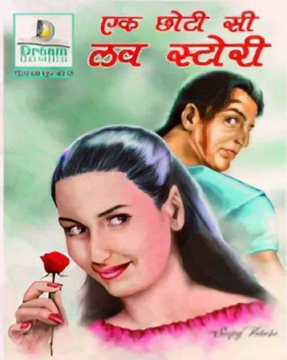

रुकावट के लिए फिर से माफी ..
.. चाहेंगे।
http://comicsjunction.blogspot.com
पावन झील की रक्षक को आप सबका स्वागत करने मे खुशी होगी।
ये सिर्फ शुरुआत है।

शेष अगले अंक मे ....

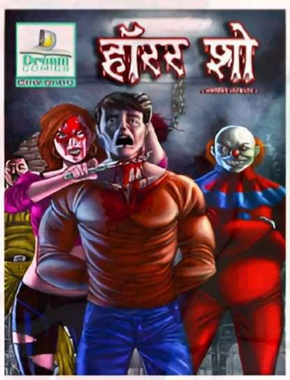
ड्रीम कॉमिक्स - सच कर दे सपने



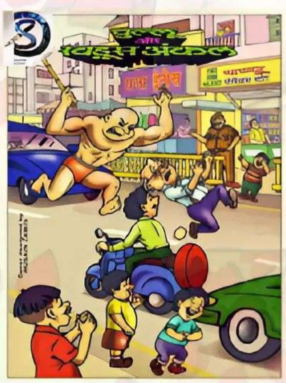
महासंग्राम - इस कॉमिक्स को नवनीत सिंह ने बनाया है । तो जाहिर है कॉमेडी का डबल तड़का लगेगा । कहानी शुरू होती एक अज्ञात स्थान से जिसमे सभी सुपरहीरो को बुलाया जाता है। फिर क्या होता है। आप इस एक्शन , कॉमेडी कॉमिक्स में पढ़िए।
इस कॉमिक्स में आपको 1 दर्जन सुपरहीरो मिलेंगे जो कई विध्वंसकारी और अजीबो गरीब शक्तियों से लैस है। एक्शन, कॉमेडी ट्रेजडी सब कुछ इस कॉमिक्स मिलेगा । और डॉयलॉग ऐसे मिलेंगे जो आपने कही पढ़े नही होंगे ।



एक छोटी सी लव स्टोरी - ये कहानी है रिया और अजय की लव स्टोरी की। अजय रिया के घर नौकरी करता है और हमेसा रिया से दूर भागता है । पर खूबसूरत तेज और स्मार्ट लड़की रिया उसे चाहने लगती है । अजय के पास है कुछ खास । जो अजय को खुद भी नही पता । इसी खासियत के चलते रिया उसके पास खींची चली आती है । पर अजय उसके नजदीक जाने से भी घबराता है। आखिर क्या राज है उन दोनों की प्रेम कहानी में !



हॉरर शो - एक अखबार में लाखों रुपयों का विज्ञापन पढ़कर कुछ लोग एक वीरान जगह पहुचते है । फिर शुरू होता है मौत का शो । इस कॉमिक्स में आपको मिलेगा साइको थ्रिलिंग स्टोरी ।



चुल्लु और खड़ूस अंकल *- ये कॉमिक्स आपको बिल्लू पिंकी चैरी डमरू की याद दिलाएगा । स्वप्निल कॉमिक्स की ये कॉमिक्स कॉमेडी से भरपूर है जिसमे चुल्लु अपने कारनामो से आपको हंसाएगा और आपका मनोरंजन करेगा ।*

ये चारों कॉमिक्स ड्रीम कॉमिक्स के कॉम्बो पैक में उपलब्ध है ।

इसी सेट के कॉमिक्स

* महासंग्राम
मल्टीस्टारर
(कॉमेडी एक्शन और ट्रेजेडी)

* लव स्टोरी (रोमांस)

आगामी सेट के कॉमिक्स

* साइको किलर
विवेकामौन
(कॉमेडी एक्शन और ट्रेजेडी)

* वर्ल्डकप (क्रिकेट)

ड्रीम कॉमिक्स में कॉमेडी,एक्शन और ट्रेजेडी के सुपर-सितारे



शिन कार्यक्षेत्र : दिल्ली कद : 6 ''2'' वजन : 88 किग्रा

शैतान की उपासक एक मान्त्रिक औरत की विश्वविजयी महत्वकांक्षा के लिए शैतान ने वरदान स्वरुप उसे एक पुत्र दिया। वज्र से मजबूत शरीर, अमानवीय ताकत, कई शैतानी व चमत्कारी शक्तियों का स्वामी ! अपनी माँ से बगावत कर बन बैठा मानवता का रक्षक।



विवेकामौन कार्यक्षेत्र : उत्तर प्रदेश कद : 5 ''7'' वजन : 90 किग्रा

मउपुर के विश्वविद्यालय में योग सिखाने वाले आचार्य विवेकानंद राय ने कठिन श्रम, यम, नियम, आसन, प्राणायामादि से हासिल की चमत्कारी व यौगिक शक्तियां। अणिम, महिम, गरिम और लघिम सिद्धियों के धारक हैं। अपनी इन्हीं शक्तियों और चमत्कारी हथियार ''त्रिंशु'' की मदद से ये समाज के दुश्मनों को ठेलते हैं।



राय रोबो कार्यक्षेत्र : गोरक्षपुर, उ0 प्र0 कद : 5 ''11'' वजन : 190 किग्रा

रोबोटिक्स, जेनेटिक्स और आयुर्वेद के ज्ञाता डॉ0 सृजन राय की जिंदगी में भूचाल आ जाता है जब शोध पर निकले उनके जहाज का समुद्री तूफान में नाश हो जाता है और वो एक भयंकर टापू में फंस जाते हैं। वहाँ के विकट हालातों से निकलना और फिर अपनी प्रेयसी से बिछोह उन्हें प्रेरित करता है मानवता की रक्षा हेतु और तब दुनिया के सामने आता है, वैज्ञानिक शक्तियों से लैस सुपरहीरो राय रोबो।



खान खिलाडी उर्फ़ बाशिंदा सुपरहिट कार्यक्षेत्र : फैजापुर, उ0 प्र0 कद : 5 ''10'' वजन : 80 किग्रा

फैजापुर के एक कॉलेज में स्पोर्ट्स टीचर हैं हैशम खान ! अपने चुस्त-दुरुस्त शरीर का प्रयोग ये अपने टीचर वाले सामान्य जीवन से हटके कुछ सहायकों संग मिल कर करते हैं, अपराधियों की धुनाई। अपनी स्पेशल गन ''झिलमिलिया'' से ये गोली, ऊर्जा किरणें व फोटोन ब्लास्ट तक कर सकते हैं।



वाइट क्लॉ/देवराज शर्मा उर्फ़ देवु कार्यक्षेत्र : ग्वालियर म0 प्र0 कद : 5 ''9'' वजन : 80 किग्रा

ग्वालियर शहर में एक कार एजेंसी में कार्यरत, मॉडलिंग के शौकीन देवराज शर्मा जी अपने सुपरहीरो जीवन में बाघ जैसी पोशाक पहनकर जुर्म का जिगरा फाड़ खाने का जज्बा रखते हैं। जिसमें ये अपनी तीक्ष्णबुद्धि, मार्शल आर्ट्स के ज्ञान और अपने बनाए कुछ गैजेट्स का प्रयोग करते हैं।



पट्टी मैन उर्फ़ यतेन्द्र प्रताप कार्यक्षेत्र : गुडगाँव, हरियाणा कद : 6 ''1'' वजन : 110 किग्रा

राजस्थान के रजवाड़ों में पले-बढ़े प्रताप साहब का बचपन कई भुतहा घटनाओं से होकर गुजरा तब से ही उनका रुझान काली शक्तियां प्राप्त करने की ओर था। एक दुर्घटना के बाद उन शक्तियों का प्रयोग मानवता की भलाई में करते हैं। पट्टियों को विस्फोटक, धारदार अस्त्र, मजबूत रस्सी इत्यादि तरीके से प्रयोग कर गुडगाँव की रक्षा करने का भार संभाले हुए हैं।



तांत्रिक मांत्रिक घेंच (अवधेश भलुण्डा) निवास : गोंडा, उ0 प्र0 कद : 5 ''1'' वजन : 66 किग्रा

बचपन से ही अखण्ड बकैती और अक्कड़ के धनी अवधेश को तंत्र-मंत्र में रुचि थी और कई साल धक्के खाने के बाद आखिर उसे तंत्र-मंत्र का ज्ञान अर्जन हुआ। अब उसका फंडा है अपना काम बनता, रस्ता नापे जनता। उसे न समाज से कोई लेना देना है और ना लोगों से, बस अपनी ताकत की अक्कड़ में मस्तमौला रहता है।



चिकन्दर (चिराग जनक जोशी) कार्य क्षेत्र : मुम्बई, महाराष्ट्र कद : 5''11'' वजन : 140 किग्रा

खाने पीने का शौकीन चिराग जनक जोशी एक पीजा डिलीवरी बॉय के रूप में मुम्बई में काम करता है। अपने सुपरहीरो वाले चिकन्दर के रूप में मोटी खाल और बेहिसाब ताकत का मालिक है। जिसका प्रयोग वो मुम्बई के अपराधियों की धुनाई करने में करता है। उसकी ताकत का राज रहस्यमयी है, जो आने वाले वक्त में पता चलेगा।

ADITORIAL

प्यारे कॉमिक्स मित्रो !

आशा है आपको यह अंक पसंद आया होगा । इस अंक मे काफी रोचक और महत्वपूर्ण विचारो पर मंथन किया गया है । इस अंक मे 2 बेहद आकर्षक प्रस्तुति शामिल है - महाप्रलय (FMC) और युग तलवार !

जैसा की आप सब जानते है कि FMC के सभी कॉमिक्स सुपर हिट होती है, FMC के कॉमिक्स का लोग बेसब्री से इंतजार करते है । महाप्रलय टीम FMC की शानदार प्रस्तुति है । समय आयाम की परते उधेड़ता नागराज का यह हाहाकारी विशेषांक है । इस कॉमिक्स मे एक विलेन का आगमन होता है जो युगम (युगम धरित्री अस्य:) जितना ही शक्तिशाली है ।

यह कहानी युगम (सर्वनायक सीरीज) से जुड़ी है जो इस कॉमिक्स को और ज्यादा रोमांचक बनाती है । नागराज के इस फुंफकारते विशेषांक का वर्क लगभग समाप्ति की ओर है जल्दी ही आप सब इस कॉमिक्स से रू-बरू होंगे ।

युग तलवार तरुन भाई की पेशकश है । यह कॉमिक्स Action-Adventure, Fantasy से भरपूर है । यह कॉमिक्स सीरीज मे है जिसका पहला भाग इस अंक मे शामिल किया गया है । आशा है यह अंक आप सब का भरपूर मनोरंजन करेगा ।

आपको यह अंक कैसा लगा अवश्य बताएं और अपने रिव्यू हमारे **ब्लॉग, फेसबुक पेज** पर अवश्य दे ! आपके प्रतिक्रिया के इंतजार मे मै आपसे अगले अंक तक के लिए विदा लेता हूँ ।

धन्यवाद !

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS/

आपका मित्र
उपेन्द्र राज
टीम जंक्शन

